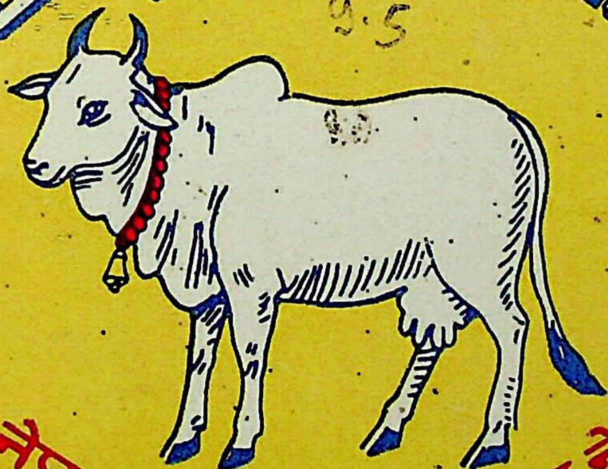
हिन्दू राष्ट्र नेपाल



9.5

जय नेपाल

जय नेपाल

ले. रामाज्ञा वैरागी

वर्तमान

श्री ५ महाराजाधिराज एवं ५ बड़ा महारानी



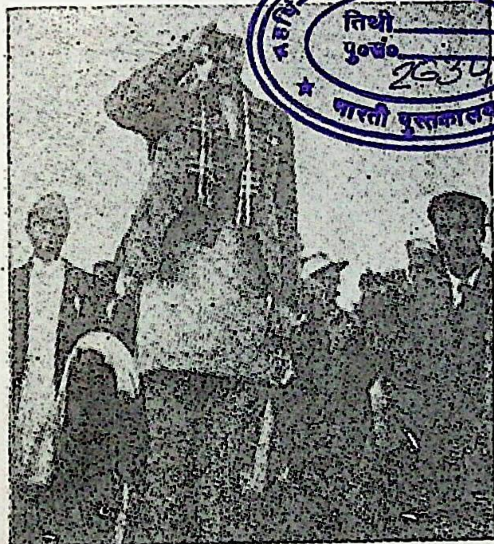
यशस्वी श्री ५ महाराजाधिराज वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव

एवं

श्री ५ बड़ा महारानी ऐश्वर्यराजलक्ष्मी



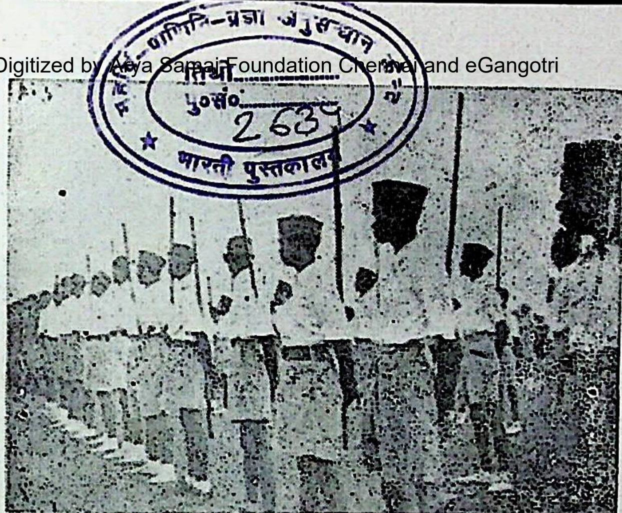




श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव आर्य वीरदल के सैनिकों का गार्ड ऑफ ऑनर स्वीकार करते हुए सेमरा हवाई अड्डे पर (१९५२ ई०)



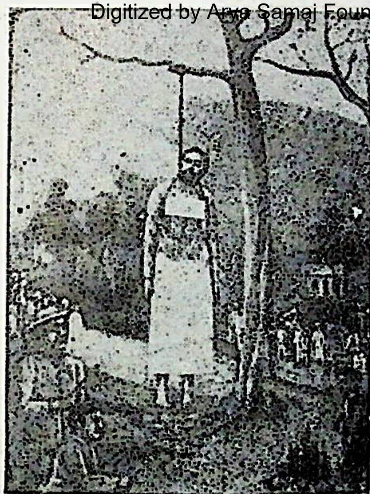
नेपाल के श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव के साथ रामाज्ञा ठाकुर (वैरागी), संचालक : नेपाल आर्य वीरदल (१९५२ ई०)



श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव की आगवानी में सेमरा हवाई अड्डे पर (१९५२ ई०) आर्यवीरों की टोली सलामी देने के लिए आसज्ज

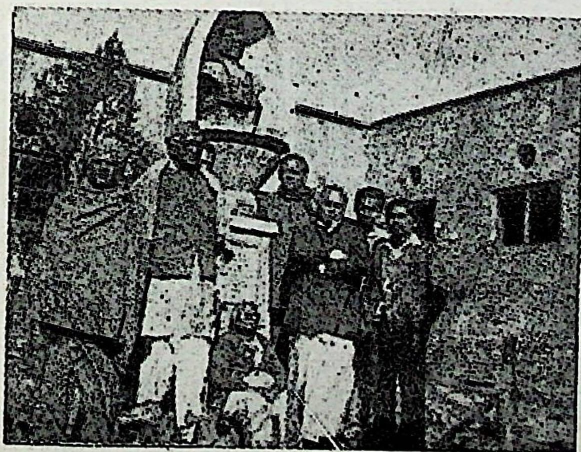


श्री ५ महाराजाधिराज महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव जुलूस के साथ (१९५५ ई० में राज्याभिषेक के अवसर पर शोभा-यात्रा में)

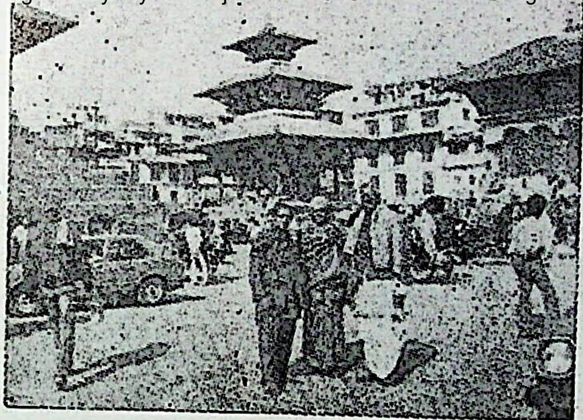


शहीद शुक्रराज शास्त्री

जिन्हें नेपाल में वैदिक धर्म-प्रचार करने के अभियोग में निर्मम राणा-शाही ने फाँसी की सजा दी थी।



शहीद शुक्रराज शास्त्री की आवक्ष प्रतिमा के समीप उन्हीं की पुण्यस्मृति में नामतः स्थापित विद्यालय में उनकी बहन श्रीमती चन्द्रकान्ता (बैठी हुई), श्री बालदिवाकर हंस (प्र० सं० : सा० आ० वी० द०), श्री देवव्रत आचार्य, श्री रामाज्ञा वैरागी, श्री पन्नालाल आर्य आदि।



नेपाल के प्रसिद्ध मन्दिर 'हनुमान ढोका' के निकट खड़े लेखक सर्वश्री रामाज्ञा वैरागी, बालदिवाकर हंस तथा देवव्रत आचार्य

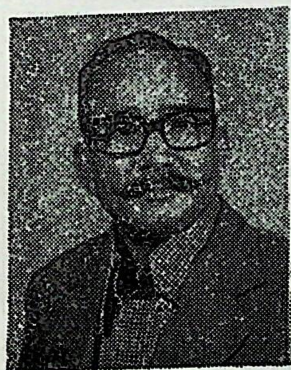


लेखक रामाज्ञा वैरागी प्रथम विश्व हिन्दू-सम्मेलन (वीरगंज) में

श्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल

अध्यक्ष : विश्व हिन्दू संघ, नेपाल।
भूतपूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल।





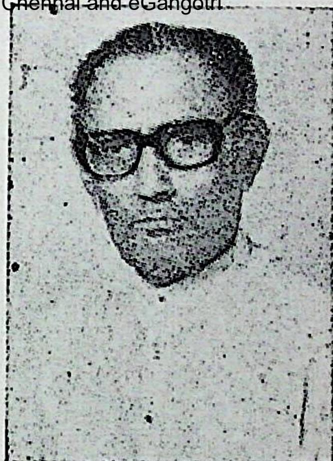
श्री प्रयागराज जोशी

अध्यक्ष : नेपाल आर्यसमाज

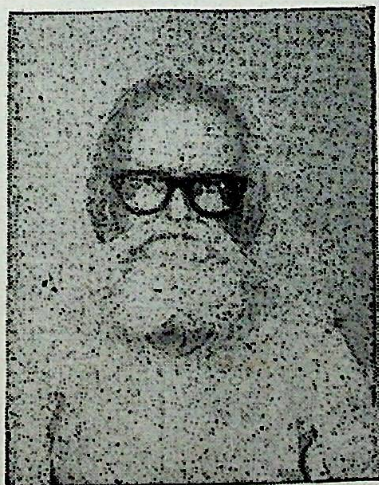


श्री पाशपत प्रसाद

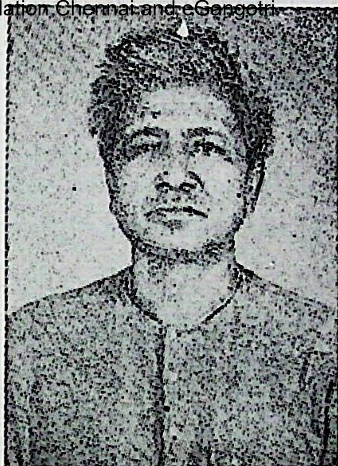
सक्रिय धर्मचेता, वीरगंज



स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान :
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली
जिन्होंने नेपाल के विराटनगर में कई भव्य आयोजन अपने कर-कमलों द्वारा सम्पन्न कराये ।



श्री वासुदेव शर्मा
भूतपूर्व प्रधान : बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना
उपप्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली)



श्री भूपनारायण शास्त्री

प्रधान :

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

जिन्होंने नेपाल-प्रचार के क्रम में विराटनगर में स्वामी आनन्दवोध सरस्वती के साथ कार्यों के संपादन में सहयोग किया।



श्री ओमप्रकाश राजपाल

प्रधान : आर्यसमाज रक्सोल।

पूर्वी चम्पारण के कर्मठ कार्यकर्त्ता नेपाल में आर्यसमाज के सक्रिय सहयोगी।



श्री रामाज्ञा वैरागी

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक

महामंत्री : बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

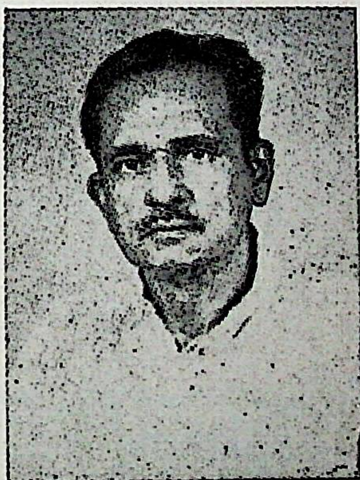
प्रान्तीय संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीरदल (बि. रा.)

श्री द्वारका प्रसाद 'ओज'

कोषाध्यक्ष :

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

पटना





प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री

एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत)

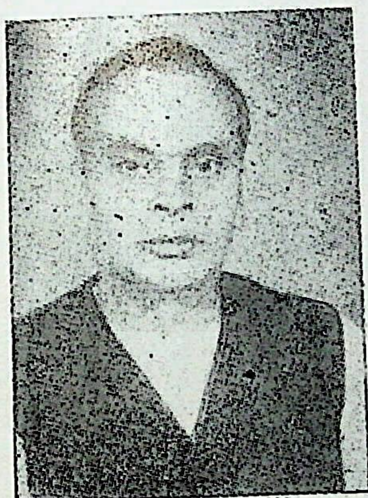
रीडर, पटना विश्वविद्यालय

प्रकाशन-अधिष्ठाता :

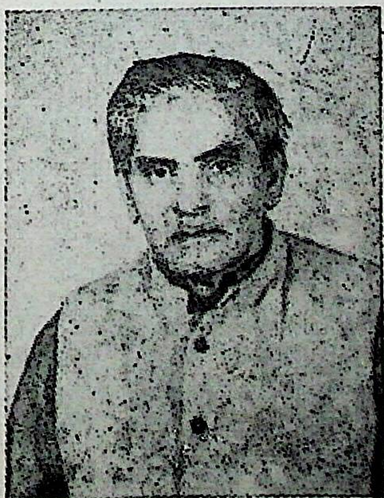
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

सम्पादक 'आर्यसंकल्प', 'प्रगतिशील समाज'

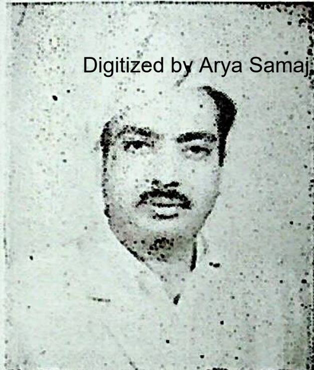
एवं बाँकीपुर आर्यसमाज के प्रधान



श्री पन्नालाल आर्य
प्रधान : आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर



श्री दुर्गा प्रसाद
कर्मठ आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता



श्री शंकरलाल केडिया

कोषाध्यक्ष : विश्व हिन्दू संघ, नेपाल एवं वीरगंज (नेपाल) के विशिष्ट समाजसेवी ।



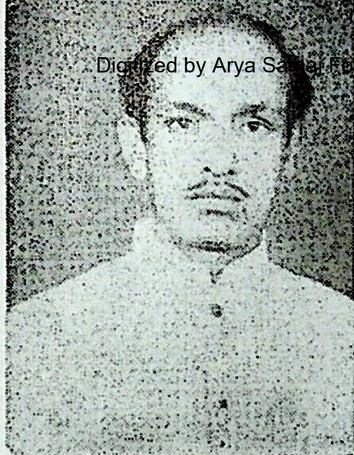
श्री सीताराम अग्रवाल

अध्यक्ष : आर्यसमाज विराटनगर (नेपाल) एवं प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाजसेवी ।



श्री मोहनलाल राजपाल

आर्यसमाज वीरगंज (नेपाल) के नव-निर्वाचित अध्यक्ष । हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के अग्रणी पोषक उद्योगपति एवं समाजसेवी ।



प्रो० योगेन्द्र नारायण
व्याख्याता, जन्तुविज्ञान विभाग,
कॉमर्स कॉलेज (पटना) तथा सहमंत्री :
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा ।



श्री निर्मलेश वंसल
भूतपूर्व प्रधान : बाँकीपुर आर्यसभाज ।
अवकाशप्राप्त अवर सचिव भारत सरकार ।
भूतपूर्व मंत्री : बिहार राज्य हिन्दू महासभा ।



श्रीमती हेनारानी शास्त्री
विद्याविनोदिनी, विदुषी, 'संदीप प्रेस',
'संदीप प्रकाशन' की संस्थापिका । अनेक
समाजसेवी संस्थाओं की सदस्या । एवं
बिहार की राजधानी पाटलिपुत्र से
'विश्व हिन्दू सम्मेलन' नेपाल में
महिला प्रतिनिधि ।

हिन्दू राष्ट्र नेपाल

रामाज्ञा वैरागी

वैरागी प्रकाशन
मुजफ्फरपुर

प्रकाशक :
वैरागी प्रकाशन
पंजाबी कॉलोनी
कलमबाग चौक
मुजफ्फरपुर

मूल्य :
१०.०० (भारतीय रुपये)
१५.०० (नेपाली रुपये)

प्रथम संस्करण :
२६ जनवरी, १९८८ ई०

आवरण :
स्वतंत्र

मुद्रक :
संदीप कुमार
संदीप प्रेस
टेकारी रोड
पटना—८०० ००६

प्राप्ति स्थान :
☐ वैरागी कुटीर
पंजाबी कॉलोनी
कलमबाग चौक, मुजफ्फरपुर
☐ अजन्ता लॉज,
रक्सौल (पूर्वी चम्पारण)
चेकपोस्ट के निकट

HINDU RASHTRA NEPAL by RAMAGYA VAIRAGI

समर्पण



दिवंगत श्री ५ महाराजाधिराज

श्री त्रिभुवन वीरविक्रम शाह देव



दिवंगत श्री ५ महाराजाधिराज

श्री महेन्द्र वीरविक्रम शाह देव

की पुण्यस्मृति में सादर सविशेष नमन सहित !

—वैरागी

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती **रामलीला मैदान**

प्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा **नई दिल्ली-२**

श्री रामाज्ञा वैरागी आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता हैं। बिहार में आर्यवीर दल के संगठन और उसके प्रचार-कार्य को आगे बढ़ाने में उनका बड़ा योगदान रहा है। अपने कारोबार को अपने पुत्रों को सौंपकर श्री वैरागी विगत कई वर्षों से सर्वात्मना आर्यसमाज की सेवा में लग गए हैं। अब तक उन्होंने विदेशों के अनेक दौरे भी कर लिए हैं। इतिहास-लेखन में उनकी गहरी अभिरुचि है।

श्री वैरागी जी द्वारा प्रस्तुत 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' ग्रन्थ को मैंने आद्योपांत पढ़ा है। इस छोटी-सी पुस्तिका में श्री वैरागी जी ने नेपाल और भारत के प्राचीन संबंधों का उल्लेख किया है। हमारे मतानुसार विश्व में एकमात्र स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल ही है, जो हम भारतवासियों के लिए सदैव आशा का केन्द्र रहा है। नेपाली भाषा 'गोरखाली' की लिपि भी देवनागरी ही है, वस्तुतः संस्कृत भाषा ही इन सबका मूल स्रोत है।

राणाओं के काल में नेपाल में विलासिता का दौर प्रारम्भ हुआ। प्रजा उत्पीड़ित होने लगी। ऐसे समय में श्री माधवराव जोशी ने वहाँ महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों तथा 'सत्यार्थप्रकाश' का प्रचार किया। श्री जोशी ने कई वार भारत की यात्राएँ कीं और विक्रम संवत् १९५५ ई० में पाटन (नेपाल) में आर्यसमाज की स्थापना की। किन्तु नेपाल के राणाओं को यह सहन नहीं हुआ और जोशी को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। श्री जोशी बाद में जेल से भागकर भारत आ गए और उन्होंने अपने पुत्रों को गुरुकुल सिकंदराबाद में प्रवेश कराया। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान, मेरठ-निवासी तुलसीराम स्वामी ने बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था की। जोशी जी के बड़े पुत्र श्री शुक्रराज शास्त्री गुरुकुल के स्नातक, पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री

और बी० ए० पास करके आर्यसमाज के कार्य में लग गए। उन्होंने दार्जिलिंग में अच्छा काम किया था, किन्तु बाद में धोखे से उन्हें नेपाल बुला लिया गया। उनके साथ उनके तीन साथी गंगालाल, भक्तराज और दशरथचन्द भी थे। एक दिन इन्द्र चौक, काठमाण्डू में शुक्रराज ने ज्यों ही भाषण शुरू किया कि इन चारों को गिरफ्तार कर लिया गया और इनपर आरोप लगाया गया कि इन्होंने शूद्रों के भी वेद पढ़ने के अधिकार की घोषणा की है। इसपर माफी माँगने को कहा गया। किन्तु तीनों ही अपने कर्त्तव्य-पथ से नहीं डिगे। अन्ततः माँफी न माँगने पर गंगालाल और भक्तराज ने गोली खाकर अपना जीवन अर्पित कर दिया और शुक्रराज शास्त्री तथा श्री दशरथचन्द को पेड़ पर लटका कर फाँसी की सजा दी गई। दोनों की लाशें ३६ घण्टों तक वृक्ष पर लटकती रहीं। श्री माधवराज जोशी ने अपने संकल्पी पुत्र शहीद शुक्रराज तथा उनके साथियों की शहादत पर कहा था कि 'राणाशाही का नेपाल में अब शीघ्र अन्त होगा!'

१९५० ई० में नेपाल में सशस्त्र क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। नेपाल के प्रधानमंत्री श्री मोहन शमशेर ने श्री ५ त्रिभुवन वीर विक्रम शाहदेव को राजसिंहासन से अलग करके श्री ५ ज्ञानेन्द्र वीरविक्रम को सत्ता सौंप दी। इसके परिणामतः नेपाल में राणा-शासन का अंत हुआ और वहाँ प्रजातंत्र का नया आलोक उदय हुआ। इसी शृंखला में नेपाल की गद्दी पर इस समय श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव आसीन हैं। नेपाल की जनता के सुख-दुःख के वह साथी हैं। अन्याय, अधर्म और उत्पीड़न की जानकारी लेने के लिए वह गोपनीय रूप से वेष बदल कर रात में भी निरीक्षण करने जाते हैं।

नेपाल की भूमि पर जहाँ वैदिक धर्म-सुसंस्कृति अक्षुण्ण रही है, वहीं इसके बहादुर योद्धाओं ने युद्ध-क्षेत्र में अपने जौहर दिखाए हैं। अँग्रेजी सेना में भी गोरखा रेजीमेण्ट ने बड़ा सम्मान और यश अर्जित किया था और आज भारत की सेना में भी उनका ऊँचा स्थान बना हुआ है।

श्री वैरागी जी ने इस छोटी सी पुस्तक में नेपाल के सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक पहलुओं का जो दिग्दर्शन कराया है, उससे देश तथा विदेश की जनता को नेपाल के बारे में बहुत कुछ जानने और समझने का अवसर मिलेगा।

मैं वैरागी जी के इस सत्प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और परमात्मा से उनके दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

आनन्दबोध सरस्वती
(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
प्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

नगेन्द्र प्रसाद रिजाल

बत्तीस पुतली
काठमांडो, नेपाल

भू० पू० प्रधानमंत्री

मिति : १२/७/०४४

श्री रामाज्ञा वैरागी द्वारा लिखित ग्रन्थ "हिन्दू राष्ट्र नेपाल" को मैंने पढ़ा। ग्रन्थ अतिउपयोगी है। लेखक ने अपने शब्दों में नेपाल अधिराज्य के विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक आयामों को दक्षता के साथ आलोकित किया है, जिससे लेखक के नेपाल और नेपाल की संस्कृति के प्रति गहरी सद्भावना का प्रमाण मिलता है। श्री वैरागी ने यह ग्रन्थ लिखकर हिन्दी भाषा-भाषी पाठकों की बड़ी सेवा की है, जिससे 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' के सम्बन्ध में उनकी सामान्य जिज्ञासा अच्छी तरह शान्त हो सकेगी।

मैं एक नेपाली होने के नाते, इसके लिए उनके प्रति विशेष आभारी हूँ; अतः उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। उनकी लेखनी इस तरह के सुकार्यों में सतत सृजनशील रहे, यही मेरी शुभ कामना है।

नगेन्द्र प्रसाद रिजाल
[भूतपूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल]



डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार

नई दिल्ली

कुलाधिपति : गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ८ जुलाई, १९८७

नेपाल हमारा पड़ोसी देश है। भारत की सीमा के साथ-साथ छह देशों की स्थिति है। पाकिस्तान, तिब्बत (चीन), नेपाल, बंगलादेश, भूटान और वर्मा। श्रीलंका को भी भारत का सीमावर्ती देश कहा जा सकता है। इन सात देशों में नेपाल ही एक ऐसा देश है, जिसके साथ भारत का कोई राजनयिक टकराव नहीं हुआ। वस्तुतः, राजनीतिक दृष्टि से पृथक् होते हुए भी सांस्कृतिक रूप से नेपाल भारत का अंग जैसा ही है। संसार में नेपाल ही एक ऐसा सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न देश है, जो अपने को 'हिन्दू राष्ट्र' कहता है और जिसे हिन्दुत्व पर गौरव है। वस्तुतः, नेपाल में प्राचीन हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति की वे परम्पराएँ अब तक भी सुरक्षित हैं, जो भारत से धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही हैं। नेपाल और भारत के बीच की सीमा १६० मील के लगभग लम्बी है। इस सीमा के सम्बन्ध में दोनों देश मे कभी झगड़ा नहीं हुआ, और न कभी यह आवश्यकता अनुभव की गई कि इस सीमा की सुरक्षा के लिये कोई विशाल व्यवस्था की जाए। नेपाल जाने के लिए भारतीयों को पासपोर्ट लेने की आवश्यकता नहीं है। नेपाली भी बेरोक-टोक भारत आ-जा सकते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य और स्वास्थ्यप्रद जलवायु के कारण नेपाल पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण रखता है। भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शनों के लिये हज़ारों श्रद्धालु प्रतिवर्ष भारत से नेपाल की यात्रा करते हैं। पर सुशिक्षित एवं सम्पन्न वर्ग के भारतीय पर्यटन के लिये नेपाल की तुलना में थाईलैण्ड, सिंगापुर और हांगकांग के प्रति अधिक आकृष्ट होते हैं। इसका एक कारण उनका नेपाल से परिचित न होना भी है। भारत की विविध भाषाओं में ऐसा साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है, जिससे लोग अपने इस पड़ोसी देश के धर्म, सभ्यता और संस्कृति के साथ-साथ इसके सुरम्य पर्यटन-स्थलों से भी परिचय पा सकें और इसकी यात्रा के लिए भी आकर्षण अनुभव करने लगें।

श्री रामाज्ञा वैरागी की इस पुस्तक 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' से यह कमी दूर हो गई है। इस पुस्तक में उन्होंने गागर में सागर भर दिया है। नेपाल के भूगोल, इतिहास, धर्म, संस्कृति, शासन, संस्थाएँ आदि सभी का इसमें बहुत सुन्दर रीति से परिचय दिया गया है। वैरागी जी कर्मठ एवं उत्साही समाज-सेवक हैं। उनका सारा जीवन धर्म, समाज और देश की सेवा में व्यतीत हुआ है। वे एक सुलेखक भी हैं और देश-विदेश की यात्राएँ कर उन्होंने जिन पुस्तकों की रचना की है, वे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। उनका अपना निवास भी नेपाल के पड़ोस में ही है। उस देश से वे भली-भाँति परिचित हैं। कितनी ही बार वे वहाँ का भ्रमण कर आये हैं। वहाँ के शासन-तन्त्र से भी उनका सम्पर्क है और आर्यवीर दल के संचालक की स्थिति में नेपाल उनका कार्य-क्षेत्र भी रहा है। अतः वे नेपाल के सम्बन्ध में लिखने के अधिकारी भी हैं। मुझे विश्वास है कि साहित्य के क्षेत्र में वैरागी जी की इस पुस्तक का समुचित स्वागत होगा, और इसे पढ़ कर पाठक नेपाल के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने तथा उसके साथ सम्पर्क बढ़ाने के लिये प्रेरित होंगे।

डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार
[कुलाधिपतिः गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय]

●

नेपाल हिमालय का नग ही नहीं बल्कि आर्य (हिन्दू) संस्कृति का सबल पृष्ठपोषक होने के नाते प्रत्येक भारतीय के हृदय-देश में अपना ऊँचा स्थान बनाये हुए है।

वैदिक संस्कृति का आधार ही वेद-प्रतिपादित मान्यताएं हैं, संस्कार हैं, जो मनुष्य को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की विनीति से गुजरने की प्रेरणा देती है। काश ! नेपाल-नरेश इन तथ्यों से अवगत होने के साथ-साथ, महर्षि दयानन्द की सबल आकांक्षाओं से परिचित होकर वेद का सन्देश सारे विश्व में पहुँचाने को कृतसंकल्प हो सकते तो हिमालय के उत्तुंग शिखर पर आसीन इस राज्य की छवि ही अनुपम हो उठती ! श्री रामाज्ञा वैरागी अपने यौवन-काल से ही आर्यवीर दल के निष्ठावान सक्षम अधिकारी रहे हैं। उन्होंने श्री ५ महाराजाधिराज के राज्याभिषेक एवं विभिन्न अवसरों पर आर्यवीर दल के सैनिकों द्वारा श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव को 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिलाकर अपने ही गौरवपूर्ण इतिहास की रक्षा की है। "जय नेपाल, जय नरेश" आज भी "जय आर्यवीर" की ध्वनि के रूप में आकाश में सुरक्षित है—क्योंकि वेद कहता है कि शब्द नित्य हैं। इसलिए आर्य-वीरों और नेपाल-नरेश (दम्पति) का यह पावन सम्बन्ध भी अटूट है और रहेगा।

मैं भाई रामाज्ञा वैरागी के इस पुस्तक-लेखन के सत्प्रयास की हृदय से संस्तुति करता हूँ और आशा करता हूँ कि नेपाल और भारत की जनता इसे पढ़कर अटूट मैत्री में परस्पर आबद्ध हो जावेगी। जय नेपाल ! जय भारत !!

बालदिवाकर 'हंस'
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल
नई दिल्ली

●

क्षेमचन्द्र 'सुमन'

दूरभाष : २०००० ६
अजय निवास, जी, १०, दिलशाद कॉलोनी
(पुरानी सीमापुरी के निकट)
शाहदरा, दिल्ली-११०० २

श्री रामाज्ञा 'वैरागी' द्वारा विरचित 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' नामक कृति देखी। इसमें श्री 'वैरागी' ने नेपाल के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक वातावरण का याथातथ्य चित्रण करके वहाँ पर हिन्दुत्व तला आर्यसमाज की रक्षा के लिए किये जानेवाले प्रयासों का सर्वाङ्गीण चित्रण किया है। आज के इस विभीषिकामय वातावरण में उनकी यह कृति हमारे देश के अकाल-वृद्ध नागरिकों को प्रचुर प्रेरणा प्रदान करेगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। मैं श्री वैरागी के लेखन के प्रति पूर्ण आशान्वित हूँ। मुझे यह आशा ही नहीं प्रत्युत् पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में वे और भी सशक्त, सुपुष्ट रचनाएँ हिन्दी-साहित्य को प्रदान करेंगे। नेपाल के जन-जीवन की वास्तविकता को समझने के लिए यह कृति एक उपयोगी सन्दर्भ-ग्रन्थ का काम करेगी।

क्षेमचन्द्र 'सुमन'



सुरेन्द्रनाथ दीक्षित गन्नीपुर
अवकाश-प्राप्त रीडर, हिन्दी विभाग मुजफ्फरपुर-842001
बिहार विश्वविद्यालय
(मुजफ्फरपुर)

श्री रामाज्ञा वैरागी की दो-तीन मूल्यवान् साहित्यिक कृतियों को पढ़ने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। वैरागी जी की रचनाओं में उनके अन्तर का साहित्यकार अपनी पूरी अस्मिता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। चाहे वे हिमाच्छादित पर्वतमालाओं के शुभ्र शिखर हों, नदियों और झरनों का कलकल नाद हो, सघन वन-वीथी हो, किसी महानगर की अट्टालिकाएँ हों, या नयनाभिराम रूप-वर्णन ही क्यों न हो, सर्वत्र उनकी लेखनी में एक विशेष प्रकार की संवेदना, एक कोमल संस्पर्श की प्राञ्जल अनुभूति अवश्य होती रहती है। उनकी लेखनी की मर्मस्पर्शी शैली का यही रहस्य है।

वैरागी जी कई बार दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों और यूरोप की सैर खुली आँखों से कर चुके हैं। वे जहाँ भी गए हैं, वहाँ के पूरे जीवन-परिवेश को उन्होंने जीया है और रचनाओं में उसको पूरी क्षमता के साथ उतारा भी है। विभिन्न देशों की यात्रा, नाना प्रकार के आचार-विचार के लोगों से संपर्क, विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों के अन्तरावलम्बन ने वैरागी जी के अनुभवों को बहुरंगी और बड़ा ही आकर्षक बना दिया है। लेखक के लिए इससे बड़ी और सिद्धिमत्ता क्या हो सकती है!

उनकी प्रस्तुत रचना 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' कई दृष्टियों से बहुत उपयोगी और मर्मस्पर्शी है। नेपाल भारत का पड़ोसी देश ही नहीं; सगा अनुज-सा है। सदियों से भारत से इसका अटूट संबंध रहा है। भारत में हिन्दू और बौद्धधर्म की प्रमुखता सदियों पुरानी है, नेपाल में भी हिन्दू और बौद्ध धर्म लोकप्रिय हैं। दोनों के देवी-देवता, पूजा-उपासना, खान-पान, रहन-सहन में

बहुत समानता है। नेपाल की राजधानी 'काठमांडो' में पशुपतिनाथ का मंदिर भारत के समस्त हिन्दुओं की धार्मिक भावना का केन्द्र है। नेपाल के लिए यह गौरव और अचरज की बात नहीं है कि जहाँ भारत के हिन्दू आपसी फूट और वैमनस्य के कारण सदियों तक गुलामी भोगते रहने को बाध्य हुए, वहीं नेपाल सदा अपनी स्वाधीनता की रक्षा करता आया है। सारे संसार में नेपाल ही एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है, जिसने अपना वर्चस्व सदियों से कायम रखा है। प्रस्तुत कृति में इस तथ्य को बड़ी ही प्राञ्जल भाषा में लेखक ने उजागर किया है।

आज का नेपाल श्री वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव की छत्रच्छाया में सांस्कृतिक, आर्थिक और औद्योगिक प्रगति के पथ पर तेजी से बढ़ रहा है। इसके पास खनिजों का भारी भंडार है। नेपाल के औद्योगिक विकास की संभावनाएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि वैरागी जी की यह कृति वहाँ के हिन्दुओं में तो आत्मगौरव की जागृति उत्पन्न करने का सशक्त माध्यम बनेगी ही, भारत और नेपाल के हिन्दुओं के बीच भी मित्रता के सूत्र इससे और भी दृढ़ होंगे। इस दिशा में इस कृति का भी उल्लेखनीय योगदान रहेगा।

मैं वैरागी जी को ऐसी सफल, समाजोपयोगी महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृति की प्रस्तुति के लिए बधाई देता हूँ। जय भारत ! जय नेपाल !

सुरेन्द्रनाथ दीक्षित
[अवकाशप्राप्तरीडर, बिहार विश्वविद्यालय]

प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री
एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत), साहित्याचार्य
साहित्यरत्न, साहित्यालंकार, विद्यासागर (डी० लिट्)
रीडर, हिन्दी विभाग, पटना कॉलेज
(पटना विश्वविद्यालय)
अधिष्ठाता : प्रकाशन विभाग
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
सम्पादक : 'आर्यसंकल्प', 'गौतम', 'प्रगतिशील समाज'

साहित्य सदन
रोशन घाट,
टेकारी रोड,
पटना-८००६

श्री रामाज्ञा 'वैरागी' की अभिनव रचना "हिन्दू राष्ट्र नेपाल" को मुझे आद्यन्त देखने का सुअवसर मिला। 'नेपाल' के बहिरंग एवं अन्तरंग की ऐसी मनमोहक झाँकी इतने कम पन्नों में देनेवाली एवं साहित्यिक सौन्दर्य से मण्डित हिन्दी में यह पहली रचना है, ऐसा मैं निर्भ्रान्त भाव से कह सकता हूँ। कथा-शैली की रोचकता के साथ प्रस्तुत इस रचना से हिन्दी का यात्रा-साहित्य निश्चय ही समृद्ध होगा !

मॉरिशस की तरह नेपाल भी सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से एक लघु भारत ही है। दोनों देशों में पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों के आवागमन की पूरी सुविधा भी प्राप्त है। पर दोनों राष्ट्रों के बीच घनिष्ठ अन्तःसम्बन्धों के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए दोनों राष्ट्रों की जनता की आत्माओं को जोड़नेवाला सारस्वत सेतु भी अपरिहार्य है।

श्री वैरागी की प्रस्तुत रचना इस सारस्वत सेतु की अभाव-पूर्ति की दिशा में एक स्वस्थ एवं अभिनन्दनीय चरण है।

श्यामनन्दन शास्त्री

●

अनुक्रम :—

राष्ट्र-निर्माता को नमन

नेपाल हमारा पड़ोसी मित्र-देश है। अपनी मातृभूमि भारत के प्रति जो हमारा गहरा आकर्षण है, वही आकर्षण किसी भी भारत-वासी के लिए अपने मित्र-राष्ट्र नेपाल को लेकर भी है। आकर्षण की यह रेशमी डोर आदिकाल से हमारे मन-प्राणों को ही नहीं, वरन् हमारी आत्मा को भी बाँधती आ रही है। इसके कई कारण हैं लेकिन इसके मूल में है—हमारी संस्कृति, हमारा आचार-विचार, हमारे जीवन की पद्धति और हमारी परम-पुनीत भावनायें।

विगत चालीस वर्षों से नेपाल मेरी नजरों में रहा है। नेपाल तब भी मेरी आँखों के सामने था, जब इस भूमि पर राणाओं का कठिन शासन था। बिना राणाओं की कृपा के पीपल के पत्ते भी हिलते न थे। लोग कहते हैं—राणाओं के शासन-काल में नेपाल संसार के मान-चित्र से बिलकुल अलग-थलग दीखता था। संचार का साधन इस देश को उपलब्ध नहीं था। कहने का तात्पर्य यह कि नेपाल में सूरज की रोशनी भी नहीं आती थी। नेपाल के मूल शासक (शाहवंश) श्री ५ कहे जाते थे और राणा (प्रधानमंत्री) श्री ३ सरकार कहे जाते थे। इस प्रकार मूल शासक को गौण कर दिया गया था और श्री ३ सरकार ही अपने को शासक सिद्ध कर रहे थे। नेपाल के राणाओं ने लम्बी अवधि तक शासन किया। नेपाल में राणाओं ने अपने लिए बहुत बड़ी सम्पत्ति अर्जित करने का संयोग प्राप्त किया। आज भी राणा-परिवारों के पास बहुत बड़ी सम्पत्ति है लेकिन धीरे-धीरे समय बदलता गया और नेपाल की जनता ने एक-जुट होकर क्रांति की रणभेरी बजा डाली। परिणामतः नेपाल से राणा-शासन की इतिश्री हो गयी, लेकिन इसके पूर्व राणाओं के कठोर शासन में न जाने कितने ही प्रतिभासम्पन्न पुत्रों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दीं, जिसकी एक

लम्बी गाथा है। इन गाथाओं से ही नहीं, शोषण की रक्तिम कथाओं से भी लोग परिचित हैं। सन् १९५० ई० की समग्र क्रांति ने नेपाल से राणाओं के शासन को समाप्त ही नहीं किया वरन् निर्मूल कर नष्ट कर दिया। तब मैं वहीं वीरगंज में रहता था।

इस जन-क्रांति के बाद नेपाल की भूमि पर एक नये सूर्य का उदय हुआ। किरणें धरती पर उतरीं। अन्धकार फटा और एक प्रजावत्सल महाराज हमारे सामने आये, जिन्हें नेपाल का इतिहास श्री ५ त्रिभुवन-वीरविक्रम शाहदेव के नाम से जानता है। इस व्यक्तित्व के नाम के पहले स्वर्गीय इसलिए नहीं लगा रहा हूँ कि नेपाल की भूमि पर प्रजातन्त्र के प्रवर्त्तक के रूप में श्री ५ त्रिभुवनवीरविक्रम शाहदेव का गरिमामय प्रभाव है। यह प्रभाव प्रत्येक नेपाली की आत्मा में विद्यमान है। श्री ५ त्रिभुवनवीरविक्रम शाहदेव के विचार, सिद्धान्त और आदर्श आज भी जीवित हैं। मेरी यह व्यक्तिगत मान्यता है कि श्री ५ त्रिभुवनवीरविक्रम शाहदेव आज भी जीवित हैं और उनका आर्शीवाद आज भी नेपाल की जनता को प्राप्त है। नेपाल की जनता ही नहीं, भारतीय जनता भी नेपाल के प्रजावत्सल सम्राट् श्री ५ त्रिभुवनवीरविक्रम शाहदेव के प्रति अपना असीम आदर और श्रद्धा-भाव रखती है। इतिहास साक्षी है कि नेपाल की भूमि पर राजतंत्र की शीतल छाया के नीचे प्रजातंत्र की स्थापना का श्रेय भी इन्हें ही प्राप्त है।

एक समय था, जब नेपाल छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित था। इन टुकड़ों को समेटकर सशक्त राष्ट्र नेपाल को भौगोलिक स्वरूप दिया—प्रतापी सम्राट् श्री ५ पृथ्वीनारायण शाहदेव ने। सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह ने ही नये नेपाल की सशक्त आधारशिला रखी। आज नेपाल का जो स्वरूप हमारे सामने है, वह सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह के शौर्य और संस्कारों का जीवित प्रमाण है। आज नेपाल को

लेकर कोई कुछ कहता है, कोई कुछ; लेकिन भूगोल और इतिहास को अस्वीकार नहीं किया जा सकता ! नेपाल का भूगोल और इतिहास यह स्वीकार करता है कि पूर्व की सीमा-रेखा मेची नदी और पश्चिम की सीमा-रेखा महाकाली नदी (सरस्वती) के बीच नेपाल को संगठित स्वरूप सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह ने ही दिया।

नेपाल के अधिष्ठाता के रूप में सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह का व्यक्तित्व और उसके निर्माता के रूप में श्री ५ त्रिभुवनवीर विक्रमशाह-देव का कृतित्व नेपाली जनता के लिए सत्प्रेरणा का अक्षय-कोष है। यही कारण है कि नेपाल की ये दो विभूतियाँ आज भी नेपाल के सन्दर्भ में परम पूजनीय हैं और अविस्मरणीय भी। नेपाल की भूमि पर ये दो महान विभूतियाँ समय की शिला पर अमिट हस्ताक्षर ही नहीं, संरक्षित काल-पात्र भी हैं। नेपाल के इतिहास का कोई भी अध्येता इन दो महान पुरुषों को सामने रखकर ही कोई चिन्तन कर सकता है। ये दोनों महान विभूतियाँ हमारे लिए भी सादर वन्दनीय हैं।



नेपाल पहाड़ों और नदियों की भूमि है। ऊपर से नीचे उतरने के कारण इन पहाड़ी नदियों की धारा बहुत ही तेज होती है। नेपाल की पर्वतीय भूमि पर पहाड़ी नदियाँ चक्कर काटती हुई नीचे आती हैं और अपने साथ ले आती हैं—भारत-नेपाल मैत्री के सन्देश। यही कारण है कि भारत और नेपाल एक-दूसरे के साथ आज तक संपूर्ण हार्दिकता के साथ जुड़े आ रहे हैं।

नेपाल के उत्तर में हैं—हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियाँ और तिब्बत की भूमि, जिस पर चीन ने अधिकार जता रक्खा है। तिब्बत की अपनी संस्कृति रही है। कहते हैं, वह संस्कृति धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है। दक्षिण में हैं—भारत, उत्तरप्रदेश और बिहार के उत्तरी जिलों की एक लम्बी सीमा-रेखा—प्रायः १५७ मील फैली! पूरब में हैं—सिक्किम तथा दार्जिलिङ्ग (पश्चिम बंगाल) और पश्चिम की ओर अल्मोड़ा, गढ़वाल (भारत) आदि।

नेपाल का क्षेत्रफल है—५५५०० वर्गमील। नेपाल की जनसंख्या है—एक करोड़ पच्चास लाख। जनसंख्या की दृष्टि से नेपाल अभी सीमित है। बड़ी जनसंख्या किसी भी देश के लिए नित नयी समस्यायें लाती है। इस दिशा में नेपाल काफी दिनों से जनसंख्या को सीमित रखने के लिए प्रयास कर रहा है। नेपाल-जैसे क्षेत्रफल की दृष्टि से छोटे देश के लिए बड़ी जनसंख्या कठिन संकट की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। इस संभावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। संतोष की बात यह है कि नेपाल में परिवार-नियोजन की योजना संचालित है। प्रशासन की बहुत बड़ी शक्ति इस ओर सजग एवं सचेष्ट है।

नेपाल की भौगोलिक रूप-रेखा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—(क) हिमालय की हिम-आच्छादित भूमि अथवा नेपाल का वह भू-भाग जो सर्वदा वर्फ ओढ़े रहता है। इस कठिन पर्वतीय भूमि के निवासी पौष से लेकर फाल्गुन तक नेपाल के मध्य-भाग या भारत की ओर आ जाते हैं। ये चमरी गाय का चँवर, कस्तूरी, हींग, जंगली जड़ी-बूटी आदि का व्यापार भी करते हैं। ये लोग भोटिया या लामा कहे जाते हैं। (ख) मध्य पर्वतीय वन्य-भाग हिमालय के हिम-आच्छादित एवं तराई के वीच का भाग है। यह भाग समुद्र-तट से २००० फुट से लेकर १२००० फुट की ऊँचाई पर है। इस भू-भाग की पर्वतीय घाटियों के भीतर कृषि-योग्य भूमिं भी है। नेपाल के निवासी इस भू-भाग में कृषि के लिए कठिन परिश्रम करते हैं। (ग) तराई की उर्वर-भूमि नेपाल की वह भूमि है, जिस पर समस्त नेपाल का भविष्य निर्भर करता है। इस तराई क्षेत्र की मुख्य ऊपज हैं—चावल, गेहूँ, जूट, मकई आदि। इंधर इस भाग का वहुत ही विकास हुआ है और उन्नत कृषि की वैज्ञानिक शैली अपनाकर इस भू-भाग के निवासी अपने श्रम की पताका आसमान पर लहराने के लिए अथक परिश्रम करने को आकुल-आतुर देखे जा सकते हैं। यह क्षेत्र नेपाल के पटसन-उद्योग को कच्चा माल भी मुहैया करता है।

प्राकृतिक स्थिति और जलवायु के आधार पर ही नेपाल की विभिन्न जातियाँ बसती हैं—जैसे, ऊँचे पहाड़ों पर शेरपा और तमांग जातियाँ वसती हैं और पहाड़ों के नीचे लिम्बू, हापु, किराती, राई, मगर, गुरुंग, दमाई (दर्जी) सार्की (चमार) कामी (लोहार) शुनुवार (पहाड़ी ब्राह्मण), क्षत्री, नेवार आदि जातियाँ निवास करती हैं, और उसके नीचे भीतरी मधेश तथा मधेश के उत्तरी छोर पर थारू, दमवार, धीमाल, राजवंशी, गनगाई, मेचे एवं मधेश के

दक्षिणी छोर पर मैथिल ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार, तेली, सूँढ़ी, कलवार, केवट, कुर्मी, धानुक आदि जातियाँ वसती हैं। नेपाल में भी जातियों का लम्बा लेखा-जोखा है। इधर तराई क्षेत्र में बहुत सारे पहाड़ी आकर बस गए हैं।

नेपाल अभी तक अपने को संतुलित रखता हुआ सम्यक् विकास के पथ पर बढ़ता चल रहा है, लेकिन भविष्य की आशंका उसे भी सताने लगी है फिर भी नेपाल संसार का अकेला देश है, जहाँ के निवासी भौगोलिक एवं प्राकृतिक आधारों पर पूर्णतः आश्रित हैं।

नेपाल प्राकृतिक सौन्दर्य लिए हमारे सामने है, जो विश्व के पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और इस देश में भारी संख्या में पर्यटक आते रहते हैं। पर्यटन धीरे-धीरे यहाँ उद्योग का स्वरूप ग्रहण करता जा रहा है।

नेपाली भाषा नेपाल की राष्ट्रभाषा घोषित है। नेपाली भाषा की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि के रूप में विख्यात है, इसलिए उसे वे सम्पूर्ण सुविधायें सुलभ हैं, जो हिन्दी को सुलभ हैं। केवल लेटर-कम्पोजिंग में कुछ अतिरिक्त टाइप्स नेपाली में व्यवहृत होते हैं। नेपाली भाषा के अतिरिक्त यहाँ कई वोलियाँ बोली जाती हैं—मैथिली, भोजपुरी, थारू, तामाङ्ग, नेवारी, पर्वती, अवधी, भोंट, शेर्पा, राजवंशी, संथाली आदि। नेपाल में वोली जानेवाली वोलियों की कतार वहुत ही लम्वी है, लेकिन जिन बोलियों के वोलनेवालों की संख्या कम है, धीरे-धीरे ये बोलियाँ लुप्त होती जा रही हैं। जनसंख्या की दृष्टि से नेपाली के वाद मैथिली और भोजपुरी का क्रम आता है। मैथिलो में वहुत सारा साहित्य लिखा गया है और आज भी लिखा जा रहा है। भोजपुरी में भी लिखनेवाले लोग हैं, जो आज भी लिख रहे हैं। मैथिली में कई पत्र-पत्रिकायें भी प्रकाशित होती हैं। भोजपुरी में भी नेपाल से कई प्रयास

किए गए हैं; जैसे-वीरगंज से 'समाद' और 'सनेस'। इधर विजय प्रकाश वीन के सम्पादन में एक भोजपुरी पाक्षिक प्रकाशित हो रहा है—'सगुन'। नेपाल से भोजपुरी पाक्षिक का प्रकाशन एक साहसिक प्रयास कहा जा सकता है।

नेपाल की नेवार जाति नेवारी भाषा बोलती है। यह भाषा बहुत ही कठिन है। नेवारी की अपनी कोई लिपि भी नहीं रही है। इधर आकर नेवारी ने देवनागरी लिपि को स्वीकार कर लिया है। मेरी व्यक्तिगत मान्यता है कि नेवारी बोली के रूप में कल भी जीवित रहेगी और इसका श्रेय देवनागरी लिपि को होगा। तराई के लोग भी धारा-प्रवाह नेपाली भाषा लिखते और बोलते हैं। नेपाल की शिक्षा का आधार नेपाली भाषा हैं लेकिन कहीं-कहीं ऊपरी कक्षाओं में हिन्दी भी पढ़ायी जाती है।

नेपाल में हिन्दी नहीं है, लेकिन हिन्दी है—कई रूपों में—पुस्तकालयों से लेकर काउन्टरों तक ! हिन्दी का कथा-साहित्य नेपाल में अभिरुचि के साथ पढ़ा जाता है। यह हिन्दी की विशेषता है, जो अपना स्थान बनाए रख सकी है, वैसे नेपाल से हिन्दी निर्वासित है !



शौर्य, संस्कार और जीवन

यह छोटी-सी कृति नेपाल का कोई इतिहास या भूगोल नहीं है; लेकिन इसके माध्यम से अपने पड़ोसी मित्र-देश का निकट से परिचय मात्र हमारा लक्ष्य है, इसलिए कि विगत कई दशकों से नेपाल मेरी आँखों के सामने है, मेरी नजरों में है। फोटोग्राफी मेरी प्रवृत्ति है, इसे आप 'हौवी' भी कह सकते हैं। इसी प्रवृत्ति के साथ जुड़ा है—पर्यटन या घुमक्कड़ी, जो मेरे स्वभाव के साथ सम्मिलित हो गयी है। नेपाल पर मेरी यह रचना मेरी इसी प्रवृत्ति का परिणाम है। इस क्रम में कभी ज्ञान प्राप्त करने के लिए और कभी समय काटने के लिए पढ़ते रहना मेरी आदतों में सम्मिलित हो गया है लेकिन गंदा और रद्दी साहित्य नहीं पढ़ता अक्सर स्वस्थ साहित्य खरीदकर पढ़ने की रुचि मेरे साथ जी रही है।

'पद्मपुराण' के हिमवंत-दंतकथा-खण्ड के अनुसार, किसी 'नय' मुनि के नाम पर 'नयपाल' हुआ और कालान्तर में वह 'नेपाल' हो गया। नय मुनि कभी नेपाल पर शासन भी करते थे। वैसे नेपाल के नामकरण को लेकर कई रोचक कहानियाँ प्रचलित हैं। तिब्बती भाषा के अनुसार 'ने' का अर्थ होता है 'ऊन' और पाल का अर्थ होता है 'घर', कुल मिलाकर 'ऊन का घर', जिसे नेपाल कहा गया। प्राचीन काल में देवताओं की पावन आवासीय भूमि को 'ने' कहा जाता था, इसीलिए इस भूमि को 'नेपाल' कहकर पुकारा गया। हमारे यहाँ नेपाल का अर्थ ही है—देवताओं की तपोभूमि, यानी नेपाल का अर्थ है—"तपस्वियों की तपोभूमि।"

नेपाल की भूमि पर कभी गोपालवंशीय राजाओं का शासन रहा है। कहा जाता है कि किसी गोपाल-कुल के राजा को पराजित कर किरात-वंश के किसी प्रतापी पुरुष ने अपना शासन-अधिकार स्थापित किया। किराती राजा 'स्थुंको' के समय ही सम्राट् अशोक अपनी

सुपुत्री 'चारुमती' के साथ बुद्ध की जन्मभूमि लुम्बिनी आए थे और महात्मा बुद्ध की जन्मभूमि को सादर नमस्कार कर अपने को अनुगृहीत किया था।

प्रसिद्ध चीनी यात्रियों की भारत भ्रमण-कथा के अनुसार 'नेपाल-यात्रा' के समय अशोक महान या प्रियदर्शी अशोक ने चम्पारण की भूमि को अपने पावन चरण-कमलों से पवित्र किया था। यह यात्रा सम्राट् अशोक ने नरकटियागंज-भिखनाठोरी होते हुए समाप्त की थी। वे लुम्बिनी से काठमांडू भी गए थे। अपनी नेपाल-यात्रा के समय ही अपनी राजकुमारी चारुमती का पाणिग्रहण-संस्कार उन्होंने नेपाल के एक क्षत्रिय कुमार देवपाल के साथ किया था।

इतिहास मेरा विषय नहीं है, लेकिन प्रसंगवश कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं। किरात-वंश के अंतिम राजा पटुक के शासन-काल में सोम-वंशीय लोगों ने आक्रमण कर दिया।'पटुक' के पुत्र 'गस्ति' को पराजित कर राजा निमिष ने राज्य पर अधिकार कर लिया। इसपर किरात-वंश का राज्य समाप्त हो गया, लेकिन किरात-जाति के निवासी, किरात-जाति के लोग आज भी अपना शौर्य और वीरोचित संस्कार लिए जीवित हैं। नेपाल की भूमि पर भारत और नेपाल की सेना की एक सशक्त कड़ी के रूप में किरात आज भी अपना योगदान कर रहे हैं। नेपाल की जो अन्य जातियाँ आज भी अपने सैनिक संस्कारों के लिए प्रसिद्ध और स्मरणीय हैं, वे हैं—राई, लिम्बु मगर, गुरुङ्ग आदि। इन जातियों के वीर-पुत्र भारतीय और नेपाली सेना में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करते हैं। यह स्मरणीय है कि भारतीय सेना के गोरखा रेजिमेंट को गौरवमय ध्वज अर्पित करने का श्रेय भी नेपाल की इन पर्वतीय जातियों को है। इन वीर-पुत्रों ने कई युद्धों और महायुद्धों में अपनी वीरता का इतिहास लिखा है—अपनी प्राणाहुतियों से, अपने बलिदान से! इन जातियों की अपनी-अपनी भाषा है, जो नेपाली से

बिलकुल अलग है। कर्त्तव्य के प्रति गहरी निष्ठा और कठिन अनुशासित जीवन-आचरण इनकी संस्कारगत परम्परा रही है। यह परंपरा आज भी अपने स्थान पर जीवित है। नेपाल की ये पर्वतीय जातियाँ नेपाल की प्रवल राष्ट्रीय शक्ति ही नहीं, सैन्यशक्ति की भी आधार-शिलायें हैं। नेपाली जन-जीवन में धर्म और कर्त्तव्य के प्रति गहरी निष्ठा का समावेश रहा है, लेकिन जैसे-जैसे समय वदल रहा है, नेपालियों में भी वदलाव आता जा रहा है।

नेपाल को विना मीन-मेख के, मंदिरों और देवमूर्त्तियों का देश कहा जाता है। आप इस देश के किसी भी नगर से गुजरिये, किसी भी पगडंडी या गली से गुजरिये, कहीं मंदिर तो कहीं मूर्त्तियाँ अवश्य दिखायी देंगी। यदि आप प्रातःकाल कहीं निकलिए तो लोग फूल-डालियों में पूजन-सामग्री लिए चलते-फिरते दिखायी देंगे। यह धार्मिक संस्कार-विश्वास नयी रौशनी में अव धीरे-धीरे शिथिल पड़ने लगा है।

नेपाल की भूमि पर शैव हैं, तो वैष्णव भी; इस भूमि पर जैनी हैं तो वौद्ध भी। नेपाल की भूमि पर इन विभिन्न सम्प्रदायों का साक्षात् स्वरूप देखा जा सकता है लेकिन धर्मों और सम्प्रदायों को लेकर किसी भी प्रकार का भेद-भाव इस भूमि पर नहीं है। अव स्वामी दयानन्द की विचार-धारा भी इस भूमि के वातावरण को आलोकित करने लगी है।

तिब्वती और जापानी पँगोडा शैली के प्रभाव के समान ही पशुपतिनाथ और माता गुह्येश्वरी के प्रति जनता की शुद्ध निष्ठा आज भी जीवित है। इन धार्मिक स्थलों की गौरवमयी भव्यता तथा प्राचीनता, वैभव-विस्तार एवं अजेय धार्मिक भावना इस पर्वतीय देश की अपनी विशेषता है और विशिष्टता भी !

हिमालय-पर्वतमाला से आवेष्टित यह पर्वतीय प्रदेश एक सुरम्य पर्यटन-भूमि है। इस देश की राजनीति किसी अन्य देश की तरह

अपना रंग वदल सकती है, कूटनीति कुछ से कुछ कर सकती है लेकिन इसकी धार्मिक भावना को वदल नहीं सकती, उन भावनाओं पर आक्रमण संभव नहीं है। नेपाल की जनता की जो आस्था श्री ५ के प्रति है, राजनीतिक हवा का कोई भी हिलकोरा उसे हिला नहीं सकता ! यह सर्वमान्य सत्य है कि नेपाल का प्रत्येक निवासी अपने सम्राट् को देव-तुल्य मानकर आराधना करता है। इस अजेय संस्कार को नेपालियों की आत्मा से शायद कभी अलग नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि उनकी यह आस्था वहुत ही सवल है।



संचार के चरण

हिमालय की तलहटी, हरे-भरे खेत, चक्कर खाते हुए छोटे-बड़े पहाड़ और पहाड़ियाँ, सुदूर-दूर तक फैले घने घोर जंगल, मोहक हरियाली, बड़े-बड़े पेड़ और चारों ओर घनी-तनी झाड़ियाँ, ऊपर नीला आसमान और सामने की ओर चमकीली चोटियाँ ! अगर आपको भूगोल का सामान्य पर सुलझा ज्ञान है तो आप एक स्थान पर ही खड़े-खड़े सुविधा के साथ यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह चोटी गौरीशंकर की है और वह चोटी अन्नपूर्णा की। हिमालय की चोटियों की बात तो दूर, नेपाल के वे पहाड़, जिन्हें पारकर आप नेपाल की राजधानी काठमांडू को जाते हैं, यहाँ से साफ-साफ दिखलायी देते हैं—दर्पण की तरह !

यदि आप नेपाल के प्रवेश-द्वार रक्सौल से ही सामने की ओर देखें तो आपको अनुभव होगा कि आप बिलकुल पहाड़ के नीचे खड़े हैं। यह कोई कोरी कल्पना की बात नहीं है। सामने ही पर्वतराज हिमालय को आसमान से वार्तालाप करती हुई ऊँची-ऊँची चमचमाती चोटियाँ बर्फ से ढँकी रहती हैं। सुबह के समय सूरज की तेज किरणों से इन चोटियों की शोभा और भी निखर जाती है। जी चाहता है कि हम उन चोटियों की नैसर्गिक सुषमा को हमेशा निहारते ही रहें और लोचनों से सर्वदा पीते रहें।

कई देश ऐसे हैं, जिनकी सीमायें भारत को स्पर्श करती हैं। चीन को तिब्बत दान कर देने के बाद चीन की सीमा भी भारत को स्पर्श करती है, बर्मा की सीमा भी भारत की सीमा के साथ लगी हुई है और पाकिस्तान की सीमायें भी। बंगलादेश के उदय के बाद अब बंगलादेश की सीमा भी भारतीय सीमा का स्पर्श करती है। हमारा देश भारत लम्बी-चौड़ी सीमाओं से घिरा एक शांतिप्रिय देश है,

लेकिन हमारी शांतिप्रियता का अनुचित लाभ उठाते रहे हैं हमारे पड़ोसी देश। पर ऐसे देशों में नेपाल नहीं है। सीमा-रेखा को लेकर ही भारत को चीन के साथ मोर्चाबन्दी करनी पड़ी और पाकिस्तान के साथ भी। भारत को अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए जितना आर्थिक भार वहन करना पड़ रहा है, उतना एशिया के किसी देश को नहीं। सामरिक दृष्टि से हमारा भारत एक संवेदनशील देश बनता जा रहा है।

नेपाल भारत का पड़ोसी देश है। नेपाल की बहुत लम्बी सीमा भारत का स्पर्श करती है। नेपाल और भारत की सीमाओं को स्पर्श करनेवाले बहुत से नगर-उपनगर हैं, लेकिन वे मात्र सीमा को ही स्पर्श करते हैं। रक्सौल ही ऐसा स्थान है, जो नेपाल की सीमा को स्पर्श ही नहीं करता, नेपाल जाने का सीधा सुविधाजनक मार्ग भी देता है। किसी भी पर्यटक को यदि स्थल-मार्ग से नेपाल जाना है, तो उसे रक्सौल आना होता है, चाहे वह यात्री गढ़वाल से आये या दार्जिलिंग से, रक्सौल होकर ही वे नेपाल जाते हैं; लेकिन इधर नेपाल की विकसित संचार-व्यवस्था से थोड़ा बदलाव आया है। पश्चिम से पूरब तक राजमार्ग बन जाने के बाद जनकपुरधाम के लोग पथल-हिया होकर बस द्वारा काठमांडू जाने लगे हैं। नेपालगंज या भैरहवा के लोग पोखरा होते हुए काठमांडू जाते हैं।

भारतीय सेना के अभियंत्रण विभाग का नमन कि उसने सर्वप्रथम त्रिभुवन राजपथ का निर्माण कर सबसे पहले स्थल-मार्ग दिया। त्रिभुवन राजपथ का निर्माण करते समय हमारी सेना के कई जवान बलिदान हो गए लेकिन दुर्गम पर्वतों को काटकर त्रिभुवन राजपथ का निर्माण कर नेपाल की जनता को समर्पित कर दिया। यह विशाल राजपथ पालुंग, शिवभंजन और दामन की चोटियों से होकर काठ-मांडू को जाता है। यह राजपथ प्रायः ९ हजार फुट ऊँचे पर्वतों

की चोटी से गुजरता है। इस पथ में सैकड़ों प्राणघातक मोड़ मिलते हैं। इस पथ के ऊपर से वसें गुजरती हैं तो लगता है, वस के माथे पर ही वस चली जा रही है। यह त्रिभुवन-राजपथ अपने किस्म का अकेला पथ रहा है। इस पथ की ऊँची-ऊँची चोटियाँ यात्रियों को जहाँ जीवन देती रही हैं, वहीं उनमें मृत्यु की आशकाओं को भी जन्म देती रही हैं।

समय के साथ ही, नेपाल की भूमि पर संचार-व्यवस्था को लेकर भी सम्यक् विकास हुआ है और एक नयी सड़क नारायणघाट होकर कुछ दिन पहले वनी है। नेपालगंज, भैरहवा या बुटवल से नेपाल जाने-वाले यात्री भी भरतपुर-नारायणघाट होकर काठमांडू जाते हैं। यह मार्ग सीधा वीरगंज से नारायणघाट होते हुए नारायणी (सदा-नीरा) नदी के किनारे-किनारे होकर काठमांडू तक जाता है। इस मार्ग पर वैसे खतरनाक मोड़, चढ़ाई या उतराई नहीं है, जैसी कि त्रिभुवन-राजपथ पर है। त्रिभुवन-राजपथ होकर काठमांडू की दूरी कम थी लेकिन नारायणघाट होकर वही दूरी वढ़ जाती है, वहुत वढ़ जाती है। विशेषता इस सड़क की यह है कि यह त्रिभुवन-राज-पथ से अधिक सुरक्षित है, निरापद है। यही कारण है कि इस मार्ग पर रात्रि बस-सेवा भी संचालित है। आप शाम को वीरगंज वैठिए और हिचकोले खाते हुए सुवह काठमांडू उतर जाइए।

इस नये मार्ग से जहाँ निरापद और सुरक्षित यात्रा का शुभारम्भ हुआ है, वहीं दूसरी ओर रक्सौल और वीरगंज के आवासीय होटल बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। पहले रक्सौल के होटलों में भीड़ लगी रहती थी, अव इन होटलों की हालत दयनीय होने लगी है। कई आवासीय होटल दिवालिया होने लगे हैं, कहिए कि हो गए हैं। आम तौर पर किसी यात्री को रक्सौल या वीरगंज के किसी होटल में रात गुजारने के लिए जो रकम व्यय करनी होती है, उसी राशि से

लोग पूरी रात गुजार कर सुबह होते काठमांडू पहुँच जाते हैं। भागते हुए समय की अपनी कीमत होती है। काठमांडू की रात्रि बस-सेवा से समय की बचत होती है, मूल्यवान समय की !

नेपाल संचार की नयी सुविधाओं से सज्जित होने लगा है, सम्पूर्ण नेपाल में सड़कों का जाल बिछने लगा है। पहले संचार के अभाव में नेपाल के दरवाजे पर विकास की किरणें नहीं पहुँची थीं, पर अब वह स्थिति नहीं है। सारे नेपाल में संचार की सुविधायें सुलभ हो गयी हैं। जिन दुर्गम क्षेत्रों में सड़कें नहीं थीं, उन क्षेत्रों में भी सड़कों का निर्माण होने लगा है। नेपाल के लिए यह एक शुभ संकेत है।

नेपाल ने अपनी सुविधा के लिए चीन से पथ-सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, यह है कोडारी-राजमार्ग। इस कोडारी-राजमार्ग से चीन के साथ आवागमन सम्भव हो गया है, सुगम हो गया है। हवाई यात्रा के लिए 'शाही विमान-सेवा' आपकी सेवा में तत्पर रहती है। सेमरा विमान-स्थल से काठमांडू के साथ ही कई देशों के लिए नियमित विमान-सेवा भी है।

भारत के साथ ही नेपाल भी यह अनुभव करता है कि किसी भी देश के सम्यक् विकास के लिए शांति की स्थापना एक अनिवार्य शर्त्त है। युद्ध या आंतरिक संघर्ष देश की शक्ति को क्षीण ही नहीं करता वरन् विकास के पहिए को भी जाम करता है। इस स्थिति का सम्यक् ज्ञान नेपाल के श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव को है। नेपाल का प्रशासन नेपाल के विकास के लिए सजग ही नहीं, सतत प्रयत्नशील भी है।

किसी देश में जनतंत्र है या राजतंत्र—इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। यह तर्क अब गलत साबित हो गया है। राजतंत्र की छाया के नीचे भी देश विकास की सीढ़ियों पर चढ़ते हैं। संसार में ऐसे अनेक उदाहरण हैं। इस दृष्टि से ब्रिटेन और जापान का नाम प्रथम श्रेणी

में आता है। अपनी प्राकृतिक स्थिति एवं अपने सीमित संसाधनों के बल पर नेपाल ने अपना विकास किया है। पूर्वाग्रह और कठिन कुण्ठा से भरी आँखें भले ही इस जीवित सत्य को देख न सकें ! नेपाल कई क्षेत्रों में अपने विकास के लिए अथक प्रयास कर रहा है। नेपाल के इस महायज्ञ में विश्वास का धूप-दीप लिए विश्व के कई देशों ने सहयोग का हाथ वढ़ाया है। ऐसे देशों में भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत रूस, चीन आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आँकड़ों से इसका स्पष्ट चित्र सवके सामने है कि नेपाल के विकास में, नेपाल की प्रगति में भारत का योगदान, भारत का सहयोग विशिष्ट ही नहीं, उल्लेखनीय भी है। नेपाल में भारतीय सहयोग से स्थापित और संचालित ऐसी कई ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण योजनायें हैं, जो नेपाल के विकास के लिए वरदान सिद्ध हुई हैं। ऐसी योजनाओं में त्रिभुवन राजपथ, सुन्दरी जल, त्रिशूली-परियोजना, गंडक-योजना देवीघाट-योजना और कर्नाली-परियोजना आदि प्रमुख हैं।

नेपाल की संचार-व्यवस्था को सशक्त वनाने में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

नेपाल एशिया का एक ऐसा देश है, जिसकी निजी विशेषतायें भी हैं। भारत और चीन जैसी दो महाशक्तियों के वीच नेपाल की अखण्डता और उसकी सार्वभौम प्रभुसत्ता सुरक्षित है, जीवित है। इसका मूल कारण है नेपाल की गुटनिरपेक्षता और तटस्थता की स्पष्ट नीतियाँ !

आज यातायात की आधुनिकतम सुविधायें यहाँ उपलब्ध हैं। पहले नेपाल जाने के लिए पैदल-यात्रा के अलावा और कोई चारा न था, तव भी लोग काठमांडू जाते ही थे। असहाय या दुर्वल लोग डोको (आदमी की पीठ पर लदी टोकरी) पर सवार होकर नेपाल जाते थे। इसके लिए मजदूरी देनी होती थी। कल्पना कीजिए, उस मजबूत कंधोंवाले

नेपाली की, गरीब नेपाली की, जो यात्री को अपनी पीठ पर लादकर काठमांडू पहुँचाता था, विलकुल सुरक्षित; फिर चन्द्रागढ़ी की चढ़ाई और शीशागढ़ी की उतराई, साधारण-सी असावधानी आपको हजारों फुट नीचे ले जाकर दफन कर दे सकती है कि कहीं आपकी अस्थि के भी दर्शन नहीं मिले !

पहले नेपाल जाने के लिए रक्सौल से अमलेखगंज तक एन० जी० आर० (नेपाल गवर्नमेंट रेलवे) की रेल जाती थी, फिर अमलेखगंज से भीमफेड़ी तक लोग मोटर या ट्रक से जाया करते थे और भीमफेड़ी से पैदल या ट्रक या बस से नेपाल की राजधानी काठमांडू पहुँचते थे। फाल्गुन शिवरात्रि के अवसर पर नेपाल जानेवाले 'मधेसिया' (भारतीय) लोग इसी राह से जाते थे। तब काठमांडू जाने के लिए 'राहदानी' (पासपोर्ट) लेनी होती थी, जो वड़ी आसानी से मिला करती थी। राहदानी के विना काठमांडू-प्रवेश अवैध माना जाता था। दुर्गम पर्वतीय रास्ते जासूसी उपन्यास के कठिन रोमांचकारी घटना-क्रम की तरह सामने आते रहते और आदमी आशंकाओं के झूले पर झूलता हुआ आगे वढ़ता रहता। आज भी नेपाल की यात्रा सस्पेन्स से भरी कहानियों से भिन्न नहीं है। यह वात और है कि आज समय वदल गया है। वदलते हुए समय की साक्षी आज की सुविधायें हैं लेकिन जयनगर-जनकपुर रेलवे, नेपाल गवर्नमेंट रेलवे की तरह, राणा-शासन की यादगार है। रेलों की दुनिया में नेपाली रेल सबसे छोटी नैरोगेज रेल है। राणा-शासन में ब्रिटिश सरकार की सहायता से स्थापित ये नैरोगेज रेल-लाइनें विछायी गयी थीं। रक्सौल से अमलेखगंज की लाइन अपनी आखिरी घड़ी गिन रही है, वल्कि समाप्त हो गई है। कभी-कभी इन लाइनों पर आदिकालीन इंजन और छोटे माल-डब्बे भक-भक करते दीख जाते हैं, जो केवल दर्शनों के लिए ही रह गए हैं। जयनगर

(दरभंगा) से जनकपुरधाम तक और जनकपुरधाम से बिजलपुरा तक की नैरोगेज रेल-लाइन आज भी संचालित है, जो यात्रियों को और माल को ढोती है।

भारत के साथ हुए नए समझौते के अनुसार रक्सौल से अमलेखगंज तक रेल-लाइन बिछाने की योजना प्रस्तावित एवं स्वीकृत है, इसकी क्रियान्विति की प्रतीक्षा की जा रही है। नेपाल की जल-सम्पदा को देखते हुए नेपाल की भूमि पर नयी और आधुनिकतम रेल-व्यवस्था की कल्पना सहज ही की जा सकती है। नेपाल के कुछ हिस्सों को छोड़कर जो अधिक ऊँचाई पर हैं, चारों ओर रेलें बिछायी जा सकती हैं और नेपाल की तराई के लोगों को कम कीमत पर सुविधा-जनक यात्रायें करायी जा सकती हैं।

इस रेल-व्यवस्था से नेपाल के बढ़ रहे और विकसित हो रहे उद्योगों को भी सफलतायें मिल सकती हैं। यह समय का स्वर है। यह स्वर नेपाल के वातावरण में भी अनुगुंजित होने लगा है।



सीमा-भूमि : सीमा-रेखा

नेपाल हमारा पड़ोसी मित्र-देश है। नेपाल और भारत की जनसंख्या का अगर तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो कुछ विचित्र-सा लगता है लेकिन समानता के आधार पर भारत और नेपाल एक साथ हैं। नेपाल की लम्बी सीमा हमारे देश की सीमा का स्पर्श करती है लेकिन सीमा-भूमि को लेकर आज तक कोई भी संघर्ष या विवाद भारत और नेपाल के बीच नहीं हुआ, इसलिए कि विवादहीन भूमि अपनी जगह पर विराजमान है, जिसे 'दसगजा' कहते हैं—"नो मैन्स लैण्ड" यानी मानवरहित भूमि। कहीं-कहीं प्रस्तर-स्तम्भ भी हैं, जो दीख जाते हैं। इधर कुछ ही दिन पूर्व जर्जर और जीर्ण-शीर्ण प्रस्तर स्तम्भों की मरम्मत हुई है। इस निर्माण-कार्य का वैसे कोई अर्थ नहीं है लेकिन एक अर्थ है—दो राष्ट्रों का पारस्परिक आत्म-सन्तोष !

भारत और नेपाल के वीच एक अटूट सीमा-रेखा भी है, अजेय सांस्कृतिक सीमा-रेखा। भारत-नेपाल-सीमा पर बने सीमा-प्रस्तर-स्तम्भ समय के झकोरों से धराशायी हो सकते हैं, यह सीमांकन विनष्ट हो सकता है, लेकिन नेपाल और भारत के वीच की सीमा-रेखा कभी धूमिल नहीं हो सकती !

भारत और नेपाल का भाग्य परस्पर जुड़ा हुआ है। यह कोई अत्युक्ति नहीं है। हमारे पारस्परिक सम्वन्ध इतने गाढ़े हो चुके हैं कि विश्व की कोई भी शक्ति इस सम्बन्ध को प्रभावित नहीं कर सकती। भारत और नेपाल को सदा यह मानकर चलना होता है कि विश्व के मानचित्र पर हमारी परिस्थितियाँ भिन्न नहीं हैं।

यह नेपाल की विशेषता मानी जा सकती है। नेपाल की व्यवहार-कुशल राजनीति भी इसके लिए सहायक सिद्ध हुई है।

नेपाल की अपनी प्राकृतिक मान्यतायें हैं और उसका अपना सांस्कृतिक ही नहीं, राजनीतिक परिवेश भी है। राणाओं के साथ हुए मुक्ति-संघर्ष के वाद नेपाल के राजनीतिक धरातल पर चमत्कारपूर्ण परिवर्त्तन हुआ है। यह कहना भी अनुचित न होगा कि जो स्वर्णिम संयोग नेपाल की मुक्ति के लिए किए गए सघर्ष के समय या उसके वाद नेपाल के राजनीतिक नेताओं को मिला, वह पारस्परिक विवाद के कारण विलीन हो गया। नेपाल की राजनीतिक विवशता यह है कि यहाँ राजनीतिक दल भी अधिक रहे हैं और नेता भी। पर नेपाल की जनता ने अपनी ओर से सर्वमान्य निर्णय देकर नेपाल की राजनीति को दिशा-वोध दिया है।



विकास के नये चरण

इतिहास चाहे किसी वड़े देश का हो या छोटे देश का, इतिहास चाहे किसी विकसित देश का हो या विकासशील देश का—इतिहास इतिहास है, वह समय पाकर करवट लेता है। नेपाल के इतिहास ने भी वार-वार करवटें वदली हैं। भारत सदा से ही नेपाल की अखण्डता और प्रभुसत्ता का पक्षधर रहा है। नेपाल के राष्ट्र-संघ में प्रवेश से लेकर आज तक भारत सदा ही नेपाल को विकसित देखते रहने का प्रवल अभिलाषी रहा है।

नेपाल का संविधान इसकी जनता को दिशा-बोध देने में सक्षम है। महान् राजनीतिज्ञों का मत है कि किसी भी राष्ट्र का संविधान उस देश की विकासशील दिशा का सूचक होता है। जो राष्ट्र अपने संविधान के प्रति आस्थावान नहीं होता, वह राष्ट्र उस दिशा में अग्रसर नहीं होता, जिसके लिए समय उसे पुकारता है। इस दृष्टि से नेपाल की जनता अत्यन्त जागरूक है। नेपाल की जनता अपने संविधान के प्रति परम आदर की भावना रखती है। यही भावना नेपाल को नयी दिशा की ओर जाने के लिए प्रेरणा देती है और आगे भी अनुप्रेरित करती रहेगी।

नेपाल की भूमि पर प्रजातंत्र की आधारशिला रखनेवाले प्रथम प्रतापी पुरुष के रूप में स्मरणीय हैं सम्राट् श्री त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव, जिन्होंने नेपाल की राजनीति को नयी दिशा दी—कहिए कि नया इतिहास दिया—नेपाल को नया संकल्प और नया साहस दिया। नेपाल को समग्र स्वरूप और एक भौगोलिक रूप दिया सम्राट् पृथ्वीनारायण शाह ने तो ऐतिहासिक स्वरूप और आकार दिया श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाह ने। इस प्रकार श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाह देव स्वयं नेपाल के इतिहास वन गए। मेरा यह

दृढ़ विश्वास है कि नेपाल की जनता कभी अपने इस महान् इतिहास-पुरुष को भूल नहीं सकती ! भूलना भी नहीं चाहिए।

महाराजाधिराज श्रीत्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव के पश्चात् महाराजाधिराज श्री महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने नेपाल की भूमि पर पंचायत-दर्शन दिया, नयी पंचायत-प्रणाली की—शासन के लिए ही नहीं, प्रत्युत् विकास के लिए, प्रशासन के साथ भागीदारी के लिए, विकेन्द्रीकरण के लिए ! निश्चय ही श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाह देव ने अपने राष्ट्र के लिए नयी चेतना-धारा को देकर अनुगृहीत किया है। नेपाल को, विश्व के राजनीतिक-मंच पर नवीनतम नक्षत्र के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी इस महान् व्यक्तित्व को ही है।

श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव नेपाल के सम्राट् के रूप में ही नहीं, नेपाल के सफल प्रशासक के रूप में ही नहीं, वरन् नेपाल के हृदयसम्राट् के रूप में भी स्मरणीय हैं। श्री ५ महेन्द्र के व्यक्तित्व के साथ जो पावन आत्मा जोवित रही है, वह है एक जीवन्त कवि की आत्मा थी, एक सचेतन साहित्यकार का हृदय ! और यही कारण है कि वहुत घने कोलाहल-भरे कुहरे के वीच भी वे जनता के हृदय को जीत सके थे।

इतिहासकार लिखकर चला जाता है लेकिन उसका इतिहास शेष रह जाता है—हमारे अध्ययन के लिए, हमारे चिन्तन के लिए सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह, श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव और श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव नेपाल के प्रतापी सम्राट् भी रहे हैं और नेपाल के सुधी इतिहासकार भी। नेपाल के लिए यह सौभाग्य का विषय है कि श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव अपने दिवंगत दार्शनिक और चिन्तक पिता श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के चरण-चिह्नों पर ही चल रहे हैं, जो यह विश्वास दिलाता है कि

नेपाल की जनता का भविष्य सही दिशा की ओर जा रहा है, एक निश्चित सफलता की दिशा की ओर !

अपने शौर्य एवं साहस-भरे संस्कार के लिए गोरखा-जाति संसार-प्रसिद्ध रही है। अपने सम्राट् के प्रति श्रद्धा-निष्ठा, अपने सम्राट् के प्रति आदर-भावना नेपाली जनता की सम्पत्ति है, जो उसे सफलता के साथ जीवित रहने की प्रेरणा देती आयी है और यह विशेषता भविष्य की घड़ियों में भी कल्याणकारी दिशा-संकेत देती रहेगी।

कल के नेपाल से आज का नेपाल वहुत भिन्न है। नेपाल की संघर्षमयी भूमि पर विकास की जो गति है, उसके अनुसार कल का नेपाल आज के नेपाल से वहुत ही भिन्न होगा। नेपाल को जो लोग आज से दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व देख चुके हैं, उनके लिए कहना कठिन होगा कि यह वही नेपाल है या कोई और !

विगत वीस वर्षों के भीतर ही नेपाल का जो क्रमिक विकास हुआ है, उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। एक शिशु प्रतिदिन वढ़ता है, प्रति घंटे वढ़ता है लेकिन कितना वढ़ता है—यह कोई देख नहीं पाता, न पिता, न माता लेकिन वह शिशु वढ़ता है, वढ़ता ही जाता है। किसी राष्ट्र के साथ भी यही स्थिति होती है। किसी छोटे या वड़े देश के लिए दो दशक की अवधि कोई वहुत लम्बी नहीं होती। जड़ता का कुहासा फट गया है और साफ-सुथरा आसमान नेपाल के सामने हैं।



बदलता परिवेश

नेपाल हमारा पड़ोसी मित्र देश है। उसका भविष्य फूले-फले, विकास की ज्योति जले, जलती रहे, जनता को सुख मिले, समृद्धि मिले, ऐसा हर भारतीय चाहता है। मेरे जानते प्रत्येक नेपाली की आत्मा के भीतर यही भावना जी रही है। शासन के दाव-पेंच शासन जानता है लेकिन किसी शत्रु-देश की भी जनता के दिलों में किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं होती—इसलिए कि आम-जनता का जीवन-स्तर समान होता है और समान विचार-धारा उसके हृदय में प्रवाहित होती रहती है।

नेपाल के निवासी भारत के निवासियों से भिन्न नहीं हैं लेकिन एक वदलाव आने लगा है नेपाल के नगरों में। संसार वदल गया, देश वदले, तो क्या वदले मगर वह वदलाव क्या, जव हमारा संस्कार ही वदल जाय, संस्कृति ही वदल जाय! यह वात नेपाल के साथ ही पूरी तरह से भारत के साथ भी लागू है।

शरीर के लिए आभूषण आवश्यक है और आवरण अत्यन्त अनिवार्य, मगर प्रत्येक सभ्य और सुसस्कृत देश के लिए उसके परिधान की अपनी विशिष्ट मान्यता होती है। उदाहरण के लिए रक्सौल (भारत) के समीपवर्ती नगर वीरगंज (नेपाल) को लीजिए। वीरगंज का रंग भी वदल रहा है, कहिए कि वदल गया है। कुछ नेपाली तो अपनी मौलिक पोशाक भी भूल गए हैं। अजीव किस्म की पतलून और वुश-शर्ट या टी-शर्ट पहनकर निकलने का प्रचलन इस नगर को वीमार किए जा रहा है। यह वात केवल युवकों को लेकर ही नहीं कही जा रही है, युवतियों में भी विलकुल यही परिधान प्रचलित होने लगा है। कितनी शानदार पोशाक थी नेपाल की—चूड़ीदार पायजामा (सुरवाल), कुर्त्ता (मिरजईनुमा चौवन्द) और

माथे पर विशेष प्रकार की गोल टोपी ! अपने साथ-साथ अपनी संस्कृति लिए, अपना पुरातन इतिहास लिए किसी को भी आकर्षित-प्रभावित करनेवाली सादगी का स्वरूप, पौरुष का प्रतीक ! इसीलिए कहा कि अव वीरगंज वदला-वदला-सा लगता है !

कर्म तथा कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा नेपाली परिवार की अपनी विशेषता और विशिष्टता रही है, पर कभी-कभी किसी महिला को देखकर आदमी विस्मित हो जाता है और वरवस यह प्रश्न मन में उभर आता है कि क्या इस तेज लहर को रोका जा सकता है ? लेकिन जाने दीजिए—नजरें वदल गयी हैं तो अव देखने को नजारे भी वदल गए हैं !

आप तनिक उस युग की कल्पना कीजिए, जव खुले-आम सौ-सौ फड़ (मंच) जुआ के वैठते थे। एक साथ कई हजार लोग जुआ की वाजी खेलते थे। दीवाली के समय जुए का यह दौर कई-कई दिनों तक अनवरत चला करता था। कौड़ी भाँजी (खेली) जाती थी। छक्का-पंजा का शोर एक साथ चारों ओर से उठता था—"मारा ! वह मारा !! यह दाँव हमारा है ! यह आया ! वह आया !" इस शोर के साथ बहुत-से लोग विगड़ते और वनते थे। कहीं-कहीं तो यह वाजी 'हजार' क्या 'हजारों' की लगती थी और तव कहीं दीपावली का त्यौहार मनाया जाता था। इसमें कितने ही 'अर्जुन' अपनी 'द्रौपदी' तक को दाँव पर हार जाते थे, जैसा कि सुना है। आज वह वाजी मात हो गयी है, शायद जुए पर हुकूमत की ओर से पावन्दी लगा दी गई है। यह प्रतिवन्ध स्वागत के योग्य है, प्रशंसा के योग्य भी, लेकिन यह जुआ किसी-न-किसी रूप में आज भी जीवित है, 'कैसिनो' या 'फ्लश' के रूप में !

वीरगंज के वाजार में विदेशी सामानों की चकाचौंध देखी जा सकती है। उनकी लम्वी सूची को प्रस्तुत करना मेरे लिए संभव नहीं है

लेकिन यह कहना सर्वथा उचित है कि ये विदेशी सामान प्रतिदिन नेपाल के माध्यम से भारत आ रहे हैं। इन विदेशी सामग्रियों को लेकर ही लोगों का आकर्षंग वीरगंज के प्रति है लेकिन धीरे-धीरे यह आकर्षण कम होने लगा है।

वीरगंज में कई देशों के लोग देखे जा सकते हैं। सोवियत रूस के सहयोग से वीरगंज चीनी-कारखाना बना है। कई रसियन टेक्निशियन यहाँ काम करते रहे हैं, शायद आज भी काम करते हैं। आप किसी भी रसियन को कारखाने की गाड़ी पर घूमते हुए नहीं पा सकते—कारखाने की कार्य-अवधि के बाद! वे अपने निजी कार्य पैदल या सायकिल से ही सम्पन्न करते हैं। यह है संस्कार, जो सोवियत-रूस के विकास का मूल आधार भी है।

इस क्रम में एक असाधारण कोटि की साधारण घटना हमारे सामने है। एक रसियन वीरगंज की किसी दूकान पर सिगरेट खरीदने आया। उसे मनचाही सिगरेट नहीं मिल सकी तो दूकानदार ने उसे चीनी सिगरेट दिखलायी, लेकिन डब्बा देखते ही वह रसियन नाक-भौं सिकोड़ने लगा। तभी उसकी नजर एक भारतीय सिगरेट की ओर गयी, झट उसने इशारा किया। रसियन ने भारतीय सिगरेट खरीदी लेकिन चीनी सिगरेट लेने से इन्कार कर दिया। सोवियत रूस और चीन साम्यवादी विचारधारा के देश हैं लेकिन उनके विचार और सिद्धान्त अलग-अलग हैं। सिगरेट वाली यह घटना बहुत ही छोटी है, लेकिन बहुत बड़ी और व्यापक भी है। इसका अर्थ यह है कि रसियन नैतिक रूप से अत्यन्त ही स्पष्ट हैं। यह साधारण-सी घटना बहुत कुछ सोचने के लिए विवश करती है।

यह नगर अपनी औद्योगिक प्रगति के लिए सतत प्रयत्नशील है और सफलतायें उसके समीप आ रही हैं—जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न दिशाओं में! चीनी, दियासलाई, सिगरेट, साबुन, बिस्कुट,

कत्था, कृषि-औजार के कई बड़े कारखाने इस नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। इन फलते-फूलते उद्योगों ने हजारों हाथों को काम दिया है, रोजी-रोटी दी है।

इस नगर में कई बड़े होटल भी संचालित हैं। ये आवासीय होटल उद्योग का स्वरूप लिए हमारे सामने हैं। इन होटलों में सारी सुविधायें सुलभ हैं—पर्यटकों के लिए ! सुना है, इन होटलों की स्थिति भी दयनीय होती जा रही है।

वीरगंज के आदर्शनगर से सम्पूर्ण नेपाल के लिए आरामदेह बसें खुला करती हैं। परिवहन की यह व्यवस्था नेपाल के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुई है। वीरगंज से आप नेपाल के प्रायः सभी प्रमुख स्थानों को सुविधा के साथ जा सकते हैं।

शिक्षा और सामाजिक उन्नयन के क्षेत्र में इस नगर ने सम्यक् विकास किया है। कई प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय इस नगर की शिक्षा के विकास में लगे हैं। ठाकुर राम कैम्पस ऊँची शिक्षा के लिए स्थापित है। इस कैम्पस का आधुनिकतम पुस्तकालय हमारे-आपके लिए दर्शनीय स्थान है।



सांस्कृतिक संगम

नेपाल अपने प्राकृतिक सौन्दर्य एवं नैतिक शौर्य के साथ-साथ अगणित धार्मिक-ऐतिहासिक स्थलों से शोभायमान एक सुरभ्य पर्वतीय-प्रदेश होने के कारण संसार के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। यह हमारी संस्कृति की पुण्यभूमि है। इस पर्वतीय रमणीय भूमि-खंड का सौन्दर्य किसी को भी अपनी ओर आकर्षित करता रहा है।

नेपाल के पौराणिक साहित्य के अध्येता श्री दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ के अनुसार—"नेपाल शैव धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में स्थापित है। 'नेपाल माहात्म्य' तथा 'हिमवंत-खंड' जैसे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार नेपाल में यह धर्म सत्ययुग के पहले भी प्रचलित था। नेपाल की सबसे प्राचीन जन-जाति 'किरात' की वंशावली में भी शिव का कुलदेवता के रूप में वर्णन किया गया है।

डॉ० यदुवंशी के अनुसार—"ऋग्वेद और अथर्ववेद की सूक्तियों की रचना के बाद तथा यजुर्वेद की सूक्तियों की रचना के पूर्वकाल में किसी समय रुद्र किसी आर्येतर देवता के साथ आत्मसात् हुए थे। इस नवीन देवता की पूजा हिमालय की उपत्यका में रहनेवाले लोग करते थे। आज भी 'पशुपतिनाथ-मंदिर' के आस-पास 'किरातेश्वर' महादेव का स्वरूप विराजमान है। महाभारत-काल में किरातेश्वर की कृपा अर्जुन पर हुई थी और अर्जुन को पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था।

पाँचवी शताब्दी के आस-पास नेपाल में लिच्छवी सम्राटों द्वारा शिव को अपना आराध्य देवता स्वीकार किए जाने का इतिहास स्पष्टतया शिलालेखों में अंकित है। इतिहास कहता है कि लिच्छवी मूल-रूप से वैष्णव थे लेकिन शैव मतवालों पर राज्य करने की अभि-

लाषाओं के कारण उन्होंने शैवमत स्वीकार कर लिया। लिच्छवियों के प्रतापी राजा मानदेव के समय राज-परिवार का मुख्य धर्म 'शैव' हो गया।

नेपाल के महान् राजा अंशु वर्मा के समय से शिलालेखों में शीर्ष पर 'वृषभ' की आकृति रेखांकित करने का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। अंशु वर्मा के पश्चात् शुकदेव तथा विष्णुदेव के साथ ही जयदेव द्वितीय ने भी रेखांकन की इस परम्परा को जीवित रखा। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि जयदेव द्वितीय ने पशुपतिनाथ को 'रजत-कमल' अर्पित किया था।

शिव और बुद्ध के सामंजस्यकर्त्ता सर्वप्रथम प्रतापी राजा अंशु वर्मा ही हुए। नेपाली संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान् प्रो० ईश्वर बराल के अनुसार—"नेपाल मुख्यतः हिन्दू राज्य है। विभिन्न समय में यहाँ बौद्ध राजा भी हुए परन्तु मूलतः नेपाली समाज की जड़ हिन्दू संस्कृति में ही समाहित है। अतः नेपाली संस्कृति को हम वैदिक संस्कृति के आधार पर ही आँक सकते हैं।"

नेपाल के बौद्ध राजा एक ही साथ पशुपति के आराधक, शक्ति के उपासक तथा विष्णु के सेवक होते आए हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि हिन्दुओं ने कभी भी बौद्ध धर्म को त्याज्य या अग्राह्य नहीं स्वीकार किया। कहने का तात्पर्य यह कि नेपाल आदिकाल से ही सर्वधर्म-समन्वय की भूमि रहा है। यह प्राचीन संस्कार आज भी जीवित है। नेपाल के परम प्रतापी और अग्रगो सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह ने विभिन्न जाति के सैनिकों को एक ही पंक्ति में बिठाकर या बैठकर भोजन करने से जातिच्युत न होने की घोषणा की थी। चर्चा है कि यह घोषणा काठमांडू के मंदिरों से अस्पृश्यता-निवारण के लिए ही की गयी थी। नेपाल के विभिन्न मंदिरों तथा मठों में अन्त्यज अथवा शूद्र जाति के भी पुजारी होते हैं। यह भी सही है

कि सभी जाति के लोग उस पुजारी के हाथों से प्रसाद स्वीकार करते हैं। नेपाल की आत्मा में अनुप्राणित वैदिक संस्कृति ही है।

भारत और नेपाल की संस्कृतियों को लेकर प्रो० ईश्वर वराल ने लिखा है—"वड़े-वड़े ऋषियों ने जिस प्रकार "दुर्लभं भारते जन्म' का उच्चारण कर गौरव का अनुभव किया था, उसी प्रकार नेपाली साहित्य के आदिकवि भानुभक्त आचार्य ने—'वड़ो दुर्लभ जान्नू भारत भूमि को जन्म जन ले' कहकर भारत तथा नेपाल को एक स्नेह-सूत्र से आवद्ध कर दिया है, जो आज भी समस्त नेपाली समाज के मानस-पटल पर अंकित है।"

नेपाल की धर्मभीरु भूमि पर धर्म को सदा ही राजनीति से अलग रखा गया है इसलिए कि नेपाली सभ्यता ही समन्वयवादी रही है। आर्य, अनार्य, मंगोल आदि आदिकाल से ही एक साथ रहते आए हैं। धर्म के नाम पर किसी प्रकार का षड्यंत्र नेपाल की सभ्यता ने सहन नहीं किया। धर्म के नाम पर जव ईसाई पादरी राजनीतिक कुचक्र की संरचना करने लगे तो प्रतापी सम्राट् श्री पृथ्वीनारायण शाह ने काठमांडू उपत्यका से पादरियों को शीघ्र ही निकाल-वाहर कर दिया।

किन्तु आजकल ईसाई-प्रचार का मुख्य केन्द्र काठमांडू वना हुआ है। आज किसी भी ईसाई पादरी को आजादी से प्रचार करने के लिए छूट मिली हुई है। उनके प्रचार के कई प्रकार के साधन हैं, जैसे स्कूल तथा विद्यालय द्वारा मिशन का प्रचार होता है।

नेपाल के प्राचीनतम इतिहास की ओर जाना मेरा लक्ष्य नहीं है लेकिन प्रसंगवश यह निवेदित किया जा रहा है कि नेपाल का पूर्वांचल जगज्जननी सीता की जन्मभूमि रहा है तो पश्चिमांचल महात्मा बुद्ध का जन्मस्थान होने का गौरव लिए हमारे समक्ष विद्यमान है।



आर्य-संस्कृति कैसे आई ?

भारत और नेपाल की संस्कृति एक है, संस्कार एक है। एकता की यह संस्कृति आर्य-संस्कृति है। आर्य संस्कृति इस भूमि पर कैसे आयी, आर्य इस भूमि पर कैसे पधारे, हमारे प्राचीन ग्रंथों में इसका यत्र-तत्र किंचित् उल्लेख मिलता है। उत्तर-पश्चिम से आयी आर्य-संस्कृति की आदि कथा 'शतपथ ब्राह्मण' में समासतः इस प्रकार आयी है। यह आर्ष कथा संकेत करती है कि आर्य यहाँ कैसे आए ? आ जाने के बाद आर्य यहाँ कहाँ बसे ?

कथा संक्षेप में इस प्रकार है—'आर्य सभ्यता तथा संस्कृति के प्रचारक राजा विदेघमाधव ने अपनी प्राचीन परम्पराओं को भंग कर दिया। यह भूमि पहले कृषि-योग्य नहीं थी। सम्पूर्ण भूमि दलदल से भरी हुई थी। अभी तक इस भूमि पर अग्नि का आगमन नहीं हो सका था। यही सोचकर कि अभी तक अग्नि द्वारा इस भूमि का दहन नहीं हुआ है, प्राचीनकाल के ब्राह्मण भी सदानीरा को पारकर पूर्व की ओर आते नहीं थे। सुदूर पश्चिमोत्तर प्रदेश की पाँचों नदियों के बीच रहते हुए राजा विदेघमाधव ने यह बन्धन तोड़ दिया।

राजा विदेघमाधव ने अग्नि-वैश्वानर को अपने मुख के भीतर रख लिया और सुदूर पश्चिमोत्तर प्रदेश से निकल पड़े। गौतम, राहूगण आदि ऋषि उनके पुरोहित थे। राजा विदेघमाधव ने मौन धारण कर लिया था। वे बोलते न थे। मौन धारण किए वे अपने पथ पर अग्रसर होते रहे। गौतम, राहू आदि ने बार-बार पुकारा लेकिन वे एक शब्द भी बोल न सके। विदेघमाधव को आशंका थी कि मुख खोलने से अग्नि-वैश्वानर कहीं बाहर न निकल पड़ें। गौतम एवं राहूगण ने वेद-मंत्रों का उच्चारण किया लेकिन राजा

विदेघमाधव ने कोई उत्तर न दिया। पुरोहित-गण विवश होकर अग्निदेवता की वन्दना करने लगे। अग्नि-वन्दना के वाद भी राजा विदेघमाधव का मौन-व्रत भंग न हुआ, लेकिन वेद-मंत्रों का पाठ अनवरत चलता रहा। अग्नि-वन्दना के क्रम में अचानक 'घृत' शब्द का उच्चारण हुआ। 'घृत' शब्द का उच्चारण होते ही अग्नि-वैश्वानर राजा विदेघमाधव के मुख के भीतर ही प्रज्वलित हो उठे। तेज लपटें उठीं। राजा अग्नि को धारण न कर सके। अग्निदेव राजा विदेघमाधव के मुख से निकलकर धरती पर अवतरित हुए। विदेघमाधव उस समय सरस्वती नदी के तट पर थे।

अग्नि-वैश्वानर पृथ्वी का दहन करते हुए पूर्व दिशा की हिमवंत भूमि की ओर वढ़ते चले गए। गौतम, राहूगण तथा राजा विदेघमाधव ने अग्नि-वैश्वानर का अनुसरण किया। अग्नि-वैश्वानर ने सामने मिली सभी नदियों का दहन कर दिया, लेकिन सदानीरा का दहन वे न कर सके। उल्लेखनीय है कि 'सदानीरा' को ही 'गंडक शालिग्रामी' कहा जाता है। नेपाल के लोग इसे 'सप्तगंडकी' कहते हैं। वौद्ध साहित्य में 'सदानीरा' को ही 'हिरण्यवती' कहा गया है।

हाँ, तो सदानीरा के तट पर आकर राजा विदेघमाधव ने प्रश्न किया—'मेरा वास-स्थान कहाँ है ?' अग्नि-वैश्वानर ने उत्तराभिमुख होकर अपना दाहिना हाथ पूर्व दिशा की ओर उठाया और कहा—'इस नदी के पूर्व आपका वास-स्थान हो !' तव गौतम, राहूगण आदि ने राजा विदेघमाधव से प्रश्न किया—"जव हमलोगों ने आपको पुकारा तो आप मौन धारण किए रह गए, आप कुछ वोल न सके। विदेघमाधव ने उत्तर दिया—"मेरे मुख के भीतर अग्नि-वैश्वानर थे, कुछ भी वोलते समय मेरा मुख खुलता और वे वाहर आ जाते। इसलिए ही मैंने मौन धारण कर रक्खा था। वेद-पाठ के क्रम में वेद-मंत्रों के उच्चारण के समय जव 'घृत' शब्द उच्चरित हुआ तो अग्नि-वैश्वानर मेरे मुख से वाहर निकल पड़े।"

यह कोई कहानी नहीं, अपितु सप्तसिन्धु-प्रदेश से आर्य-जाति के पश्चिमोत्तर से पूर्व की ओर गौरवमय अभियान का इतिहास है। राजा विदेघमाधव ने सदानीरा या सप्तगंडकी को पार किया। इस प्रकार राजा विदेघमाधव ने इस भू-भाग पर आर्य-सभ्यता का प्रचार-प्रसार किया। राजा विदेघमाधव के वाद वहुत-से ब्राह्मण सदानीरा के तट पर आए और उसे पार किया। वे इसके पूर्व भाग की ओर आए। फिर वड़े-वड़े यज्ञ आदि हुए, अग्नि प्रज्वलित हुई। यह भूमि कृषि-योग्य हुई। इस भू-भाग पर तव अनार्य वास करते थे। राजा विदेघमाधव को अनार्यों के साथ संघर्ष करना पड़ा, लेकिन इस संघर्ष में अनार्य पराजित हुए।

राजा विदेघमाधव ने आर्य-राज्य की स्थापना की। आर्य-अनार्य की संग्राम-भूमि भी यहीं कहीं है। इस प्रकार इस भूमि पर आर्य वस गए, लेकिन इस भू-भाग की जलवायु आर्यों के लिए अनुकूल सिद्ध न हुई। आर्यों की जनसंख्या धीरे-धीरे कम होने लगी। आर्य अस्वस्थ रहने लगे। तव राजा विदेघमाधव को भी कई प्रकार की चिन्ताएँ होने लगीं।

राजा विदेघमाधव ने वहुत सोच-विचारकर एक उच्च स्थान पर अपनी राजधानी वनायी। वह स्थान है—जनकपुर। इस प्रकार राजा विदेघमाधव ने विदेह जनपद की स्थापना की। सदानीरा यानी सप्तगंडकी की धारा ही कोसल और विदेह जनपद की सीमा-रेखा स्वीकार की गई। वही जनकपुर, जिसकी पावन मिट्टी से जगज्जननी सीता का जन्म हुआ। रामायण-काल के अगणित अवशेष जनकपुर के आस-पास अवस्थित हैं। यह विदेहपुरी वेदों और उपनिषदों के अनुसार विवेकियों और ज्ञानियों की भूमि रही है।



हिमालय हमारी संस्कृति है !

हिमालय हमारी संस्कृति का पिता है और हम हिमालय की सन्तान हैं। हमारा उत्तरदायित्व भी महान् है—हिमालय के समान ही महान् ! हिमालय दुनिया की सबसे ऊँची वर्फाच्छादित चोटियों का ही नाम नहीं है, वह हमारी संस्कृति का पर्यायवाची भी है। वह हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रतीक भी है और साथ ही हमारी सांस्कृतिक सम्बद्धता का आधार भी ! पूरब से पश्चिम तक विराजमान उन्नतभाल हिमालय न केवल हमारा सजग प्रहरी रहा है बल्कि उसने हमारे सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित भी किया है।

भारत और नेपाल के बीच जो सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं, जो आत्मिक सम्बन्ध हैं, उसके प्रामाणिक आधार का सजग और अमिट साक्षी हिमालय ही है। नेपाल की आत्मा के रूप में वेदों की ही संस्कृति है। 'हिमशैल-मण्डित, सुहिन्दुताश्रित अधिदेवता-पशुपति-प्रसादित' आदि राष्ट्र-गीत एवं वैदिक साहित्य में वर्णित चन्द्र-सूर्यांकित परमपवित्र भगवा-ध्वज ही नेपाल का राष्ट्रीय-ध्वज है। नेपाल में आज भी इन्द्र और रुद्र का पूजन-वन्दन होता है।

भारत और नेपाल युग-युग से समान सभ्यता, समान संस्कृति और समान धर्म के अनुचर एवं अनुयायी रहे हैं। हिमालय को तपोभूमि की संज्ञा से आदर देते हुए स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने कहा था—"जिन आर्यवीरों ने हिमालय की प्रशंसा से सहस्रों ग्रन्थ बना डाले, वे प्रभु की रचना-शक्ति के रहस्य से अवश्य कुछ-न-कुछ परिचित थे। प्रभात के सूर्य की रश्मियाँ जिस समय इसके हिमावृत शिखरों पर पड़ती हैं, उस समय की अलौकिक छटा को क्या कोई लेखनी से चित्रित कर सकता है ? उस निर्दोष चित्रकार के कौशल के लावण्य का वर्णन करने की शक्ति मनुष्य में कहाँ ? यहाँ तो—

'न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा' वाली वात होती है। उन आर्यों को सुन्दरता की वास्तविक परख थी, जिन्होंने इन स्थानों पर आकर अपने परम पुनीत मंदिरों की स्थापना की थी और अपनी भावी सन्ततियों को इधर की याता का माहात्म्य वतलाया था। गर्दन तक विषय-वासनाओं के कीच में डूवा हुआ भी व्यक्ति इस भूमि-खण्ड पर आकर ईश्वरीय अलौकिक शक्ति का गुण-गान किए विना नहीं रहेगा। प्राचीन ऋषियों ने जो इधर की भूमि को तपोभूमि कहा है, वह सर्वथा सत्य है।"

नेपाल की भूमि पर यह सत्य आज भी जीवित है। इस सत्य को आज भी स्वीकार किया जाता है। यह वात और है कि धीरे-धीरे इसकी चेतना-धारा परिवर्तित होने लगी है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि नेपाल अपने धर्म-पथ से हटने लगा है। यह देखा जा रहा है कि नेपाल में नयी सभ्यता की लहर छाने लगी है। नयी सभ्यता की नयी लहर से भारत भी तो वंचित नहीं है।

'नेपाल' शब्द के उच्चारण-मात्र से एक आध्यात्मिक भाव का वोध होता है और हिमालय शब्दोच्चार से एक सांस्कृतिक वातावरण की साकार कल्पना सामने आ जाती है। महाकवि कालिदास ने हिमालय को नगाधिराज, (हिमालयो नाम नगाधिराजः) कहा है। यह भी निर्विवाद सत्य है कि हिमालय देवतात्मा भी है। मेरी दृष्टि में हिमालय उस शक्ति का प्रतीक है, जो इस देश की संस्कृति और सभ्यता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा करती आयी है।

हिमालय को भारत और नेपाल की संस्कृतियों से कभी अलग नहीं किया जा सकता! संसार में ऐसा कौन जन-समुदाय है, जिसने किसी महापर्वत के साथ इतनी गहरी आत्मीयता का सम्वन्ध स्थापित किया हो? इतनी सघन आत्मीयता कि उसके अभाव में जीवन को जीना ही दुर्वह हो जाये! कौन है ऐसा राष्ट्र या देश, जिसकी

सम्पूर्ण संस्कृति ही 'हिमालय' को 'देवतात्मा' शब्द से सम्वोधित और समादृत करती हो ? सुदूर दक्षिण में कन्याकुमारी में वैठकर माता पार्वती ने जिन देवाधिदेव शंकर को प्राप्त करने के लिए कठिन साधना की, तपस्या की, वह पावन भूमि ही हमारे संस्कारों की जननी है। हिमालय को अपने से अलग कर हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते !

हिमालय महती सभ्यता का प्रतीक है, उस सभ्यता का, जो अपने आदर्शों पर आज तक जीवित है। हिमालय उन सभी पावन आदर्शों का सजग साक्षी है। तर्कशिरोमणि श्री श्रुतिलाल शर्मा के अनुसार—"हमारी संस्कृति के स्रोत तथा उसकी विशालता के प्रतिष्ठापक, हमारे पूर्वपुरुष-आर्यों की जन्मभूमि और क्रीड़ा-स्थली हिमालय की गोद ही रही है। सर्वप्रथम यहीं पर हमारी सांस्कृतिक रूपरेखा वनी थी, जो वाद में समस्त विश्व में फैल गयी। इसी कारण आर्यों के ग्रन्थों में हिमालय पर्वत की वड़ी प्रतिष्ठा है। अतः हिमालय न केवल आर्यों का आदिम स्थान है वरन् भारतीय संस्कृति का आदिम स्रोत भी वही है।"

भारत-नेपाल की सीमा-भूमि पर वसे होने के कारण नेपाल सदा ही हमारे लोचनों में रहता है। हिमालय के दुर्गम और ऊँचे शिखरों का दूर से दर्शन हमारी दिनचर्या वन गयी है। हिमालय स्वयं महानता के प्रतीक के रूप में हमारे लिए एक अविस्मरणीय सन्दर्भ वन गया है।



नमस्कार उन पर्वत-शिखरों को !

'नेपाल' का अभिधान ही पर्वत-शृंखलाओं से गुँथे प्रदेश का पर्यायवाची हो गया है। नेपाल के साथ ही नहीं; भारत के साथ भी हिमालय का आत्मिक-आध्यात्मिक सम्वन्ध स्थापित है। कारण उत्तर-स्थित ऊँची-ऊँची गिरि-चोटियों का ही नाम हिमालय नहीं है, हिमालय हमारी सांस्कृतिक चेतना का भी नाम है। इसे इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'हिमालय' शब्द के उच्चारण मात्र से ही इसके साये में पलनेवाले भू-भागों के महान् गौरव और अजेय संकल्प का वोध होने लगता है।

हमारे पुराण-शास्त्रों के प्रणेता महर्षि वेदव्यास ने कहा है—"कुमारी अंचल चरण है, उज्जैन नाभि है, बंगदेश स्कन्ध है, नेपाल ललाट है और गौरीशंकर शिखा (चोटी) है।" 'गरुड़पुराण' के अनुसार "पृथ्वी-तल के उज्ज्वल तेजोमय शरीर से शरीर में मुख्य भाग, सर्वप्रथम चारों ओर चतुर्मुख नेपाल की उत्पत्ति हुई।"

संस्कृत वाङ्मय के अनुसार, "नेपाल-स्थित जिस सर्वोच्च पर्वत-शिखर पर देवाधिदेव शंकर को पाने के लिए गौरी (पार्वती) ने तप किया, तपस्या-स्थल की; वह चोटी 'गौरी' नाम से विख्यात है। लोकमाता पार्वती (गौरी) उसी उच्च शैल-शिखर से समुद्र-पर्यन्त भारतवर्ष की रक्षा के लिए तत्पर हो गयी हैं। यह स्पष्ट है कि गौरी पर्वत की दो चोटियाँ हिमाच्छादित स्वर्णाभ सुषमा से सुशोभित हैं। 'गौरी' शिखर के समीप ही, कुछ ही दूरी पर 'शंकर' पर्वत भी है। इस प्रकार 'गौरी' और 'शंकर' को मिलाकर 'गौरी-शंकर' हुआ है।

हिमालय की चोटियों में गौरीशंकर से भी ऊँची चोटियाँ हैं लेकिन गौरीशंकर से हमारा आत्मिक लगाव-सा है। हमारे आर्य-ग्रन्थों में हिमालय की चोटियों को विशिष्ट गौरव-महिमा प्राप्त है।

इतिहास आगे बढ़ता है काल की गति के अनुसार ! इतिहास करवटें लेता है समय के उत्थान-पतन के साथ ही नहीं, वरन् घटना-चक्रों के साथ-साथ ! नेपाली संस्कारों से सम्पन्न लिच्छवि-जाति के शाक्य-वंश ने भगवान् बुद्ध को जन्म दिया । स्मरणीय है कि भगवान् बुद्ध ने अपने ज्ञान से सारे संसार को आलोकित किया । इसी कुल का कहिए या इसी संस्कृति के पुरोधा भगवान् महावीर ने विश्व-समाज को धैर्य, क्षमा, सत्य, विद्या, बुद्धि, दया और शांति का जीवन्त सन्देश दिया ।

राजा कनिष्क के साथ नेपाल का घनिष्ठतम सम्वन्ध रहा है। प्रमाण के लिए आज भी कनिष्क द्वारा संचालित शक-सम्वत् नेपाली जन-जीवन से ही नहीं, इसके प्रशासन के साथ भी सम्वद्ध है। किंवदन्ती है कि महाराज विक्रमादित्य भी नेपाल गए थे । जगद्गुरु शंकराचार्य ने नेपाल की भूमि पर हिन्दू-धर्म की जय-ध्वजा फहराकर एक सांस्कृतिक आधारशिला का न्यास किया था ।

ऐतिहासिक सन्दर्भों के अनुसार वाराणसी (काशी) का एक प्रसिद्ध पंडित शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से छठी शती में वौद्ध क्षपणक मंजुश्री के सान्निध्य में आया था । यह इस बात का प्रमाण है कि उस काल में नेपाल शिक्षा के क्षेत्र में विकास के चरमशिखर पर था ।

आज भी नेपाल की भूमि पर वे प्राचीन ऐतिहासिक अवशेष विहार, चैत्य, मठ, अशोक-स्तम्भ तथा विशालकाय भवन नेपाल के गौरवमय अतीत का स्मरण कराते हैं । पाटन के वौद्ध विहार को यदि कंठ होता, तो वह अतीत की ऐतिहासिक दृश्यावली का सजीव विवरण प्रस्तुत कर देता है । समय विराम नहीं लेता, वह निरन्तर चलता रहता है । समय की गति और क्रम के परिणामस्वरूप भूगोल

का जन्म होता है और इतिहास अपना स्वरूप ग्रहण करता है। नेपाल के साथ भी यही बात घटित होती है।

उदयपुर से शाहवंश के नेपाल-आगमन के बहुत पहले नेपाल अवनति की चोटी पर था। विभाजित भूमिखण्ड, विभाजित शक्तियाँ, विभाजित राज्य, चारों ओर घोर विलासिता का साम्राज्य; लेकिन प्रांजल पौरुष के प्रतीक श्री ५ पृथ्वीनारायण शाह ने अपने पराक्रम से समस्त नेपाल को एक भौगोलिक स्वरूप दिया। नेपाल के अभ्युदय का आरम्भ यहीं से होता है।

शाह-वंश के साथ-साथ कई प्रथायें नेपाल की भूमि पर आयीं। हिन्दी-उर्दू तथा नेपाली की अन्य मिश्रित भाषाओं और बोलियों के सम्मिश्रण से 'खसकुरा' का शुभारम्भ हुआ। 'खसकुरा' को राजकीय अनुग्रह प्राप्त हुआ और संस्कृत जैसी देवभाषा ने सांस्कृतिक अभिव्यंजना देकर इसे प्राणवान किया। आज की नेपाली भाषा इसी 'खसकुरा' का राष्ट्रीय स्वरूप है, जिसे नेपाल की राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है।

शाह-वंश के साथ हिन्दू संस्कृति ही नहीं, इस्लामी संस्कार भी आया। तब भारत पर मुगलों का शासन था। यही कारण है कि नेपाल अपने को इस प्रभाव से विलग न रख सका। नेपाल के सामन्त वर्ग ही नहीं, संभ्रात धनी वर्ग भी इस्लामी प्रथाओं और प्रचलनों से प्रभावित हुए। यह प्रभाव कम या अधिक, नेपाल में आज भी बना हुआ है।



राणाशाही सत्ता में

नेपाल का जो स्वरूप देखा जा रहा है—वह स्वरूप चाहे प्रशासन का हो या जन-जीवन का, शिक्षा का हो या उद्योग-व्यवसाय का, वह नया और समग्र रूप है। नेपाल को लेकर कुछ भी लिखते समय या लिखने से पूर्व इतिहास के नाम पर नेपाल के राणाओं के निरंकुश और कठोरतम शासन की चर्चा अनिवार्य है।

नेपाल राणाओं के अधीन कव गया, कैसे गया, यह मेरी विषय-भूमि नहीं है, लेकिन जव तक राणाओं के हाथ में नेपाल का शासन-सूत्र रहा, नित घटित होनेवाली नयी-नयी घटनाओं ने दंतकथाओं का रूप लेकर लोक-जीवन को आतंकित किया, आशंकित भी किया। शाह-वंश के शासन-प्रभाव का लगभग लोप करके राणाओं ने नेपाल की भूमि पर निरंकुशता का खेल खुलकर खेला। उनके निरंकुश आचरणों की कहानियाँ किंवदन्तियों का रूप धारण कर आज भी नेपाल के जन-जीवन में जी रही हैं। नेपाल के वड़े बूढ़े-बुजुर्ग लोग आज भी ये कहानियाँ सुनाते हैं तो रोमांच हो आता है।

सुना जाता है कि राणाओं के महल के भीतर रानियों के अति-रिक्त सैकड़ों रखैलें भी भरी पड़ी रहती थीं। आचरणहीनता का ही नहीं, कुत्सित व्यभिचार का भी नग्न रूप इनके महलों के हरमों में देखा जा सकता था। इन्हें उस समय 'क्वेटिन' कहा जाता था। 'क्वेटिन' धर्मपत्नी के वाद वनायी जानेवाली उपपत्नियों या रखैलों को कहा जाता था। अनैतिक और तिरस्कृत जीवन से ऊवकर एवं कभी-कभी हार-थककर ये रखैलें एक नया अपमानमय जीवन जीने को विवश होती थीं। वे पंजाव की मंडियों में या फिर जिस्म-फरोशी के हाटों में वेच दी जाती थीं। आम जन की अशिक्षा और सादगी का अनुचित लाभ उठाकर अथवा उन्हें पद-लोभ या धन का लालच देकर राणाओं द्वारा नेपाल की जनता के नारी-समाज के

सतीत्व और कभी-कभी कौमार्य पर भी सीधा आक्रमण किया जाता था। आतंकित बेवस लाचार लोग यह दृश्य देखते रह जाते थे।

सत्य यह भी है कि नेपाल की जनता ने इसे सहन किया लेकिन किस प्रकार वर्दाश्त किया, यह एक अलग प्रसंग है, जिसका सम्वन्ध नेपाल के उन चाटुकारों से है, जिन लोगों ने राणाओं की चाकरी वजायी और चाँदी के चन्द टुकड़ों पर अपने-आप को ही नहीं, नेपाल की संस्कृति, नेपाल के जीवित संस्कारों को भी नीलाम कर दिया।

नेपाल का समाज इस प्रकार पतन की ओर वढ़ता गया। इन क्रूर और निर्गमहृदय राणाओं ने नेपाल में न तो शिक्षा की रौशनी आने दी, और न सभ्यता की ही। सारे नेपाल को संसार से विल्कुल अलग-थलग रखने का प्रयास किया। यह सर्वविदित है कि एक समय राणाओं की आज्ञा के बिना नेपाल में एक पत्ता भी नहीं डोलता था।

अनीति और अनैतिकता के इस घृणित-कुत्सित अध्याय का श्रीगणेश राणा जंगवहादुर ने किया था। राणा जंगवहादुर की नीतियों ने नेपाल की जनता के रक्त का शोषण ही नहीं किया, वरन् नेपाल को नीचे धकेलकर सदा अन्धकार के भीतर रखने का प्रयास भी किया और इसमें वह सफल भी हुआ। सौन्दर्य और सुरा का अनथक रसास्वादन राणा जंगवहादुर का स्वभाव-संस्कार वन गया था। जंगवहादुर का महल भी रखैलों से भरा रहता था। चाटुकारिता और पद-लिप्सा ने ही यह सब संभव होने दिया। यह कोई अतिरंजना की बात नहीं है कि राणा जंगवहादुर तीन सौ साठ रानियों का राजा पति था। वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन ही होते हैं!

इस प्रकार एक जंगवहादुर द्वारा प्रथम और द्वितीय श्रेणी के राणाओं की जन्म दिया गया। धीरे-धीरे यह वात वढ़ी और वढ़ती ही

चली गयी। राणा जंगवहादुर के वाद की पीढ़ियों और उत्तराधिकारियों के साथ ही अगली सन्ततियों में भी इसी प्रथा का प्रचलन हुआ। उनका हरम भी नेपाल की भोली-भाली और निर्दोष कन्याओं से भरने लगा। जंगवहादुर की सन्तान 'राणा' कही जाती। देश के शासन पर ही नहीं, देश के राजस्व पर भी उनका 'जन्मना' अधिकार होता। देश-विदेश से भोग-विलास, राग-रंग की सामग्रियाँ आती ही रहतीं।

यह वात तव की है, जव सारे भारतवर्ष पर अँग्रेजों का जाल विछ गया था और ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत की भूमि पर अपने मजबूत पाँव जमा चुकी थी। भला यहाँ भी ये अँग्रेज कैसे चूकते? नेपाल के विषयी और कामान्ध राजाओं को भी अँग्रेजों ने अपने जवड़ों के भीतर कर लिया। अपने रूप का माया-जाल भी उन्होंने फैला दिया। इस प्रकार नेपाल अँग्रेजों के हाथों की कठपुतली बनकर रह गया। नेपाल का राणा-वंश अँग्रेजों की राजनीतिक ताल पर नाचने लगा। भोग-विलास को लेकर राणा लोग इतने शक्तिहीन हो गए कि अपने आधार पर खड़े रहना भी उनके लिए कठिव हो गया।

अँग्रेजों की नजर गोरखों पर थी। गोरखों के शौर्य और संस्कार से वे भलीभाँति परिचित थे। अँग्रेजों ने इस अवसर से लाभ उठाया और राणाओं को मीठी-मीठी धमकियाँ देनी शुरू कर दीं कि "यदि तुम अपना अस्तित्व नेपाल की भूमि पर जीवित रखना चाहते हो तो गोरखों को हमारी सेना में भेजो, हम इसके लिए तुम्हें मुँहमाँगी राशि देंगे!' चाँदी और सोने की चमक पर मरनेवाले राणाओं ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। अप्रामाणिक स्रोतों के अनुसार यह ज्ञात हुआ है कि राणाओं ने इसके लिए अँग्रेजों के साथ एक अनुवन्ध भी किया था। उन्होंने गोरखों की एक अलग सशक्त सेना संगठित की थी।

यह कथा यहीं समाप्त नहीं होती। कहा तो यह भी जा सकता है कि राणाओं ने अँग्रेजों की जमकर चाकरी वजायी। अँग्रेजों के चंगुल से नेपाल वच गया, इसका श्रेय नेपाल के राणाओं को नहीं है। इसका श्रेय भी उसी प्रतापी पौरुष-प्रतीक पृथ्वीनारायण शाह को जाता है, जिनकी छत्रच्छाया में समग्र नेपाल ने जन्म लिया था और सारा नेपाल एक झंडे के नीचे आया था। नेपाल की जनता राणाओं के सारे अत्याचार सहती रही लेकिन शौर्य के अंकुर भी उसके भीतर-ही-भीतर अँकुराते रहे।

काल-चक्र ने करवट ली। शाह-परिवार ने भी अब अपना अधिकार जताया। शाह-परिवार की आँखें खुलीं। राणा जंगवहादुर भयभीत होने लगे और तव व्यवस्था वदली। शाह-परिवार (मूल राजवंश) के सबसे ज्येष्ठ पुत्र को 'महाराजाधिराज' का पद तथा अन्य लोगों को दो-चार गाँवों की जमीन्दारी देने की प्रथा प्रारम्भ हुई। यह भी स्मरणीय है कि शाह और राणा-परिवार में वैवाहिक सम्वन्ध का सुभारम्भ किया गया। यह इसलिए किया गया कि शाह-परिवार उनके विरुद्ध न जा सके। राणा जंगबहादुर ने यह माया-जाल वहुत सोच-समझकर बिछाया था।

आज भी शाह-वंश की अपेक्षा राणाओं के पास अधिक सम्पत्ति विद्यमान है और शाह-वंश के लोग कहीं-कहीं अत्यन्त कठिन जिन्दगी जीने को विवश हैं। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, वह चलता रहता है और अनवरत चलता रहता है। एक दिन वैसा भी आया, जव राणा जंगवहादुर को पीढ़ी ने ही राणा जंगबहादुर के बेटे को गोलियों का निशाना वना दिया। इसका कारण यह था कि नेपाल की प्राइम मिनिस्टरी (श्री ३ सरकार का पद) एक भाई के वाद दूसरे भाई को मिला करती थी। राणा जंगबहादुर के ही किसी महत्त्वाकांक्षी भाई ने वैसा षड्यंत्र गुप्त रूप से रचाया था।

राणाओं की अन्तरंग-कथा के बीच प्रकारान्तर से यह घटना अचानक आ गयी लेकिन राणाओं के स्वभाव और संस्कार को समझने के लिए असाधारण क्षेपक भाव भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। कहने का तात्पर्य यह कि नेपाल के राणा-वंश ने नेपाल को अधःपतन के मार्ग पर लाकर छोड़ दिया था। यह समय, मेरे जानते, नेपाल की सामाजिक अवनति का था, उसके नैतिक ह्रास का था।

राणा परिवार ने कदाचारों का जो अध्याय प्रारम्भ किया था, उससे प्रशासन के अधिकारी भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके थे। यह लिखते समय रोमांच होने लगता है कि अभाव से पीड़ित जनता ने अपनी बहू-बेटियों तक को राणाओं की अंकशायिनी बनाकर अपने जीवन-यापन के लिए आधार की तलाश की। शायद आज इन घटनाओं पर कोई विश्वास नहीं करेगा, लेकिन सच्चाई यही है।

तीन सौ साठ रानियों के अकेले प्राणपति राणा जंगबहादुर के आचरण से प्रेरित-प्रभावित होकर नेपाल के तत्कालीन बड़े अधिकारियों के साथ-ही-साथ अनेक अमीर-उमरावों के घर भी नित नयी-नवेलियों से भरने लगे थे। ऐसे में जिसके घर पर जितनी ही अधिक रखैलें होती थीं, उसे उतना ही बड़ा आदमी माना जाता था। इस प्रकार एक पाशविक परम्परा पनप चली थी। इसका एक गर्हित परिणाम सामने आया कि आम जन-वर्ग के लोग भी चार से पाँच तक शादियाँ करने लगे। यह बात बाद आमफहम हो गई।

यदि कोई राणा किसी अस्पृश्य जाति की लड़की को अपने महल के भीतर रख लेता था, तो उसका पानी भी चला दिया जाता था। प्रथम विवाह से जो सन्तान होती, वह मूल राणा-सन्तान कही जाती तथा अन्य जातियों की रखैलों से जो सन्तानें पैदा होतीं, उन्हें द्वितीय, तृतीय श्रेणी का राणा कहा जाता। राणाओं के यहाँ जब ये रखैलें पहुँचतीं तो उनके भोग-विलासमय जीवन में वे दो-चार दिनों के लिए ही आकर्षण

की वस्तु होतीं, बाद को वे राणाओं की अतिथि-सेवा के लिए सुरक्षित रखी जातीं। इन रखैलों से जो दो-नम्बरी सन्तानें होतीं, उनका कोई मूल्य राणाओं के सम्मुख नहीं होता। यह परम्परा इतनी भ्रष्ट हुई कि मूल राणा की सन्तानों और रखैलों की सन्तानों के बीच भी खुलकर अवैध संबंध होने लगे। यदि मूल राणाओं की कन्या दुर्भाग्य-वश गर्भवती हो जाती, तो द्वितीय कोटि की राणा-सन्तानों को इसका भीषण दंड परिणाम भोगना पड़ता। इस प्रकार राणाओं के अन्तःपुर में गोपनीय गर्भपात की परम्परा भी शुरू हुई।

मूल राणाओं की सन्तानें द्वितीय या तृतीय कोटि के राणाओं की सन्तति ों को कभी अच्छी निगाह से नहीं देखतीं। इन दर्दनाक कहानियों से नेपाल का राणा-परिवार ओत-प्रोत रहा है। सौभाग्यवश स्वर्गीय श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव के अभ्युदय के साथ ही इस वातावरण को परिवर्त्तन की एक धारा मिल गयी।

मूल राणाओं की संततियों की शादियाँ भारत के छोटे-बड़े रज-वाड़ों में हुईं परन्तु द्वितीय-तृतीय कोटि के राणा-परिवारों की कन्याएँ अपने भाग्य पर जीने को विवश की जाती रहीं। इस घिनौने वातावरण की पृष्ठभूमि को लेकर राणाओं के अत्याचार की कथा की लम्बी शृंखला नेपाल के समाज के बीच आज भी अनुश्रुतियों में विद्यमान है।



प्राचीन परम्पराएँ, प्रथाएँ और रीति-रिवाज

नेपाल की भूमि पर राणाओं ने जिन कुरीतियों का वीजारोपण किया, वे अविस्मरणीय हैं। सम्प्रति ये प्रथायें आम जनता के वीच दन्तकथायें वन गयी हैं। नेपाल की सामाजिक व्यवस्था या वर्ण-व्यवस्था के अनुसार यह परम्परा रही है कि ब्राह्मण पूरी निष्ठा के साथ रहता था। यदि किसी अछूत के हाथों का पानी किसी ब्राह्मण ने भूल से भी पी लिया तो वह ब्राह्मण दूसरे नम्वर का ब्राह्मण कहा जाता था, उसे 'जैसी' घोषित कर दिया जाता था। यदि उसने लहसुन-प्याज खा लिया तो उसकी भी वही गति होती थी। यदि किसी ब्राह्मण की विवाहिता स्त्री अथवा विधवा ब्राह्मणी को किसी ब्राह्मण ने रख लिया तो उसकी सन्तान को भी 'जैसी' घोषित कर दी जाती थी।

यदि ब्राह्मण ने किसी क्षत्राणी को रख लिया तो वह 'भरा क्षत्री' कहा जाता था। 'भरा क्षत्री' अर्थात् पवित्र ठाकुर। यदि क्षत्री ने किसी दूसरी जाति की स्त्री को रख लिया तो उसकी सन्तान 'धरती' कही जाती थी। इस प्रकार और दूसरी जातियों से उत्पन्न सन्ततियाँ अपनी श्रेणी के अनुसार समाज में स्थान पाती चली गयीं। इस वर्ण-व्यवस्था-परम्परा ने नेपाल को वहुत अधिक दिग्भ्रमित किया।

राणाओं के शासन-काल में नेपाल को जो रूप मिला, उसका अनुमान इसी वात से लगाया जा सकता है कि उनके शासन-काल में यदि आम लोग कभी 'हैट' पहनकर निकलते थे तो इसे राणाओं का स्पष्ट अपमान समझा जाता था और हैट पहननेवाले को कठोर

दंड दिया जाता था। राणाओं के समय कोई दूसरा आदमी (मोटर-कार) रख ही नहीं सकता था।

वीरगंज के एक मित्र ने उस दिन कहा था—'नेपाल के एक भूतपूर्व मंत्री (श्री ३ सरकार) वीरगंज आए, किसी का पक्का मकान बनते देख पूछ दिया कि "यह किसका मकान बन रहा है? इस आदमी से कह दो कि इस तरह का मकान बनाने की जुरंत न करे, सादा घर बनाकर रहे!" यह नेपाल का राणा-काल था, जहाँ पक्का घर बनाना भी अपराध था और अच्छे कपड़े पहनकर चलना तो अपराध माना ही जाता था। राणाओं ने नेपाल के नैतिक चरित्र पर आक्रमण किया। इस प्रकार नेपाल को राणाओं ने ऐसे युग के द्वार पर ला खड़ा किया, जहाँ शोषण ही धर्म बन गया।

नेपाल की उसी भूमि पर राणाओं ने कठोर शासन-सूत्र का संचालन किया, जहाँ बौद्ध-काल में सम्पूर्ण नेपाल गणतंत्रवादी था। हिमालय की तलहटी में 'बाईसी' और 'चौबीसी' दून थे यानी बाईस और चौबीस छोटे-छोटे राज्य थे। इन राज्यों में कुछ को छोड़ सभी गणतंत्रीय थे। नेपाल पर बौद्ध धर्म का प्रभाव था। संघ द्वारा ही राज्य का शासन चला करता था। बौद्ध शासन के अधीन नियम-निर्देश अक्षरशः पालन किये जाते थे। प्रजा संघ के अध्यक्ष का चुनाव किया करती थी, वही अध्यक्ष 'राजा' शब्द से सम्मानित और घोषित किया जाता था। राज्य के भीतर और बाहर प्रत्येक व्यवहार और आचरण में संघ की शक्ति ही सर्वमान्य थी। राज्य-कोष का रक्षक कोषाध्यक्ष हुआ करता था तथा सर्वसम्मति से स्वीकृत आय-व्यय के आधार पर ही राज्य, प्रजा तथा शिक्षा के लिए व्यय किया जाता था। आय-व्यय का लेखा-जोखा आम-सभा के समक्ष प्रधानमंत्री को प्रस्तुत करना होता था। गणतंत्र के उस युग में राजाप्रजा का अग्रणी हुआ करता। प्रजा राज्य की भाग्य-विधात्री हुआ करती थी। यदि

कोई राज्याध्यक्ष स्वेच्छाचारी होने का प्रयास करता, तो प्रजा उसे शासन से उतारकर संचालन के लिए नया सभापति निर्वाचित कर लिया करती थी।

नेपाल की भूमि पर इस शासन-प्रवन्ध के हर्षवर्द्धन के राज्यकाल तक व्यवस्थित चलने का उल्लेख मिलता है। गुप्त-वंश के वाद किरात-वंश, सेन-वंश एवं पाल-वंश और उनके वाद मल्ल-वंश और ठकुरी-वंश ने नेपाल पर शासन किया लेकिन 'राजा' प्रजा की ही सम्मति से शासन किया करता था। शासन-व्यवस्था के इसी स्वरूप और आकार को आधार वनाकर राणा जंगवहादुर ने नेपाल की भूमि पर शासन का आरम्भ किया था लेकिन समय और संयोग ने प्रधानमंत्री को ही नेपाल का सर्वेसर्वा वना दिया और अपनी आने-वाली पीढ़ियों के लिए तदनुरूप पथ प्रशस्त कर दिया।

सम्पूर्ण राणा-शासनकाल इस आधार पर ही खड़ा रहा। प्रजा को अपने हाल पर जीवित रहने या मृत्यु को प्राप्त करने के लिए निराश्रित छोड़ दिया गया। आगे चलकर भीमसेन थापा तथा दामोदर पांडे का शासन-काल राणाओं के शासन से भी अधिक निरंकुश निकल गया लेकिन नेपाल की जनता कभी स्पष्ट स्वर में विरोध नहीं कर सकी। इसका कारण यह था कि नेपाल की जनता को इतना पदाक्रान्त किया गया था, इतना सिहराया गया था कि उसके पास मनोवल ही नहीं रहा--विरोध करने का—संघर्ष करने का !



जन-क्रान्ति और नव नीतियाँ

आज भी यदि कोई राणाओं की अत्याचार-कथा का संकलन करे तो उसे एक महाग्रंथ का आकार दिया जा सकता है। राणा-काल के प्रशासन का उल्लेख मेरी विषय-सीमा की परिधि से अलग रहा है, लेकिन नेपाल पर कुछ भी लिखने से पूर्व राणाओं की आकृति आँखों के सामने झूम जाती रही है और यह भी कि नेपाल के इतिहास से राणा-प्रशासन को अलग नहीं किया जा सकता है। नेपाल का यह अतीत जिसने भोगा है, वही जानता है इसके दर्द को ! नेपाल की हीं नयी पीढ़ी राणाओं की अत्याचार-कथा को विश्वसनीय सन्दर्भ नहीं मान सकती !

नेपाल की भूमि पर ऐसे लोगों की लम्बी कतार आज भी है, जिन्होंने राणाओं के कठोर शासन-प्रबन्ध को देखा और भोगा है। नेपाल के सीमावर्ती भारतीय लोग भी राणाशाही के चश्मदीद गवाह हैं। इन चश्मदीद गवाहों में एक नाम मेरा भी लिया जा सकता है। राणा-काल का शासन घोर अत्याचारों की दस्तावेज के रूप में नेपाली जन-जीवन में संरक्षित है। इन कथाओं को अब लोक-कथाओं का स्वरूप मिलने लगा है। वैसे नेपाल के इतिहास में राणाओं का सन्दर्भ आज भी जीवित है।

एक ओर नेपाल की भूमि पर राणाओं का अनाचार-चक्र चल रहा था, वहीं दूसरी ओर नेपाल का शौर्य राणाओं से संघर्ष के लिए भीतर-ही-भीतर सज रहा था और वह समय भी आया, जब नेपाल के रणबाँकुड़ों ने सशस्त्र-क्रांति का बिगुल बजा दिया। इस क्रांति ने झकझोर कर रख दिया राणाओं को, राणाओं के प्रशासन-प्रबन्ध को ! इस क्रांति की आग को नेपाल के किशोरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर प्रज्वलित रखा। इस क्रांति की लपटों के बीच में से कई

व्यक्तित्व उभरकर नेपाल के राजनीतिक क्षितिज पर आए और एक दिन अचानक श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव सपरिवार राजभवन का परित्याग कर भारतीय दूतावास में आ गए। भारतीय विमान दिल्ली से आया और ये दिल्ली ले जाए गए। यह बात तब की है, जब नेपाल में भारतीय राजदूत थे—श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह। भारतीय राजदूत ने अपनी अहम भूमिका निभायी। नेपाल राणाओं के खौफनाक पंजे से मुक्त हुआ। राजनीतिक परिवर्त्तन की आँधी में कई राजनीतिक पार्टियाँ उभरकर सामने आयीं। नेपाली काँग्रेस के मुख्य स्तम्भ श्री विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला आदि ने सन् १९५० ई० में श्री ५ के निर्देशन में प्रथम मंत्रिमण्डल बनाया लेकिन राजतंत्रीय रूप-रेखा में सम्भावित परिवर्तन को लेकर श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने सन् १९६० ई० में संसद को भंग कर दिया। मेरे जानते प्राचीन संस्कृतिनिष्ठ इस देश पर समाजवादी व्यवस्था लादे जाने की असामयिक तथा अवैज्ञानिक शीघ्रता की गयी और वही नेपाल के निर्वाचित मंत्रिमण्डल के पतन का कारण बनी।

तत्कालीन श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के अनुसार 'नेपाल को अपनी परम्परा, इतिहास एवं सांस्कृतिक आधार पर यहाँ की परिस्थिति के अनुकूल ही अपनी राज्य-व्यवस्था स्थापित करनी होगी। किसी प्रकार का विदेशी 'वाद' इस भूमि पर पनप नहीं सकता। स्मरणीय है कि श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने अपने आदर्शों और नेपाल के लिए नये सिद्धान्तों के आधार पर आशातीत लोकप्रियता प्राप्त की। नेपाल की राजनीतिक पार्टियाँ प्रतिविम्बित हुईं। श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने नयी शासण-प्रणाली का निरूपण किया, जो पंचायत-प्रणाली के नाम से प्रसिद्ध हुई। नेपाल की जनता ने इस पंचायत-प्रणाली को पंचायत-दर्शन के रूप में

स्वीकार किया। यहाँ यह भी स्मरणीय है कि प्रायः सौ वर्षों तक 'महाराज' की उपाधि धारण कर राणाओं ने शासन किया। यह भी उल्लेखनीय है कि नेपाल के अंतिम राणा थे—मोहन शमशेर जंग-बहादुर राणा।

आज भी नेपाल में शाह-वंश का शासन है और राजतंत्र की छाया के नीचे लोकतंत्र पल रहा है। श्री ५ की शक्ति सर्वशक्तिमान है। मेरे जानते श्री ५ अब एक प्रगतिशील व्यवस्था का प्रतीक-नाम है।



नेपाल की अतीत गाथा

नेपाल का इतिहास लिखना मेरा उद्देश्य नहीं है। इस छोटी-सी कृति के माध्यम से नेपाल को हल्के हाथों से स्पर्श करना ही मेरे लिए उचित है। प्रसंगवश यह निवेदन है कि गोरखाली राजाओं का आदि-कुल चितौड़ का राजवंश है। इस वंश के आदिपुरुष ऋषिराज भण्डारक से लेकर नरहरि शाह तक के बीच की अवधि वहुत ही विवादपूर्ण है लेकिन नरहरि शाह के बाद द्रव्यशाह से लेकर श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव तक का इतिहास वहुत ही स्पष्ट है।

विशाल नेपाल के महान् प्रवर्तक के रूप में सम्राट् पृथ्वीनारायण शाह का व्यक्तित्व अविस्मरणीय हैं और सम्पूर्ण जीवन साहसिक गाथाओं से परिपूर्ण है। प्रताप सिंह ने छोटी अवधि तक नेपाल पर शासन किया था लेकिन एक शांतिप्रिय सम्राट् के रूप में नेपाल के जनमानस पर प्रतिष्ठित रहे। प्रताप सिंह के पश्चात् रणवहादुर शाह ने राज्य का शासन-भार ग्रहण किया। रणवहादुर शाह ने कई शादियाँ कीं और मृत्यु के समय अपनी तीसरी पत्नी के पुत्र गीर्वाण युद्धविक्रम शाह देव के साथ ही सारा अधिकार भीमसेन थापा को समर्पित कर दिया। एक ऐतिहासिक सन्दर्भ के अनुसार नेपाल के राज-नीतिक पटल पर यहीं से राणाओं का उदय हुआ। गीर्वाण युद्धविक्रम शाहदेव ने नेपाल की सीमा का विस्तार किया। इन्हीं के शासन-काल में अँग्रेजों और गोरखों के वीच युद्ध हुआ। लम्बे युद्ध के वाद २८ नवम्वर, १८१५ ई० को संधि हुई और ३ या ४ मार्च, १८१६ ई० को सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर हुए। इस सन्धि-पत्र पर नेपाली पक्ष की ओर से चन्द्रशेखर उपाध्याय और अँग्रेजों की ओर से जेनरल ऑक्टर लोनी ने हस्ताक्षर किए। यह सन्धि "सुगौली की ऐतिहासिक

सन्धि" के नाम से इतिहास-प्रसिद्ध है। इस सन्धि के मुताविक सुरयू नदी तक की भूमि भारत के अधीन मान ली गयी। भारत ने वुटवल आदि क्षेत्र नेपाल को वापस कर दिया। मेची और महाकाली नदी नेपाल की पूर्वी और पश्चिमी सीमा स्वीकार की गयी। नेपाल में अँग्रेज रेज़िडेंट का पदस्थापन हुआ। सिक्किम के राजा को नगर-कोट का किला देकर सिक्किम के साथ भी सन्धि की गई और भारत एवं नेपाल के वीच मैत्री-भावना स्थापित की गई। अवध का कुछ भाग नेपालगंज में नेपाल को मिला। पूर्व में तिस्ता क्षेत्र और दक्षिण गया तक का भूभाग नेपाल को त्याग देना पड़ा। लम्वे और कठिन संघर्ष के बाद भारत ने स्वाधीनता अर्जित की। भारत की स्वाधीनता के कुछ वर्ष वाद ही नेपाल राणा-वंश से मुक्त होकर राजतंत्रीय लोकतंत्र के प्रथ पर अग्रसर हुआ लेकिन एक सौ अड़सठ वर्षों के वाद भी वह सीमा-रेखा वनी ही हुई है। नेपाल और भारत सन्धि की प्रत्येक शर्त को आदर देते हैं। भारत और नेपाल के बीच मैत्री की यह भावना इधर और मजबूत हुई है।

शाह-वंश की यह परम्परा जीवित रहीं और गीर्वाण युद्ध-विक्रम शाहदेव के बाद उनके दो-वर्षीय शिशु राजेन्द्रवीर विक्रम शाह को राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित कर महारानी त्रिपुरसुन्दरी ने शासन का संचालन किया। महारानी ने जन-हित के लिए कई निर्माण-कार्य कराये। यह अवधि उथल-पुथल की रही। कोतपर्व, भण्डारखाल पर्व आदि अनेक कार्य इसी अवधि में घटित हुए। राणा जंगवहादुर की हत्या का प्रयास भी इसी अवधि में हुआ। राणा जंगवहादुर ने राजेन्द्र वीरविक्रम शाह को गद्दी से उतरवाकर सुरेन्द्र वीरविक्रम शाह को राजा बना दिया। उपहारस्वरूप सुरेन्द्र वीरविक्रम शाह ने शासन का सम्पूर्ण भार राणा जंगवहादुर को समर्पित कर दिया और इस प्रकार सम्पूर्ण शासन-सूत्र का संचालन राणाओं के हाथ आ गया। इस प्रकार श्री ५

सरकार को पावनमूर्त्ति वनाकर राणाओं ने अपना कठोर शासन आरम्भ किया और राणा जंगवहादुर ने ये सव अधिकार प्राप्त कर लिये – मंत्री को 'महाराजा' की उपाधि,प्राण-दण्ड के साथ क्षमा का अधिकार, कर्मचारियों की नियुक्ति और सेवा-निवृत्ति के साथ ही परराष्ट्र नीति-निर्धारित करने का अधिकार भी। इसी घोषणा के आधार पर राणा-वंश को परम्परागत शासन का अधिकार प्राप्त हो गया।

सुरेन्द्र वीरविक्रम शाह के वाद त्रैलोक्यवीरविक्रम शाह श्री ५ हुए। त्रैलोक्यवीरविक्रम शाह ने राणाओं से अधिकार वापस लेने का प्रयास अवश्य किया लेकिन असमय ही दिवंगत हो जाने के कारण वे सफल न हुए और पृथ्वीवीरविक्रम शाह युवराज घोषित किए गए एवं तत्पश्चात् राजसिंहासन पर आए। उनके शासन-काल में ही वीर शमशेर, देव शमशेर, चन्द्र शमशेर आदि 'महाराजा' अर्थात् प्रधानमंत्री हुए। श्री ५ पृथ्वीवीरविक्रम शाह ने भी राणाओं से अधिकार छीन लेने का प्रयास किया लेकिन चन्द्रशमशेर की कूटनीति के सामने वे असफल वने रह गए।

यह सौभाग्य नेपाल के पौरुष-प्रतीक श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाह देव को प्राप्त हुआ। चन्द्र शमशेर उस समय प्रधानमंत्री (महाराजा) के पद पर आसीन थे और श्री ५ त्रिभुवन अल्पवयस्क थे। श्री ५ त्रिभुवन सयाने हुए, शादी योग्य हुए। चन्द्र शमशेर को कोई लड़की न थी, इसलिए भारत के किसी राज-परिवार में यह शुभ-सम्बन्ध स्थापित किया गया लेकिन राणा चन्द्र शमशेर ने श्री ५ त्रिभुवन को आधुनिक वातावरण से अलग रखने का प्रयास किया। राणा चन्द्र शमशेर ने अपने जीवन-काल में ही मोहन शमशेर को प्रधानमंत्री वना देने के लिए अथक प्रयास किया लेकिन असफलता ही हाथ आयी।

नेपाल के राजनीतिक परिवर्त्तन के लिए सन् १९५० ई० अपनी ऐतिहासिक गरिमा रखता है। यह वही वर्ष था जब नेपाल की भूमि पर सशस्त्र जन-क्रांति का सूत्रपात हुआ। नेपाल के प्रधानमंत्री मोहन शमशेर ने श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव को राजसिंहासन से अलग कर उनके पौत्र ज्ञानेन्द्र वीरविक्रम को श्री ५ घोषित कर दिया, लेकिन भारत ने इसका विरोध किया। यही षड्यंत्र राणाओं के लिए विष भी सिद्ध हुआ। नेपाल, में राणा-वंश के वंशानुक्रम शासन का अन्त हो गया। नेपाल की भूमि पर प्रजातंत्र का नया आलोक अवतरित हुआ।

आज भी नेपाल की जनता श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव को राष्ट्र-पिता के रूप में आदर करती है और उनकी जन्म-तिथि को प्रजातंत्र-दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्मरणीय है कि दिनांक १८ फरवरी, १९५१ ई० को नेपाल की ऐतिहासिक भूमि पर प्रथम जनतंत्रीय सरकार गठित हुई। महाराजाधिराज श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव हृदय-रोग से पीड़ित हो चिकित्सा के लिए स्विट्जरलैण्ड गए और सन् १९५५ ई० में स्वर्ग सिधार गए। श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव दिनांक १४ मार्च, १९५५ ई० को नेपाल के राज्यसिंहासन पर ससमारोह प्रतिष्ठित हुए।

श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने अपने लोकप्रिय शासन से नेपाल की जनता को कई सुविधायें देकर शाह-वंश की परम्पराओं को आलोकित किया। श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव का शासन नेपाल के लिए इसलिए भी स्मरणीय व उल्लेखनीय माना जाता है कि श्री ५ महेन्द्र ने नेपाल की शासन-व्यवस्था को पंचायत-दर्शन दिया। सम्प्रति श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव नेपाल के लोक-प्रिय सम्राट् के रूप में समादृत हैं लेकिन श्री ५ महेन्द्र ने ही नेपाल

को विश्व के राजनीतिक-मंच पर प्रतिष्ठित किया। श्री ५ वीरेन्द्र अपने पिता के चरण-चिह्नों पर अवाध-गति से चल रहे हैं।

नेपाल का प्रशासन राष्ट्रीय पंचायत के अधीन है। सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रशासन विभिन्न इकाइयों में विभाजित है। इस प्रकार नेपाल में निर्वाचित जन-प्रतिनिधियों की सरकार स्थापित है।



राज, राजतंत्र और विकास-चरण

प्राचीनकाल के कई राजाओं को लेकर आज भी आम जनता में लोक-कथायें प्रचलित हैं। मेरे समीप के राजा वेणु के गढ़ (केशरिया : चम्पारण) के किसी राजा के बारे में स्थानीय अनुश्रुति है कि उसके गढ़ के चारों ओर सरोवर था। सरोवर कमल के फूल-पत्तों से भरा रहता था। राजा कमल के पत्ते पर बैठकर स्नान किया करता था। कमल का पत्ता डूबता न था। एक दिन वह राजा स्नान करने गया कि कमल का पत्ता डूब गया। कमल के पत्ते का डूबना अपशकुन का परिचायक नहीं था लेकिन राजा की मान्यता यह थी कि जब तक हमारी प्रजा सन्तुष्ट और सुखी है, यह कमल का पत्ता डूब नहीं सकता। राजा ने दरबारियों को बुलाकर कहा कि "आज स्नान करते समय कमल का पत्ता डूब गया है, इसका अर्थ यह है कि मेरे किसी दरबारी या अधिकारी ने प्रजा को दुःख दिया है।" राजा ने उस दरबारी को खोज निकाला, जिसने प्रजा को कष्ट दिया था।

यह एक कथा हुई। प्राचीन काल के कई राजाओं के बारे में यह कहानी प्रचलित है कि वे वेश बदलकर अपनी प्रजा के बीच जाते थे और बहुत समीप से किसी बहाने उसकी तकलीफ सुनते थे, लोगों से बातें करते थे। ऐसे राजाओं में विक्रमादित्य और राजा भोज के नाम आदर के साथ लिए जाते हैं। राजतंत्र की यह परम्परा विलक्षण मानी जाती रही है। आज स्थिति बदल गयी है, परिवेश बदल गया है। पर इस परम्परा को जीवित रखने के लिए श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने भी कई बार ऐसी यात्रायें की हैं। साधारण नागरिक की हैसियत से वीरगंज (नेपाल) के एक रिक्शे पर बैठकर उन्होंने सारे नगर की परिक्रमा की और इस गोपनीय शाही-

यात्रा का पता किसी को न चल सका। श्री ५ वीरेन्द्र राजधानी लौट गए। यह बात उस रिक्शेवाले से खुली, जिसे स्वयं महाराजाधिराज श्री ५ वीरेन्द्र ने इतनी बड़ी राशि पुरस्कारस्वरूप दे दी थी कि वह धन्य हो गया। वह रिक्शा ऐतिहासिक धरोहर बन गया।

उपर्युक्त घटना कोई नाटकीय घटना नहीं थी। वह श्री ५ वीरेन्द्र की वैसी गोपनीय यात्रा थी अपने राज्य की अवस्था की प्रत्यक्ष जानकारी के लिए या विभागीय अधिकारियों की स्थिति के ज्ञान के लिए कि कहाँ कैसे काम हो रहा है, कहाँ क्या हो रहा है! इस यात्रा के उद्देश्य को लेकर कई प्रकार के अनुमान लगाए गए, कई तरह के चिन्तन किए गए। यह बात बहुत बड़ी है। यह साधारण घटना असाधारण महत्त्व रखती है। कहने का तात्पर्य कि श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने नेपाली जन-जीवन से सीधा सम्पर्क साधने के लिए नेपाल के पूर्वी क्षेत्रों की यात्रा की, गोपनीय यात्रा! इस यात्रा-क्रम को उन्होंने आगे भी जारी रखा और त्रिशूली से बुटवल तक की पैदल यात्रा की। इस यात्रा के दौरान वे नेपाल के ग्रामीण अंचलों के उन क्षेत्रों में भी गए, जहाँ उनके पूर्व नेपाल का कोई भी अधिकारी नहीं गया था। यह यात्रा कितनी विस्मयकारी होगी, जब श्री ५ वीरेन्द्र को कोई भी पहचानता न होगा और वे घुल-मिलकर लोगों के साथ बातें करते होंगे, भोजन करते होंगे। पता चला कि इन क्षेत्रों के लोग श्री ५ वीरेन्द्र से खुलकर बातें करते थे।

नेपाल में ही नहीं, भारत में भी यह चर्चा है कि श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने कई बार विकास-कार्यों का निरीक्षण गोपनीय ढंग से किया। यही कारण है कि नेपाल की परियोजनायें प्रायः समय पर पूर्णता को प्राप्त हुई हैं। इस यात्रा का इसलिए महत्त्व

है कि नेपाल के ग्रामीण-जीवन से श्री ५ वीरेन्द्र पूर्णतया परिचित हैं। कोई भी प्रधानमंत्री या मंत्री उनकी खुली आँखों के सामने विकास की दिशा को भ्रमित नहीं कर सकता!

श्री ५ वीरेन्द्र ने अपने विद्यार्थी-जीवन में ही फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि देशों की यात्रा की थी। लम्वी अवधि तक ऊँची शिक्षा के लिए ईटन कॉलेज, इंगलैण्ड के वे छात्र रहे। श्री ५ वीरेन्द्र ने ही ऐतिहासिक वांगदुंग सम्मेलन का नेपाल की ओर से प्रतिनिधित्व किया। इन यात्राओं ने उन्हें अनुभवों का अक्षय-कोष दिया। वे संसार के कई महान् राष्ट्र-नेताओं के सम्पर्क में आए। श्री ५ वीरेन्द्र सामान्य प्रशासन, इतिहास तथा अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए जापान और अमेरिका भी गये।

कुल का योग यह कि श्री ५ वीरेन्द्र ने उन क्षमताओं को अपने भीतर संतुलित ढंग से समायोजित किया, जो एक शासनाध्यक्ष के लिए अपेक्षित है। यही कारण है कि संसार की राजनीतिक होड़ में वे घोर आँधियों के वीच भी निश्चल ही नहीं, अडिग भी हैं।

स्मरणीय है कि श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के शासन-काल में नेपाल की भूमि पर जितनी राजनीतिक हलचलें आयीं, उनका सामना समग्र साहस के साथ किया। नेपाल में एक स्वस्थ और शुद्ध प्रशासन देकर आम-जनता में लोकप्रियता प्राप्त की। छोटे या वड़े देश में जहाँ मतदान की प्रणाली है, वयस्क मताधिकार की व्यवस्था है, उन देशों में छोटी-वड़ी हलचलें स्वाभाविक हैं। नेपाल भी उन्हीं देशों में से एक है। वस, नेपाल के लिए अपेक्षित है शांति। यही वह मार्ग है, जो नेपाल को विकास के पथ की ओर नहीं, विकास की मंजिलों की ओर ले जा सकता है।



सम्राट् कवि को नमन !

नेपाल के प्रत्येक नागरिक को अपनी मातृभाषा ही नहीं, अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति आदर और श्रद्धा तो है ही, साथ ही गौरव भी है। नेपाली भाषा की सम्यक समृद्धि के लिए नेपाली का प्रत्येक साहित्यकार अपने श्रम और साधना का दीपक जलाये सजग-सचेष्ट है। प्रतिवर्ष अपरिमित साहित्य प्रकाशित होता है। नेपाली भाषा के साथ देवनागरी लिपि का जीवन्त संस्कार जीवित है। यह जीवन्त संस्कार नेपाली भाषा के लिए एक शुभ संकेत है।

नेपाली भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त है। हमारी हिन्दी के लिए दुर्भाग्य है कि हिन्दी देश के सर्वाधिक लोग बोलते-लिखते-पढ़ते हैं लेकिन स्वाधीनता के ३७ वर्ष बाद भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं किया जा सका, लेकिन नेपाली भाषा को वह स्थान प्राप्त हो गया। हिन्दी के एक साधारण सेवक के नाते मेरी यह मान्यता है कि कोई भी भाषा, जिसे राज्याश्रय प्राप्त है, उसे विकास का सोपान मिलेगा, यह आवश्यक नहीं है। मेरा कहना यह है कि नेपाली के पास वह अक्षय-कोष रहा है कि राज्याश्रय प्राप्त नहीं होने के बाद भी समस्त नेपालियों के कंठ पर विराजमान होती !

नेपाली का उद्‌गम स्थल कहीं भी हो लेकिन वह संस्कृत के अत्यन्त समीप है और हिन्दी नेपाली की बड़ी सगी बहन है। नेपाली ने अपनी कोख से ऐसे साधक पुत्रों को जन्म दिया है, जिनको लेकर यह भाषा अपने प्रति गौरव का अनुभव कर सकती है।

नेपाली भाषा के साधक पुत्रों में राष्ट्र-कवि लेखनाथ का नाम आदर के साथ लिया जाता है। नेपाल के इस राष्ट्र-कवि लेखनाथ

जी के सम्मान-समारोह के अवसर पर नेपाल के प्रधानमंत्री से लेकर देश के प्रमुख नागरिकों तक ने राष्ट्रकवि के रथ को खींचकर अपनी असीम श्रद्धा का परिचय देकर अपने प्रति गौरव का अनुभव किया था।

यह स्मरणीय है कि भारत-भूमि पर, महाकवि भूषण के वाद ऐसे गौरवपूर्ण सम्मान-समारोह का उल्लेख इतिहास के पन्नों में नहीं है। नेपाल ने अपने राष्ट्रकवि को ऐसा गौरव-मान और आदर देकर अपने संस्कार का सम्मानित इतिहास प्रस्तुत किया है।

शाहवंश में भी ऐसी कई गौरवमयी प्रतिभायें आयी हैं, जिन्होंने नेपाली भाषा की ही नहीं, अन्य कई भाषाओं की सेवाएँ की हैं।

विश्व की विभिन्न भाषाओं में ऐसे कितने ही कवि हो गए हैं, जिन्हें जनता ने कवि-सम्राट् के आदरमय सम्बोधन से विभूषित ही नहीं, समादृत भी किया है, परन्तु सम्राट्-कवि का उल्लेख आते ही श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव का वोध होने लगता है। श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के साथ अपनी ओर से 'स्वर्गीय' शब्द नहीं जोड़ना चाहता—इसलिए कि कवि अमरत्व को प्राप्त होता है, उसकी आत्मा अमर होती है। मेरे अन्तर का स्पष्ट स्वर है कि सम्राट्-कवि श्री ५ महेन्द्र की आत्मा समस्त जनता की आत्मा वन गयी है। श्री ५ महेन्द्र की कई काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। एक कृति है—'उसै को लागी' ('उसी के लिए')। इस काव्य-कृति का हिन्दी अनुवाद डॉ० इन्दुशेखर ने किया है। यह कृति भारत-नेपाल-मैत्री-केन्द्र (काठमांडू) की ओर से प्रकाशित है। किसी भी भाषा के रचना-शिल्पी के लिए सम्राट्-कवि श्री महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव एक अन्यतम साधक हैं। एक जीवन्त कवि होने के नाते वही पीड़ा, वही भावना उनके कवि के भीतर जीवित है, जो किसी भी सच्चे कवि की विशद आत्मा की निधि होती है।

नेपाल की सांस्कृतिक भूमि को वह सौभाग्य प्राप्त है कि उसका सम्राट् एक कवि रहा है, जिसके हाथ शौर्यमय संस्कारों की प्रतीक खुखरी रही है और प्रांजल काव्य-प्रतिभा की प्रतीक सुकुमार लेखनी भी। श्री ५ महेन्द्र के मस्तिष्क के भीतर शौर्य का संस्कार परिपूर्ण रहा है, तो काव्य का प्रस्फुटित सुमन और सुमन-सौरभ भी।

इस धर्मभूमि को श्री ५ महेन्द्र के कवि ने अपनी अनूठी काव्य-साधना से आलोकित किया और अपरिमित साहित्य दिया। वह शाश्वत साहित्य नेपाल ही नहीं, नेपाल से बाहर भी सम्मान से पढ़ा जाता है।

नेपाली भाषा के आदिकवि भानुभक्त आचार्य का स्थान भी नेपाल के जन-जीवन में सादर प्रतिष्ठित है। महाकवि भानुभक्त आचार्य ने 'रामायण' का नेपाली में अनुवाद कर नेपाली भाषा और साहित्य को नये अवदान दिए। यह भी कहा जा सकता है कि भानुभक्त ने नेपालषी भाा को नया तेवर दिया। नेपाली के कवियों और साहित्यकारों की लम्बी शृंखला आज भी नेपाली भाषा के शृंगार के लिए सतत् साधना कर रही है।

काव्य या साहित्य की साधना की दिशा में नेपाली के कवियों और साहित्यकारों की साधना-भूमि के प्रतीक के रूप में आदिकवि भानुभक्त आचार्य के दर्शन किये जा सकते हैं।

नेपाल के प्रशासन की दृष्टि में भानुभक्त आचार्य तथाकथित अपराधी के रूप में भी स्मरणीय रहे हैं। पर विषम और कठिनतम परिस्थितियों में भी भानुभक्त का कवि साधना के दीपक जलाकर सरस्वती देवी की आराधना करता रहा। भानुभक्त की रचनाओं के मौलिक होने का सम्भवतः यही कारण है।

चर्चा है कि आदिकवि भानुभक्त को सरकारी सेवा दी गई थी। तब नेपाल पर राणाओं का प्रत्यक्ष शासन था और सरकारी

कार्यालय घोर घृणित रिश्वतखोरी के बुरी तरह शिकार हो गये थे। भानुभक्त का सरल कवि-हृदय इस कुत्सित वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित न कर सका। अनेक सरकारी सेवक और अधिकारी विरोधी हो गए। भानुभक्त आचार्य को गवन का अभियुक्त घोषित किया गया और गिरफ्तार कर काठमांडू के कुमारी चौक में वन्द कर दिया गया। अपने जेल-जीवन में ही भानुभक्त कवि ने 'रामायण' का शेष भाग लिखा और सुन्दरकाण्ड तक पूरा किया। कुछ दिनों के वाद वे गवन के अभियोग से मुक्त कर दिए गए और उन्होंने शेष रामायण-अंशों—शेष युद्ध-काण्ड एवं उत्तरकाण्ड की रचना की।

राणाओं के शासन-काल में नेपाली के मूर्द्धन्य तपस्वी कवियों तथा साहित्यकारों ने किस प्रकार सरस्वती की साधना-आराधना की, आंदिकवि भानुभक्त जी आचार्य इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

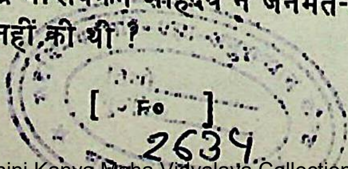


मत और जनमत-संग्रह

नेपाल की शासन-प्रणाली पंचायत-दर्शन के आधार पर संचालित है। श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव इस प्रणाली, इस पंचायत दर्शन के प्रमुख उद्घोषक रहे हैं। इस विकेन्द्रीकरण के लिए वे आज भी नेपाली जनता के बीच स्मरण किए जाते हैं और कल भी स्मरणीय रहेंगे। नेपाल की राजनीतिक पार्टियाँ प्रतिबंधित हैं लेकिन वे राजनीतिक संगठन अपनी पहचान बनाये रहने के लिए कभी-कभी अपनी ओर से प्रयास भी करते हैं। नेपाल में जनमत-संग्रह की घोषणा के पीछे कुछ ऐसी ही राजनीतिक पृष्ठभूमि रही है।

नेपाल में जिन परिस्थितियाँ को लेकर श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने जनमत-संग्रह की घोषणा की, वे परिस्थितियाँ निश्चय ही राजनीति-प्रेरित थीं। यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि पाकिस्तान के तानाशाह जुल्फिकार अली भुट्टो की फाँसी से नेपाल को क्या लेना-देना था, लेकिन उसी के नाम पर जुलूस निकालकर नेपाल को आन्दोलित करने का प्रयास किया गया, फिर विद्यार्थियों की माँगें जुड़ गयीं और फिर कई हिंसक घटनायें भी घटित हुईं।

तब श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने जनमत-संग्रह की घोषणा की और नेपाल की भूमि से उठती हुई आँधी थम गयी। यह एक बुद्धिमतापूर्ण कदम था। जनमत-संग्रह की घोषणा के बाद सारे नेपाल के लिए यह विषय खुली बहस का विषय बन गया। इस घोषणा के बाद सारे नेपाल में 'बहुदल' और 'निर्दल' की हवा बहने लगी। लोग इस घोषणा को लेकर नये सिरे से चिन्तन करने लगे लेकिन इस घोषणा के साथ एक और आत्मचिन्तन का विषय आया कि क्या श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने जनमत-संग्रह की घोषणा करके कोई भूल तो नहीं की थी?



नेपाल के निर्दलीय समर्थक भले ही इसे भूल न स्वीकार करें लेकिन यह प्रश्न सीधा है कि जब श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने नेपाल के लिए पंचायत-प्रणाली का प्रावधान दे दिया था, तब फिर इस जनमत-संग्रह की घोषणा का क्या तुक था ? श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने सम्भवतः यह मानकर कि हमारे देश की जनता इस प्रणाली को लेकर अपनी ओर से क्या निर्णय देती है, यह भी देख लिया जाय ! इसलिए निश्चित ही यह घोषणा लोकतांत्रिक व्यवस्था के अधीन हुई थी और प्रायः दो दशकों के बाद एक बार फिर श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव का पंचायत-दर्शन कसौटी पर चढ़ाया गया था कि अगर खरा उतरे तो वह संचालित रहे और अगर खोटा सिद्ध हो तो उसे स्थगित किया जाय। कहने का तात्पर्य यह कि इसके रूप में एक कठिन बाजी बदी गयी थी।

यह पंचायत-दर्शन या दलविहीन व्यवस्था 'निर्दलीय' की संज्ञा लिए सामने मोर्चे पर आयी और प्रतिबंधित नेपाली कांग्रेस के साथ-साथ अन्य राजनीतिक पार्टियाँ 'बहुदल' का सम्बोधन लिए मोर्चेबन्दी करने लगीं, लेकिन नेपाल के आंतरिक आन्दोलन का स्वर धीमा न हो सका, विरोध की छिटपुट घटनायें उभरती ही रहीं। नेपाल के विभिन्न छोटे-बड़े नगरों में बदरंग पोस्टरों का जंग शुरू हो गया था।

नेपाल की कथित राजनीतिक पार्टियाँ जनमत-संग्रह में बहुमत प्राप्त करने के लिए एक शिविर के भीतर आने का प्रयास करने लगीं। नेपाल की राजधानी काठमांडू में साठ राजनीतिज्ञों की एक बैठक हुई और एक समिति गठित की गई लेकिन प्रतिबंधित नेपाली कांग्रेस के नेता बी० पी० कोइराला ने इस बैठक में भाग नहीं लिया। हाँ, नेपाल के दो भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों टंकप्रसाद आचार्य और डॉ० के० आई० सिंह ने अवश्य ही सहयोग किया। इनके

अतिरिक्त सूर्यप्रसाद उपाध्याय, मनमोहन अधिकारी, केशर जंग माँझी आदि ने उपस्थित होकर परस्पर सहयोग पर बल दिया था।

नेपाल अब 'वहुदल' और 'निर्दल', इन दो शब्दों को लेकर विभाजित होने लगा। चुनाव-सभाओं का दौर शुरू हुआ। इस जनमत-संग्रह का परिणाम सामने आया—'वहुदल' की पराजय ! मेरा अनुमान यह है कि वहुदल-व्यवस्था के पक्षधर नेताओं के प्रतिक्रियावादी विचारों से भरे भाषणों से नेपाल के आम मतदाताओं को उनके उद्देश्य के प्रति भ्रम उत्पन्न हुआ और यह 'वहुदल' शब्द ही उनकी सफलता पर एक प्रश्नवाचक चिह्न वन गया।

किसी देश की सरकार अगर भूमिपतियों की भूमि छीनकर भूमिहीनों के वीच वितरित करने की योजना को कार्यरूप देती है तो कोई आश्चर्य की वात नहीं है। लेकिन किसी देश का राजा यदि वड़े भूमिपतियों की जमीन को कानून वनाकर भूमिहीनों के वीच वितरित करता है, तो वह उस देश की राजनीतिक पार्टियों के लिए खतरा बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह कि नेपाल की गरीब जनता श्री ५ महेन्द्र की विर्त्ता-उन्मूलन नीति से आज तक प्रभावित है। जनमत-संग्रह के मोर्चे पर निर्दलीय व्यवस्था की विजय निश्चित ही श्री ५ महेन्द्र की आत्मा की विजय मानी जा सकती है। राजनीतिज्ञों का मत है कि राजतंत्र का यह कदम वहुत ही खतरनाक होता है, और यही नेपाल में हुआ था। नेपाल की राजनीतिक पार्टियाँ और उनके नेता आम जनता के मन में उत्पन्न भ्रम को दूर नहीं कर सके थे।

नेपाल की प्रतिवंधित राजनीतिक पार्टियों के नेता वी० पी० कोईराला, शशि शमशेर, रामराजा सिंह, मनमोहन अधिकारी आदि सभी एक मंच पर तो आए लेकिन एक स्वर से, समवेत स्वर से यह सिद्ध नहीं कर सके कि विचारों और कार्यक्रमों के आधार पर ही सही, हम एक हैं !

नेपाल में ३००० ग्राम-पंचायत हैं और प्रत्येक पंचायत में प्राय: ४५ पंच हैं। मोटे तौर पर यही रूप-रेखा है नेपाल के ग्राम-पंचायतों की, और यह जनमत-संग्रह तव हुआ, जब नेपाल पूर्णतया पंचायतों प्रणाली के अधीन काम कर रहा था। ग्रामीण विकास और विकास की अन्य योजनायें पंचायती-व्यवस्था के निर्देशन में संचालित हो रही थीं। इन पंचों की पकड़ गाँवों पर थी। यह भी स्मरणीय है कि नेपाल की ९० प्रतिशत जनता गाँवों में रहती है। बहुदल-व्यवस्था के पक्षधर नेता गाँवों की जनता को प्रभावित नहीं कर सके। वे नगरों में ही रह गए और निर्दल-व्यवस्था के लोग गाँवों के भीतर पैठे थे। ऐसी परिस्थिति में निर्णय जो होना था, वह पहले से ही स्पष्ट था।

जनमत-संग्रह के लिए राष्ट्रीय चुनाव-आयोग का गठन हो चुका था। भगवतीप्रसाद सिंह को राष्ट्रीय चुनाव-आयोग का अध्यक्ष मनोनीत किया गया था। इस आयोग ने निर्भयता के साथ निष्पक्ष होकर जनमत-संग्रह करवाया। ३ मई, १९८० ई० को जनमत-संग्रह के लिए मतदान हुआ। नीला रंग वहुदल-व्यवस्था के लिए और पीला रंग निर्दल-व्यवस्था के लिए निर्धारित किया गया था।

जनमत-संग्रह के मतों की गणना के बाद सारे विपक्षियों ने एक स्वर से कहा कि मतदान निष्पक्ष हुआ लेकिन परिणाम जव निर्दलीय व्यवस्था के पक्ष में गया तो कहा जाने लगा कि मत-गणना में वहुत अधिक गोल-माल हुआ है!



नये औद्योगिक चरण

प्राकृतिक दृष्टि से नेपाल की अपनी प्रसिद्धि है। प्रकृति ही नेपाल की सम्पत्ति है। वन्य-सम्पदा नेपाल के लिए विशाल धरोहर मानी जाती है। इस वन्य-सम्पदा को लेकर नेपाल के जन-मानस में यह मुहावरा सूत्र की तरह स्मरणीय है—'नेपाल को धन हरि ओ वन'। इस देश की वन्य-प्रधान भूमि और इसकी हरीतिमा लोचनों को ही सुख नहीं देती, सम्पूर्ण राष्ट्र को समृद्धि-वृद्धि भी प्रदान करती है। इसके वन्य-प्रान्तों के निवासी जानवरों का मांस खाकर ही अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। अत्यधिक हिम-शीत के कारण पौष से लेकर फाल्गुन तक ये लोग नीचे भारत की ओर व्यापार करने आते रहे हैं। आजकल यह क्रम शिथिल हो गया है लेकिन यह सच है कि इन वन्य-प्रदेशों के निवासी भारत-भूमि पर आकर चमरी गाय का चँवर, कस्तूरी, सींग तथा जड़ी-बूटियों आदि का व्यापार करते रहे हैं। इन्हें 'भोट' या लामा कहा जाता है।

भारत से लौटते समय अपनी वस्तुओं की विक्री से ये लोग अपने लिए नमक, तेल, चावल, गुड़ आदि खरीदकर ले जाते रहे हैं, नयी संचार-व्यवस्था ने इनके लिए सुविधाजनक जीवन सुलभ कर दिया है। इन भूमि-खण्डों में अव कृषि भी होने लगी है और इस भू-भाग के निवासी आधुनिकतम तकनीक से कृषि-कार्य की ओर उन्मुख होने लगे हैं।

इन जंगलों में तरह-तरह की लकड़ियाँ पायी जाती हैं। घूप, शीशम साखू, साल, करमा आदि की लकड़ियाँ राष्ट्रीय आय की श्रीवृद्धि करती हैं। इन जंगलों में वाघ, भालू, हाथी, गैंडा आदि जानवर भी पाए जाते हैं। इन जंगलों में कई प्रकार के पक्षी भी पाये जाते हैं। वन्य-सम्पदा नेपाल की आर्थिक शक्ति के रूप में स्मरणीय है। नयी

शासन-व्यवस्था के अनुसार इन वनों के विकास के लिए स्वतंत्र मंत्रालय संगठित हैं। गृह-निर्माण से लेकर सामाजिक जीवन की अनेक जरूरतों में इन लकड़ियों का प्रयोग किया जाता है। आज के बाजार में इन बेशकीमती लकड़ियों की कीमत आसमान को छूने लगी है।

नेपाल के जंगलों में पायी जानेवाली लकड़ियाँ ही नहीं, वरन् इन सघन वनों के भीतर पाये जानेवाले जानवर, पशु और पक्षी भी बहुत उपयोगी माने जाते हैं। इन जंगलों से होनेवाली आय नेपाल की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का मेरुदण्ड है।

नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों में लोहा, गन्धक, पेट्रोल, शीशा आदि खनिज धन होने की सम्भावनाओं को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसका विधिवत् अनुसंधान कराये जाने की आवश्यकता है। इस दिशा में कुछ प्रयास भी हुए हैं। इसके लिए राष्ट्रीय-स्तर पर काम किए जाने की जरूरत है। कोई कारण नहीं कि नेपाल को नव सम्पर्क-विकास का अवदान और तदनुकूल उपलब्धियाँ न मिलें।

जो लोग नेपाल के बाजारों में विदेशी सामानों की चकाचौंध से चकित होते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि नेपाल भीतर-भीतर अन्त-निर्भरता के लिए कठिन श्रम और संघर्ष कर रहा है। इस श्रम और संघर्ष के मोर्चे पर उसे सफलतायें भी प्राप्त होने लगी हैं। उदाहरण के लिए चीनी के उत्पादन को लिया जा सकता है। नेपाल में चीनी के तीन कारखाने हैं—मोरंग सूगर मिल, विराटनगर; वीरगंज चीनी कारखाना, वीरगंज और महेन्द्र सूगर मिल, सिद्धार्थनगर। वीरगंज चीनी कारखाना सोवियत-नेपाल सहयोग का प्रतीक है।

चीनी को लेकर नेपाल आत्मनिर्भरता की आखिरी सीढ़ी पर आ गया है। प्रतिवर्ष इन कारखानों की उत्पादन-क्षमता बढ़ रही है। सिमेंट के मामले में भी यही स्थिति है। हेटौड़ा में सिमेंट का कारखाना संचालित है। सिमेंट के और भी कारखाने लगाए जा रहे हैं।

विराटनगर का जूट-उद्योग भी नेपाल के औद्योगिक विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। स्टील के बर्त्तनों के निर्माण को लेकर भी नेपाल ने कीर्तिमान स्थापित किया है। नेपाल स्टील की चादरें बाहर से लेता है। यह भी उल्लेखनीय है कि ब्रिटेन-जैसा देश भी कच्चा लोहा बाहर से लेता है और वही लोहा अपने कार-खानों में देकर बारीक माल तैयार करवाता है, जिसे दुनिया के बाजारों में ऊँची-से-ऊँची कीमत पर बेच कर वह विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। उदाहरण के लिए हेयर-स्प्रिंग को लिया जा सकता है।

नेपाल ने कपड़ा, कत्था और चमड़े के उद्योग को लेकर भी समुचित विकास किया है। इन दिशाओं में वह और गहरे डूबकर काम करने लगा है। इस दृष्टि से विराटनगर, हेटौड़ा और सिद्धार्थनगर के औद्योगिक क्षेत्रों के निरन्तर हो रहे विकास के प्रति एक अटूट आस्था जगती है कि नेपाल निर्धारित लक्ष्य की परिधि में विकास करेगा ! सिगरेट-उत्पादन की दिशा में कई सफल प्रयोग किए गए हैं। ऐसे प्रयोगों में 'जनकपुर चुरुट फैक्ट्री' का नाम लिया जा सकता है। 'नेपाल कृषि-औजार-संस्थान' की स्थापना नेपाल की कृषि के लिए प्रायः सारे संयन्त्र बनाता है।

नेपाल के विकासशील उद्योग के साथ कृषि को भी जोड़ा जा सकता है, जहाँ के कर्मठ किसान कृषि-उत्पादन के क्षेत्र में अथक परिश्रम कर रहे हैं। सुलभ आँकड़ों के अनुसार भारत के समान ही नेपाल के अस्सी प्रतिशत से अधिक लोग कृषि पर आधारित और आश्रित हैं। तराई-क्षेत्र ही नेपाल के विकास को प्रमुख आधार देता है और अपने राष्ट्र को अनाज की दिशा में पूर्ण आत्म-निर्भरता के लिए स्पष्ट आधार देता है। यह प्रायः देखा जा रहा कि नेपाल अब अनाज का निर्यात भी करने लगा है। नेपाल के स्वर्णिम भविष्य के लिए यह एक शुभ संकेत माना जा सकता है।

कृषि के क्षेत्र में सफलता का मुख्य आधार है कृषि की नयी तकनीक और उन्नत बीज के साथ ही नयी-नयी परियोजनायें, जो निर्धारित समय और लक्ष्य के साथ पूर्ण होती जा रही हैं। नेपाल की सारी नदियाँ उत्तर की पहाड़ियों से निकलकर नीचे तराई की ओर आती हैं और तराई क्षेत्र को उर्वरा-शक्ति प्रदान करती हुई मित्र-देश भारत की भूमि को भी सिंचित करती हुई समुद्र से जाकर मिल जाती हैं।

तराई-क्षेत्र की मिट्टी काली होती है, साथ ही उसमें उत्तम कोटि की उर्वरा-शक्ति होती है। यही कारण है कि तराई-क्षेत्र में चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली नजर आती है। धान, गेहूँ, मक्का, जूट और आलू तराई-क्षेत्र की मुख्य उपजें मानी जाती हैं। क्षेत्रफल के अनुपात में नेपाल का कृषि-उत्पादन पर्याप्त है लेकिन भविष्य की आशंकाओं के प्रति भी नेपाल सदा ही सजग रहा है, और आज भी सजग है।



पुकारती पर्वत-मालायें

'नेपाल' शब्द के उच्चारण मात्र से ही पर्वत-शृंखलाओं का बोध होने लगता है। पर्वतीय संस्कृति ही नेपाल का परिचय है। 'नेपाल' शब्द बाबा पशुपतिनाथ की ओर भी संकेत करता है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि नेपाल एक संस्कृति का नाम ही नहीं, पर्वतीय शौर्य का भी प्रतीक है। लेकिन नेपाल का परिचय यहीं तक सीमित नहीं! नेपाल कठिन परिश्रम का भी पर्याय है। नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों में जो पहाड़ी जातियाँ निवास करती हैं, वे समुद्र-तल से कई हजार फीट ऊँचे पर्वतों पर अपना कठिन जीवन विताती हैं, ठीक वैसे ही जैसे पत्थर तराश कर मूर्त्तियाँ वनानेवाले कठिन परिश्रम से पत्थर के टुकड़ों को काट-छाँटकर सुन्दर-सुन्दर मूर्त्तियों का निर्माण करते हैं।

पहाड़ों के ये बेटे ही नेपाल के मौलिक मूर्त्तिकार हैं, जो जंगली जानवरों के बीच पहाड़ों के साये में रहते हैं। ये पहाड़ ही इनके संगी-साथी हैं। इन पर्वतीय अंचलों में ऐसे लोग भी वसते हैं, जो राजा के अलावे किसी और का नाम भी नहीं जानते, जानना भी नहीं चाहते। इनकी काठ से वनी झोपड़ियों में राजा का चित्र अवश्य रहता है। अपने राजा को देवता मानकर ये पूजन-वन्दन किया करते हैं। इन पर्वत-पुत्रों में आज भी घोर अशिक्षा व्याप्त है। इनके घरों में पिछड़ापन का अन्धकार छाया हुआ है। अभी इन उपत्यकाओं में सभ्यता—कहिए कि नयी सभ्यता की किरण नहीं पहुँची है।

ये पर्वत-पुत्र जब पहाड़ों की गोद से उतरकर नीचे की ओर आते हैं तो सम्भ्रांत लोगों की ओर ही नहीं, तेजी के साथ भागती वस-ट्रक और कारों की ओर भी मंत्रमुग्ध होकर देखते रह जाते हैं, लेकिन इनके भीतर किसी प्रकार का असन्तोष नहीं जगता है। वस इनके प्राणों के भीतर जिज्ञासा मात्र है, जीवन की जिज्ञासा, नये

जागरण की जिज्ञासा भी। इन पर्वत-पुत्रों का धैर्य और साहसिक संस्कार विलक्षण है। यही संस्कार नेपाल को वीरोचित सम्मान भी दिलाता है।

नेपाल की भूमि पर सामाजिक परिवर्त्तन हुए, नेपाल की भूमि पर सांस्कृतिक उथल-पुथल हुए और नेपाल की भूमि पर राजनीतिक बदलाव के क्षण भी आए, लेकिन इन पर्वत-पुत्रों का जीवन अपने स्थान पर अविचल रहा। यह बात और है कि नेपाल की भूमि पर लोकतंत्र की लहर आने के बाद इन्हें भी सुविधायें प्राप्त हुईं लेकिन इन सुविधाओं से इनके कठिन जीवन-यापन में कोई बुनियादी बदलाव या किसी प्रकार का अजूबा परिवर्त्तन नहीं आया। कहने का तात्पर्य यह कि इन पर्वतीय अंचलों में नये विकास की रौशनी नहीं आयी।

पहाड़ों पर अब थोड़ी-बहुत खेती भी होने लगी है। यह कल्पना किसी को भी रोमांचित कर दे सकती है कि ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर कैसे खेती की जाती है। आज इन ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर लहलहाती खेतियाँ देखी जा सकती हैं लेकिन इन कठिन खेतियों को लेकर कितना पसीना बहाना पड़ता है, या कितना कठोर परिश्रम करना होता है, यह पहाड़ों का कोई साहसी और संकल्पी पुत्र ही जान सकता है।

सारे संघर्षों, सारी कठिनाइयों और अव्यवस्था के संकटों के साथ अभावों के बीच भी पूर्ण शांति और धैर्य के साथ जीनेवाले लोगों में भी अब राजनीतिक हलचल, राजनीतिक चेतना आने लगी है। ये पर्वत-पुत्र भी अपने को राजनीति के समीप लाने लगे हैं। इन पहाड़ों में 'झाउरे' के साथ नयी स्वर-लहरियाँ भी लहराने लगी हैं। इनके परिवार की महिलायें अपने जूड़े में 'गुँड़ास के फूल' भी लगाती हैं और प्लास्टिक के हेयर-क्लिप और हेयर-पिन भी। कहने का तात्पर्य यह कि अब इधर आकर धीरे-धीरे पर्वतीय इलाके के लोग बदलने लगे

हैं, इसलिए कि अव नीचे दक्षिण की हवा उत्तर की ओर जाने लगी है। ये हवायें अपने साथ नये सन्देश लाती हैं, जो इनके कानों में एक नयी सुगबुगाहट और सनसनी पैदा करती हैं।

नेपाल स्थल-मार्ग (कोडारीमार्ग) से चीन के साथ जुड़ गया है। चीन के साथ नेपाल का गहरा मैत्री-सम्वन्ध और सम्पर्क है। इस चीनी सम्पर्क ने नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों को आशंकित करना शुरू किया है। धीरे-धीरे इन अंचलों में साम्यवादी वीज विखरने लगे हैं। वैसे सम्पूर्ण नेपाल में राजनीतिक पार्टिय़ों और संगठनों पर प्रतिवन्ध है, लेकिन सारी राजनीतिक पार्टियाँ भीतर-ही-भीतर अपनी पहचान बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील हैं। साम्यवादी विचारधारा की छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के इन अंचलों में वितरित किए जाने का समाचार भी स्पष्ट रूप से मिलता रहा है।

इन पर्वत-पुत्रों के साथ ही, नेपाल के ऊँचे-ऊँचे पर्वतों और पर्वत-शिखरों ने भी आवाज लगाना शुरू कर दिया है। यह कहा जा सकता है कि इन पर्वत-शृंखलाओं में रहनेवाले पहाड़ियों में किसी प्रकार के विवाद ने जन्म नहीं लिया है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं इनके प्राणों में किसी 'वाद' ने भी जन्म नहीं लिया है! सवसे वड़ी वात तो यह है कि ये पर्वत-पुत्र अपने राजा के प्रति शुद्ध-भाव से समर्पित हैं, यही कारण है कि इनके जीवन पर अन्य किसी भी रंग को चढ़ने में दिक्कत हो रही है।

इन पर्वतों की तलहटियों में रहनेवाले लोगों में इतना परिवर्त्तन तो आने ही लगा है कि हम भी मानव हैं, हमें भी जीने का आधार चाहिए, जीने का अधिकार चाहिए। इस प्रकार ये पहाड़ भी पुकारने लगे हैं और पहाड़ियाँ आवाज देने लगी हैं।



नेपाल नेपालियों का

नेपाल को लेकर तरह-तरह की भविष्यवाणियाँ करनेवाले लोग तव स्तब्ध रह गए, जव नेपाल के चुनाव-आयोग ने राष्ट्रीय पंचायत के निर्वाचन की घोषणा की। विश्वास को शक्ति मिली कि राष्ट्रीय पंचायत का चुनाव निश्चित समय पर होगा। कुछ वर्ष पूर्व विजया-दशमी के अवसर पर राष्ट्र को सम्वोधित करते हुए श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने कहा था—"हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि विकास के द्वारा यहाँ के लोगों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाकर सुखी और समृद्ध वनाया जाय। यह देश किसी एक व्यक्ति अथवा वर्ग की सम्पत्ति नहीं, वरन् समस्त नेपालियों की सम्पत्ति है ....।"

यह वाक्य इसलिए चिरस्मरणीय है कि यह श्री ५ वीरेन्द्र के कंठ से नेपाल की आम-जनता को सम्वोधित है। मेरे जानते इस प्रकार का वाक्य किसी राजा के कंठ से निकल नहीं सकता। इसके मूल में है देवाधिदेव पशुपतिनाथ का आशीर्वाद, जिनके आदेश से ही नेपाल के श्री ५ कोई भी ऐतिहासिक निर्णय लेते रहे हैं। कहने का अर्थ यह कि नेपाल के शास्त्रीय संविधान के अनुसार भगवान पशुपतिनाथ सर्वोपरि शासक हैं नेपाल के और श्री ५ पशुपतिनाथ के अनुचर-मात्र। इसी स्थल पर नेपाल का राजतंत्र गौण हो जाता है।

नेपाल के राष्ट्रीय पंचायत के निर्वाचन की घोषणा होते ही नेपाल की प्रतिवंधित राजनीतिक पार्टियाँ भी मुखरित हुईं। कई राजनीतिक पार्टियों ने चुनाव का वहिष्कार किया लेकिन नेपाल की भूमि पर राष्ट्रीय पंचायत के चुनाव हुए।

नेपाल की राष्ट्रीय पंचायत का गठन हुआ। आज भी यह राष्ट्रीय पंचायत संचालित है। नेपाल का प्रधानमंत्री कौन है, इससे मेरा कोई वास्ता नहीं है; लेकिन सत्य यह है कि नेपाल के भूतपूर्व प्रधानमंत्री सूर्यबहादुर थापा ने जनमत-संग्रह को लेकर राष्ट्रीय

पंचायत तक के चुनाव में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया। यह एक संयोग की वात नहीं, मात्र राजनीतिक मोहरेबाजी का परिणाम है कि नेपाल की राष्ट्रीय पंचायत में गत वर्ष सूर्यबहादुर थापा के विरुद्ध अविश्वास-प्रस्ताव पारित हुआ। इस प्रकार वे प्रधानमंत्री पद से च्युत हुए और श्री लोकेन्द्र वहादुरचन्द्र नेपाल के नये प्रधानमंत्री हुए।

यह नेपाल की आंतरिक स्थिति है। किसी भी लोकतंत्रीय देश में यह संभव है और स्वाभाविक भी है। इस अविश्वास-प्रस्ताव से अपना कोई वास्ता नहीं है। ये कुछ उद्‌गार नेपाल की राष्ट्रीय पंचायत को लेकर प्रसंगवशात् ही आए हैं।

नेपाल की राष्ट्रीय पंचायत के चुनाव के बाद भी प्रतिवंधित राजनीतिक पार्टियाँ छिटपुट रूप से कुछ-न-कुछ करती रही हैं, लेकिन उसका कोई महत्त्व नहीं है। मेरे जानते, वर्तमान में, नेपाल की भूमि पर श्री ५ के शासन-तंत्र का कोई विकल्प नहीं है, भविष्य की वात तो भविष्य ही जानता है !

जनमत-संग्रह से लेकर राष्ट्रीय पंचायत के चुनाव तक नेपाल के समाचार-पत्र भी विभाजित रूचिवाले देखे गए। यह भी स्वाभाविक है और प्रासंगिक भी। आज नेपाल विश्व के मानचित्र पर है—राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी। हमारा देश भारत नेपाल का अत्यन्त निकटतम पड़ोसो है। भारत और नेपाल का भाग्य वैसे भी परस्पर जुड़ा हुआ है।

भारत के समान ही, चीन भी नेपाल का पड़ोसी है। भारत और चीन के वीच परस्पर मतभेद हो सकते हैं लेकिन नेपाल और चोन के वीच सामंजस्य और संतुलन स्थापित है। भारत और चीन के वीच भी मतभेदों की खाई कम करने के लिए नये सिरे से प्रयास किए जा रहे हैं। नेपाल भारत और चीन के वीच एक नये सम्पर्क-सेतु की भूमिका अदा कर सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है !

हाँ, तो कहा जा रहा था कि नेपाल की राष्ट्रीय पंचायत श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव की सशक्त छाया के नीचे संचालित हो रही है और नेपाल के सम्यक् विकास के लिए उत्तरदायी है। इसका अर्थ यह नहीं है कि पचायत प्रणाली की यह शासन-व्यवस्था जनमत-संग्रह का परिणाम है। सत्य यह है कि यह पंचायत-व्यवस्था या पंचायत-दर्शन श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव की आत्मा की देन है। आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व ही इस व्यवस्था के अन्तर्गत शासन का संचालन आरम्भ हुआ था। पंचायत-प्रणाली के शासन की व्यापकता को लेकर नेपाल में इस प्रणाली के जनक श्री ५ महेन्द्र ने कभी कहा था—"आज का मानव दुर्भाग्य से विनाश की दिशा में बढ़ता जा रहा है और इसी कारण से आपसी विद्वेष एवं संघर्ष में उलझता ही जा रहा है। मानव की इस भयानक स्थिति से मात्र धर्म के द्वारा ही रक्षा हो सकती है। आज इसी धर्म के तत्त्व-ज्ञान का प्रतिपादन करना आवश्यक है। स्नेह और आत्मीयता, प्रेम और सद्भाव से युक्त जीवन विताना ही हिन्दू धर्म का श्रेष्ठ तत्त्व-ज्ञान है। इन्हीं गुणों पर आधारित जीवन-रचना ही, जिसमें ईर्ष्या, कलह और संघर्ष का कोई स्थान है ही नहीं, एक श्रेष्ठ जीवन-रचना है। नेपाल अपनी इसी जीवन-रचना के आधार पर समय के अनुसार पंचायत-प्रजातंत्र की पद्धति को स्वीकार कर गौरवान्वित हुआ है।"

मेरे जानते जनमत-संग्रह कराकर श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाह-देव ने एक ऐतिहासिक कार्य किया है। किसी देश का संविधान बार-बार वदला जा सके, यह तो संभव नहीं है। हाँ, संविधान की धारायें वदली जा सकती हैं, उनका संशोधन किया जा सकता है। कई विद्वानों का यह मत है कि श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के पंचायत-दर्शन के सिद्धान्त को ही पलड़े पर रख दिया, जनमत-संग्रह की घोषणा से लेकिन नेपाल

की जनता के विवेकपूर्ण निर्णय ने ही पंचायत-प्रणाली के महान् प्रवर्त्तक सम्राट् श्री ५ महेन्द्र के सिद्धांत को जीवित एवं प्रगतिशील घोषित कर दिया—जनसमर्थन देकर, निर्दलीय व्यवस्था के प्रति अपना विशाल मत देकर भी !

मेरी नजरों में नेपाल का प्रशासन पंचायत-प्रणाली के अधिकार और कर्त्तव्य को लेकर आज भी सशक्त और शक्तिमान है। यह बात और है कि आज भी प्रचलित प्रणाली को लेकर प्रतिबंधित राजनीतिक पार्टियों के लोग कभी-कभी विरोध करते देखे जाते हैं, कभी समन्वय-दिवस के नाम पर तो कभी किसी घटना को माध्यम बनाकर। यह स्वीकृत सत्य है कि सम्पूर्ण नेपाल ने निर्दलीय व्यवस्था को स्वीकार कर अपने विकास का दृढ़ संकल्प लिया है। इस दिशा में उसे व्यापक सफलतायें मिली हैं, और भी मिल रही हैं। कभी-कभी पंचायत-प्रणाली के भीतर भी अन्तर्विरोध के स्वर सुनायी दे जाते हैं, ये स्वर अत्यन्त ही महत्त्वहीन हैं। ये पानी के बुलबुलों की तरह उभरते और फिर दब जाते हैं।



नेपाल में आर्यसमाज का अभ्युदय

नेपाल विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों का देश रहा है। इस भूमि पर शैव भी हैं और वौद्ध भी। अपनी भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण यह सदियों तक विश्व के मानचित्र से अलग रहा है, यह एक ऐसा सत्य है, जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। मेरा स्पष्ट संकेत राणा-प्रशासन की ओर है। राणाओं के प्रशासन में शिक्षा को जनोन्मुखी वनाने का प्रचलन नहीं था। हाँ, एक विद्यालय अवश्य था, जहाँ राणा परिवार और शाही परिवार के लड़के ही शिक्षा प्राप्त करते थे। राणाओं का दृष्टिकोण यह था कि नेपाल की जनता को अशिक्षित रखकर ही नेपाल पर शासन किया जा सकता है।

नेपाल तव पूरी तरह मंत्र-तंत्र और भूत-प्रेत के परिवेश में जी रहा था। रूढ़िवादिता नेपाल के जीवन का अंग बन गयी थी। इसका अर्थ यह नहीं कि नेपाल की भूमि के निवासियों में प्रतिभा और विद्वत्ता का अभाव था। नेपाल की भूमि से नेवारी-संस्कार के एक प्रतिभा-सम्पन्न परिवार में एक शिशु ने जन्म लिया। यही शिशु वाद चलकर माधवराज जोशी के नाम से विख्यात हुआ।

माधवराज जोशी ने स्वाधीन स्वाध्याय के वल पर अपने को सुशिक्षित किया। श्री जोशी ने कई बार भारत का भ्रमण किया। भारत-भ्रमण के क्रम में उन्होंने महर्षि दयानन्द-विरचित 'सत्यार्थ-प्रकाश' का अध्ययन किया। 'सत्यार्थप्रकाश' ने माधवराज जोशी के जीवन की धारा ही बदल दी। चर्चा है कि श्री जोशी सत्यार्थ-प्रकाश' के अध्ययन के वाद आर्यसमाज से अनुप्रेरित और प्रभावित हुए और विक्रम संवत् १९५५ ई० में पाटन (नेपाल) में आर्यसमाज की स्थापना की। श्री जोशी जी नियमित रूप से 'सत्यार्थप्रकाश'

पाठ किया करते थे। यह क्रम अनवरत चलता रहा। लोगों के बीच भी वे 'सत्यार्थप्रकाश' का पाठ किया करते थे। इस प्रकार जोशी जी के प्रयास से ही नहीं वरन् 'सत्यार्थप्रकाश' के अमोघ प्रभाव से नेवार जाति के असंख्य लोगों ने ही नहीं वरन् अन्य वहुत-से लोगों ने मांस-मदिरा आदि का परित्याग कर दिया। नेपाल जैसी भूमि के लिए यह परिवर्त्तन असाधारण प्रभाव का परिचायक माना जा सकता है।

आर्यसमाज के उद्भव को तत्कालीन राणाओं ने राजनीति का उद्भव मान लिया और उसे धर्म-विरोधी घोषित कर श्री माधवराज जोशी को गिरफ्तार कर लिया। श्री जोशी को ढाई वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनायी गयी लेकिन वे जेल के भीतर भी आर्य-समाज के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करते रहे। जेल के भीतर कैदी भी प्रभावित हुए लेकिन सशंकित राणा-प्रशासन ने श्री माधवराज जोशी को फाँसी की सजा सुना दी। श्री माधवराज जोशी को अवसर मिला और वे जेल की सीखचों से भागकर जयनगर होते हुए रक्सौल (भारत) आ गए। रक्सौल आकर श्री जोशी ने अपने परिवार को वुला लिया। परिवार में उनकी धर्मपत्नी, दो लड़के वाक्पतिराज और शुक्रराज एवं पुत्री चन्द्रकान्ता आदि थे।

रक्सौल से श्री माधवराज जोशी सपरिवार गोरखपुर आर्य-समाज में आ गए। आर्यसमाज, गोरखपुर ने श्री माधवराज जोशी का सहर्ष स्वागत किया। गोरखपुर से वे लखनऊ चले गए। लखनऊ के आर्यसमाज, गणेशगंज में उनके आवास की व्यवस्था की गयी और दोनों लड़के गुरुकुल, सिकन्दरावाद में प्रविष्ट हुए। उस समय यह सारी व्यवस्था श्री तुलसीराम स्वामी ने की थी। सौभाग्यवश श्री शुक्रराज गुरुकुल से स्नातक, पंजाव विश्वविद्यालय से शास्त्री और तत्पश्चात् बी० ए० की उपाधि से अलंकृत हुए। यहीं से इस

व्यक्ति को व्यक्तित्व प्राप्त हुआ और नेपाल में शुक्रराज शास्त्री के नाम से वे विख्यात हुए।

स्मरणीय है कि श्री शुक्रराज शास्त्री को भारत के आर्यसमाजियों ने ही नहीं, अनेक सांस्कृतिक और शैक्षणिक संगठनों ने अपनी सेवा समर्पित करने का आग्रह किया लेकिन कर्मवीर शुक्रराज शास्त्री ने उन सबको अस्वीकार करते हुए कहा—'मैं नेपाल में वैदिक धर्म का प्रचार करूँगा !'

श्री शुक्रराज शास्त्री ने सर्वप्रथम दार्जिलिंग में (भारत) नेपाल की सीमा पर आर्यसमाज की स्थापना की। नेपाल के लोग दार्जिलिंग आते और श्री शुक्रराज शास्त्री के विचारों को सुनते एवं प्रभावित होकर जाते। यह सूचना नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री (३ सरकार) युद्धशमशेर जंगबहादुर को मिली। राणा ने शुक्रराज शास्त्री को धोखे से बुलवाया और बातचीत के क्रम में उसने कहा कि "हम नेपाल में सामाजिक और शैक्षिक सुधार की योजना बना रहे हैं। आप कृपया नेपाल आ जाएँ !" और जब शुक्रराज शास्त्री नेपाल आए तो उन्हें नजरबन्द कर लिया गया। शुक्रराज शास्त्री को प्रशासन की ओर से प्रतिमास सौ रुपये भुगतान किया जाने लगा। राणा युद्धशमशेर ने आदेश दिया कि "आप नेपाल के लिए पाठ्य-पुस्तकों का प्रणयन करें !"

शुक्रराज शास्त्री को आर्यसमाज की चिन्ता व्यथित करती रही लेकिन कोई विकल्प नहीं था। लेकिन शुक्रराज जी के सम्मुख उनके तीन सहयोगियों श्री गंगालाल, श्री दशरथचंद एवं श्री भक्तराज ने नेपाल में 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रचार-प्रसार का वचन दिया और इसके लिए किसी भी प्रकार के बलिदान के लिए तीनों ने अपने को पूर्णतः समर्पित घोषित किया।

वह दिन भी आया, जब इन्द्रचौक (काठमांडू) पर शुक्रराज शास्त्री ने जैसे ही भाषण देना आरम्भ किया कि नेपाल की पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। श्री गंगालाल, श्री दशरथचंद्र और श्री भक्तराज भी पकड़ लिए गए। इन लोगों पर आरोप लगाया गया कि ये धर्म-विरोधी प्रचार करते हैं तथा शूद्रों को भी वेद पढ़ने का आदेश देते हुए कर्म को वर्णव्यवस्था का प्रचार करते हैं। इन चारों तथाकथित अभियुक्तों को क्षमा माँगने के लिए कहा गया लेकिन अपनी आहुति देने के संकल्पी इन व्यक्तित्वों ने क्षमा नहीं माँगी। राणा-प्रशासन की ओर से इन्हें जनता के सम्मुख फाँसी की सजा सुनायी गयी। श्री गंगालाल तथा श्री भक्तराज ने गोली खाकर मृत्यु को वरण करना स्वीकार किया। श्री शुक्रराज शास्त्री तथा श्री दशरथचन्द्र को पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गई। श्री शुक्रराज शास्त्री और श्री दशरथचंद्र की लाशें ३६ घंटों तक लटकती रहीं। यह भी स्मरणीय है कि अमर शहीद श्री शुक्रराज शास्त्री के पिता श्री माधवराज जोशी भी उस समय जीवित थे। फाँसी पर झूलने से पूर्व माधवराज जोशी ने अपने संकल्पी पुत्र श्री शुक्रराज शास्त्री को स्पर्श करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों की रक्षा के लिए मृत्यु को अंगीकार करने की घड़ी में आशीर्वाद भी दिया। फाँसी पर झूलने से पूर्व श्री शुक्रराज शास्त्री ने कहा—"इस राणाशाही का अन्त सन्निकट है!"

इतिहास साक्षी है कि श्री शुक्रराज शास्त्री के सूली पर झुलाये जाने के मात्र ग्यारह वर्ष वाद ही नेपाल की भूमि पर क्रांति हुई और राणा-शाही धूल चाटने लगी। आर्यसमाज से प्रतिबन्ध हटा। नेपाल में आर्यसमाज प्रतिष्ठित हुआ।

इस प्रसंग में श्री गुरुदयाल बी० ए० का भी सादर स्मरग किया जा रहा है। वे पंजाब ते आकर नेपाल की भूमि पर श्री शुक्रराज शास्त्री के पिता श्री माधवराज जोशी के निर्भीक सहयोगी बने रहे।

उल्लेखनीय है कि जब श्री माधवराज जोशी गिरफ्तार किए गए तो श्री गुरुदयाल बी० ए० को नेपाल की तत्कालीन सरकार ने देश से निकाला दे दिया। श्री शुक्रराज शास्त्री ने अपनी 'आत्मकथा' में श्री गुरुदयाल बी० ए० का सादर उल्लेख करते हुए लिखा है कि "धन्य है वह पंजाब की भूमि, जिसने गुरुदयाल जैसे कर्मठ तथा ऋषिभक्त को उत्पन्न किया, जिसने अंतिम समय तक हमारे पिता श्री माधवराज जोशी का साथ नहीं छोड़ा !" इतिहास साक्षी है कि श्री शुक्रराज शास्त्री के बलिदान के बाद नेपाल की भूमि पर आर्यसमाज के विचारों के बीज अंकुरित ही नहीं, वरन् प्रस्फुटित भी हुए और आर्यवीर-दल के उद्भव हुआ। नेपाल से राणाओं के शासन की समाप्ति के लिए किये गये संघर्षों में आर्यवीर दल की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता !



आर्यवीर दल की भूमिका

नेपाल की भूमि भीतर-ही-भीतर नये परिवर्त्तनों की प्रतीक्षा कर रही थी। आर्यसमाज के विचार और सन्देश इस भूमि पर प्रातःकाल की सुनहली रश्मियों के समान फैल रहे थे। आर्यसमाज की ओर से संचालित 'आर्यवीर-दल को नेपाल की भूमि पर भी संगठित किया गया। सर्वप्रथम वीरगंज में प्रातःकाल आयोजित होनेवाली व्यायाम-शाखायें प्रारम्भ की गयीं और फिर अमलेखगंज, धुर्सिग, भीमफ़ेड़ी आदि तराई-क्षेत्र की शिक्षण-संस्थाओं में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया।

आर्यवीर-दल के संचालक के रूप में नेपाल की राजधानी काठमांडू में भी कार्य करने का मुझे काफी अवसर मिला। तब मेरा नाम रामाज्ञा ठाकुर था। शिक्षण-संस्थाओं के अतिरिक्त मुझे अन्य युवकों को भी व्यायाम, लाठी आदि का प्रशिक्षण देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इसी क्रम में मुझे नेपाल में प्रजातंत्र के प्रवर्त्तक श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव का सान्निध्य पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनेक अवसरों पर शाही यात्राओं में, जैसे—सेमरा हवाई अड्डा वीरगंज और काठमांडू में टुड़ीखेत के मैदान में आर्यवीर-दल के लाठीधारी स्वयंसेवकों ने मेरे संचालन में श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव के प्रति 'गार्ड ऑफ ऑनर' भेंट किया गया, जहाँ एक ओर नेपाल के हथियारबन्द प्रहरी सावधान की मुद्रा लिए सुरक्षा में खड़े होते, वहीं हमारे आर्यवीर-दल के जवान भी पूर्णतया "सावधान की मुद्रा" में ही रक्षा-पंक्ति में खड़े होते।

श्री ५ त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव के निधन के पश्चात् श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के राज्याभिषेक के अवसर पर मेरे

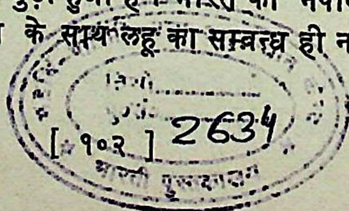
संचालन में आर्यवीर-दल को भी आमंत्रित किया गया था। काठमांडू में टुड़ीखेत के मैदान से निकलनेवाली शोभा-यात्रा में हमारे आर्यवीर-दल का स्थान तीसरा था। विश्व के सम्मान्य राजनयिकों एवं अतिथियों के समक्ष लाठी-व्यायाम के प्रदर्शन का अवसर भी मिला।

मुझे श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव का आशीर्वाद प्राप्त रहा। यह अविस्मरणीय है कि श्री ५ महेन्द्र का स्नेह-भाव आर्यवीर-दल के प्रति निरन्तर बना रहा। ये स्मृतियाँ आर्यसमाज के इतिहास के लिए धरोहर-स्वरूप हैं और नेपाल में वैदिक धर्मचेतना के अभ्युदय की साक्षी भी! □

हम एक हैं ! हम एक हैं !!

नेपाल की हिमाच्छित्त पर्वतमालाओं से निकलकर इस भूमि की अधिकांश नदियाँ भारतीय भूमि पर आती हैं, अपनी जलधारा में सांस्कृतिक और धार्मिक एकता का सन्देश लिए ! ये नदियाँ हिमालय की सांस्कृतिक चेतना का अवदान देती हुई भारत-भूमि को सिंचित करती रहती हैं । अपने यहाँ की नदियों के जल को समेटकर आज नेपाल अपने जल-संसाधनों का उपयोग अपने विकास के लिए कर रहा है । इन जल-परियोजनाओं में देवीघाट-परियोजना, कर्नाली-परियोजना, त्रिशूली-परियोजना आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । नेपाल के पास जो अपार जल-राशि है, अभी तक उसका सम्पूर्ण सदुपयोग नहीं हुआ है । नेपाल का भविष्य इसकी प्रतीक्षा कर रहा है । कल्पना की जा रही है कि इन नदियों के जल से अपार बिजली-शक्ति पैदा की जा सकती है और इस जल-संसाधन से प्राप्त क्षमता नेपाल को आद्योगिक विकास की ओर ले जा सकती है ।

मेरे जैसे यायावर के लिए ये नदियाँ इसलिए भी प्रिय हैं कि इनसे दो देशों के लोग एक होते हैं । इन नदियों से भारत और नेपाल परस्पर जुड़ते हैं, मिलते हैं । ये नदियाँ साक्षी हैं हमारी मित्रता की और हमारी सम्पूर्ण एकता की ! नेपाल की ये हहराकर बहती पर्वतीय धारायें यह सन्देश भी देती हैं कि भारत और नेपाल को निरन्तर एक साथ रहना होगा, सुख-दुख और आपदायें मिल-जुलकर सहना होगा । छोटे-वड़े विवाद मिल-वैठकर सुलझाने होंगे !" वैसे भी हमें यह सूत्र हमेशा स्मरण रखना होगा कि भारत और नेपाल का भाग्य परस्पर जुड़ा हुआ है । भारत का नेपाल के साथ और नेपाल का भारत के साथ लहू का सम्बन्ध ही नहीं, दूध का रिश्ता भी है ।



हमारा धर्म एक है और हमारी धार्मिक मान्यतायें भी एक हैं। नेपाल के दार्शनिक विद्वान् सम्राट् कवि श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव के शब्दों में—'भारतीय हिन्दुओं के लिए नेपाल सदैव प्रेरणा का अक्षय स्रोत बना रहा है। नेपाल को गौरव प्राप्त है कि भारत के धर्मसंकट-काल में हिन्दुओं का आश्रयदाता भी नेपाल ही रहा है। भारत के प्रथम स्वाधीनता-समर के सेनानी नाना साहब पेशवा और उनकी रानी काशीवाई के साथ अनेक साहसी सेनानी नेपाल में आश्रित हुए थे। उनके पश्चात् भी भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम में नेपाल का योग-दान सदैव रहा ही है। नेपाल सदैव भारत के प्रहरी के रूप में रहा है। भारत और नेपाल की प्रायः एक ही संस्कृति है और दोनों ही एक ही आदर्श जीवन से अनुप्राणित रहे हैं। हमारे वैवाहिक सम्बन्ध, विभिन्न रीति-रिवाज, और खान-पान, सभी एक ही हैं। हम सभी हिन्दुओं के लिए यह प्रसन्नता की बात है। यह सम्पूर्ण हिन्दू जगत् के लिए भी बड़े गौरव की बात है।"

भारत और नेपाल की सांस्कृतिक एकता को परिभाषित करते हुए श्री ५ महेन्द्र वीरविक्रम शाहदेव ने कहा था—"नेपाल के हिन्दू को भी गंगास्नान, काशीवास तथा कन्याकुमारी से कश्मीर तक के पुण्य-स्थानों के दर्शन करने की जीवन की एक अभिलाषा और प्रेरणा रहती है। भारत के हिन्दू के लिए भी हिमालय के आकर्षण के साथ-साथ पशुपतिनाथ और मुक्तिनाथ के दर्शनों की एक चिर-संचित आकांक्षा रहती है।"

इन्हीं अभिलाषाओं और आकांक्षाओं की आधार-शिला हमारी मित्रता है। यात्रा हमारे जीवन का लक्ष्य रही है। नेपाल की भूमि पर मुझे यह कभी अनुभव नहीं हुआ कि यह विदेश है या कोई ऐसा देश है, जहाँ हमारा कुछ भी 'अपना' नहीं है वरन् ऐसी अनुभूति होती है, जैसे हम अपनी ही पुण्यभूमि पर खड़े हों! मेरा विश्वास है कि

किसी भी नेपाली को भारत-भूमि पर भी इसी प्रकार की अनुभूति होती है।

नेपाल की भूमि पर राणाओं के शासन की समाप्ति के लिए हुए संघर्ष में भारत की भूमिका को कभी भी आँखों से ओझल नहीं किया जा सकता ! नेपाल की धरती पर आज जो पंचायती प्रजातंत्र का वट-वृक्ष लहलहा रहा है, भारत ने भी उसके मूल को अभिसिंचित किया है।

भारत और नेपाल के बीच लम्बी एक सीमा-रेखा है, लेकिन कहीं कोई दीवार खड़ी नहीं है। जहाँ-तहाँ प्रस्तर-स्तम्भ अवश्य हैं और साक्षी के लिए विराजमान है 'दसगजा' मानव-रहित भूमि, जहाँ हमारी खुली सीमा है और आवागमन का खुला आदान-प्रदान होता है। पर कभी भी अपनी सीमाओं को लेकर हमारे बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ। हाँ, छोटे-मोटे विवाद अवश्य हुए हैं स्थानीय स्तर पर और वैसे ही सुलझा भी लिए गए हैं स्थानीय स्तर पर ही !

और फिर भारत और नेपाल के बीच एक चिरस्थायी सीमा-रेखा है—सांस्कृतिक सीमा-रेखा, जिसका आदर भारत भी करता है और नेपाल भी ! इस अमिट सीमा-रेखा को मिटा देने की ताकत विश्व की किसी 'शक्ति' या 'महाशक्ति' के पास नहीं है—इसलिए कि भारत और नेपाल एक ही संस्कृति के, एक ही संस्कार के और एक ही विचार-धारा के दो पूरक पक्ष हैं, दो अनिवार्य पहलू हैं !

□



महापुरुषों का वलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता। श्री शुक्रराज शास्त्री की फाँसी से जहाँ नेपाली जनता में राणाशाही के प्रति घृणा उत्पन्न हुई वहाँ नयी जागृति का उदय भी हुआ। अन्धकार कितना भी सघन क्यों नहीं हो परन्तु उसका अवसान निश्चित है। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के संस्थापक श्री ओमप्रकाश त्यागी की दूर दृष्टि इस उपेक्षित हिन्दू राष्ट्र की ओर पड़ी। उन्होंने कई वार उषबुंध ऐसे मूर्धन्य विद्वान् के साथ नेपाल की यात्रा की। इस यात्रा-क्रम में उन्हें श्री रामाज्ञा ठाकुर ऐसा उत्साह का धनी नवयुवक मिला। वर्षों नेपाल में रहकर आर्यवीर दल को लोकप्रिय वनाया। आपकी कर्मठता का ही परिचायक है कि आपको श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीर-विक्रम शाहदेव के स्वागत में 'गार्ड आफ ऑनर' देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

नेपाल में प्रचार के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्थिक सहायता पाकर विहार सभा के महोपदेशक श्री पं० रामदेव शास्त्री नेपाल गये। आपने वहाँ की भाषा का अध्ययन किया तथा ग्राम-ग्राम में घूमकर वेदों के कल्याणकारी विचारों से नेपालियों को परिचित कराया। वहाँ आपकी विद्वत्ता की छाप ऐसी पड़ी कि नेपाल रेडियो से आप वेद-कथा कहा करते थे।

राणाशाही की समाप्ति पर श्री ओमप्रकाश त्यागी, ब्र० उषबुध, दाढ़ी वावा, आचार्य रामानन्द शास्त्री महोपदेशक तथा ठा० नन्दलाल सिंह भजनोप-देशक नेपाल पहुँचे और आप लोगों ने विभिन्न स्थानों पर वैदिक धर्म का संदेश सुनाया। नेपाल जानेवालों में श्री पं० वासुदेव शर्मा, श्री पं० गंगाधर शास्त्री, स्वामी अभेदानन्द सरस्वती आदि महानुभावों का नाम भुलाया नहीं जा सकता।

नेपाल की धार्मिक क्रान्ति में सारण जिला के निवासी श्री राजा लाल जी का नाम इतिहास के पृष्ठों में सर्वदा अंकित रहेगा। आपका व्यवसाय वीरगंज तथा अमलेखगंज में जोरों पर चल रहा था। परन्तु आर्यसमाज के अनन्य भक्त तथा प्रचारक होने के कारण आपकी समस्त सम्पति जब्त कर ली

गयी । पश्चात् विपन्नता में रहकर भी आप अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे। वह युग भी आया जब राणाशाही की समाप्ति पर आपकी सम्पति लौटा दी गयी।

नेपाल-प्रचार में सीमा पर अवस्थित आर्यसमाज रक्सौल की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही है। एक युग था जब रक्सौल का आर्यसमाज नेपाल के सुधारवादी नेताओं का शरण-स्थल था। इस समाज की ओर से समय-समय पर नेपाल में वैदिक-धर्म के प्रचार के लिए प्रयत्न जारी है। तराई क्षेत्रों में आर्यसमाज का प्रचार बढ़ गया है और विभिन्न स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापना भी हो चुकी है। सम्प्रति वसतपुर, वीरगंज, पिपराघाट, गौर तथा विराटनगर क्षेत्र में जोर-शोर से प्रचार चालू है।

गत वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती विराटनगर के विराट आर्य महासम्मेलन में पधारे थे। आपके साथ विहार से श्री भूपनारायण शास्त्री भी थे। कई भूतपूर्व मंत्रियों, सरकारी अधिकारियों तथा नेपाली जन-समुदाय के समक्ष भाषण करते हुए आपने कहा कि विश्व के एकमात्र 'हिन्दू राष्ट्र नेपाल' पर भारतीयों को गर्व है। नेपाल-नरेश को विश्वविजय के लिए अश्वमेध के आयोजनार्थ तैयार होना चाहिए। यद्यपि यहाँ धर्म-परिवर्तन पर प्रतिवन्ध है परन्तु ईसाई प्रचारक तराई क्षेत्र में भोले-भाले भाइयों को अनुचित प्रलोभन देकर उनको धर्मान्तरित करना चाहते हैं। यह भावी संकट का सूचक है; अतः इस ओर नेपाल-नरेश का आवश्यक ध्यान आकृष्ट कर देना चाहिए। सम्प्रति सार्वदेशिक सभा की ओर से कई विद्वान् शास्त्री नेपाल में वैदिक धर्म प्रचारार्थ कार्यरत हैं। विराटनगर तथा काठमांडू के कई व्यवसायी श्री सीताराम जी वगैरह प्रशंसनीय सहयोग दे रहे हैं। श्री शुक्रराज शास्त्री की वहन चन्द्रकान्ता देवी जीवन-पर्यन्त आर्यसमाज की प्रगति के लिए आवश्यक सहयोग देती रहीं। अभी कुछ मास पूर्व उनका असामयिक देहावसान हो गया। तथापि इन अमर हुतात्माओं की आध्यात्मिक ज्योति नेपाल राष्ट्र में वैदिक धर्म का आलोक फैलाती रहेगी।

